बरस पैलो ] [ पानगी पैली

# जीवनकुटीर का गीत

## [ माहवारी पोथी ]

प्रकाशक-

जीवन-कुटीर, वनस्थली

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का चार पीसा } मई १९३४ { दाम एक बरस का ।।। डाक मेसूल का ।।) न्यारा

# जीवनकुटीर का गीत

जीवनकुटी का बांका बावला गीत लोगां कै घणा मनभाया और भोतसा आदमी म्हांनै यांकी पोथी छपा देबा को सल्ला दीनी। सारां गीतां नै एकै समचै छपावासँ म्हाँनै या ज्यादा ठीक लागी क म्हैनां की म्हैनां एक छोटी सी पोथी छपजाबो करै। गोतां की या पैली बानगी आपकै सामनै छै—कमसें कम असी ११ बानगी और छपाबा को विचार छै। म्हाँका मन में या उभार छै क हजारां आदमी यां पोथ्याँ का १२ म्हैनां का पक्का गायक बण जायला।

आखातीज, सं० १९९१ का] हीरालाल शास्त्री।

# जीवन कुटोर कांई छै ?

जैपर राज की निवाई तैसील में गाँवाँ का सुधार को काम करतां ईं संस्था नै पाँच बरस हो गया। जीवनकुटीर आपका ढङ्ग की एक निराली संस्था छै। या संस्था राजनीत का कामाँ सूँ बिल्कुल अलग रै छै। और अयाँ ही मत मतान्तर का खण्डन मण्डन में भाग कोनै ले। झगड़ा टण्टाँ सूँ बिल्कुल दूर रहणो और सबकी साथ मेल-जोल राखणो ईं संस्थाको मूलमन्तर छै। गाँव में रहबाला आदमी गरीब छै और वाँकै और कोई दूसरो सारो कोनै। अस्या गरीबां की सेवाकै तांई जीवनकुटी नीचै लिख्या काम करै छै :—

(१) खेती बाड़ी में सुधार करणो और बणे जठा-तक आसपास का गाँवाँ में चोखा सांड ल्यार छोड़णा।

(२) लेण देण कै तांईं सहकार सभा खोलर गरीबां की कर्ज़दारी मिटाणी।

(३) गाँव हालांनै सराव हो जीं भगत वाँनै पींदणो कातणो सिखाणो जींसैं वाँनै सहजाँहीं कपड़ो मिलजाबो करै।

( ४ ) गाँव हालांनै आरामोसर जस्याखरच्‌का मौकाँ पर सरधासारू खरच्‌ करबा की बात सिखाणीं ।

( ५ ) गाँव का टाबराँनै काम चलाऊ हिन्दी और हिसाब में हुश्यार करणा ।

( ६ ) गाँव का रोग्यांनै दवाईदेणी और घरर जार रोग्यां को इलाज करणो ।

( ७ ) आपका कपड़ांनै, आपका घरां नै और सारा गाँव नै साफ राखबाकी बात बताता रहणो ।

आपकी जिन्दगी नै दूसरां की भलाई में बिताबा को इरादा राखबाला आदमी कुटीर में काम करै छै। कुटीर हाला सादगी सूँ रहछै और कुटीर का काम की खातिरं वां नै कई तरह की तकलीफां और झंझटां को रोजीना सामनो करणो पड़ै छै। जीवनकुटी कै कठा सूँ भी रुप्या पीसा को बँध्योड़ो सारो कोनै और कुटीर हालां नै कोई कनै सूँ भी पीसो न माँगर भगवान् कै भरोसो रहणो ज्यादा चोखो लागै छै।

जीवनकुटी को काम पार पड़ जाय तो गरीब गाँव हालां का भोत सा दुख मिट जाय। आपका गरीब भायाँ को दुख मिटावो हरेक गिरस्ती को धरम छै। ईं वास्तै

3



जीवन कुटीर का काम में सबनै आपको सीर करणो चायजे। कुटीर हाला आपका कामकी इश्तिहारबाजी करबो पसन्द कोनै करै, पेरभी म्हे या देखां क म्हांको काम जद दुनिया का चन्दा का पीसा सूँ चालै छै तो सब लोगाँ नै ऊँको पूरो हाल मालुम हो तो रहणो चायजे। ईं वास्तै म्हे सालकी साल म्हांका कामका हाल चाल की पोथी छपावाँ छाँ और ईं वास्तै ही ईं गीता की पैल बानगी में भी यो ज़रा सो हाल छपा दियो छै।

म्हाँका मनमें या आस छै क म्हाँका उद्योग नै दुनियाँ ज़रूरी और कामको समझसी और म्हाँ की हिम्मत बधासी।

कुटीर,
मई, १९३४

विनीत—
हीरालाल शास्त्री ।

बरस पैलो बानगी पैलो

# जीवनकुटीर का गीत

## गीता को उपदेस

( श्रीमद्भगवद्गीता का दूसरा अध्याय का
५४-७२ श्लोकाँ को अनुवाद )

*जीवनकुटी की सँवारै की प्रार्थना ।*

सुणल्यो गीता को उपदेस कानजी भलो सुणायो छै—

अर्जन बोल्यो—

थिर बुद्धी का समाधिवान की, काना ! कसी पिछाण ?
बोलै चालै बैठै किस विध, करद्यो आज बखाण ॥५४॥

श्री भगवान बोल्या—

अपणा मन सूं सभी बासना, अर्जन ! दूर हटाय ।
खुद ही खुद सूं तिरपत रैवै, जद थिर बुद्धि कहाय ॥५५॥
दुख में होवै नहीं उणमणो, सुख की त्यागै चाय ।
प्रीत रोस डर बीत चुकै जद, मुनि थिर बुद्धि कहाय ॥५६॥
राजी दोरो होय नहीं जो, भला बुरा न पाय ।
सब सूं नेह हटायो राखै, जद बुद्धी ठहराय ॥५७॥
जियां काछवो भीतर खींचै, अंगां नै सुकड़ाय ।
सबी विसय सूं इंद्रयाँ सिमटै, जद बुद्धी ठहराय ॥५८॥



भूख प्यास में विसय हटै, पण मिटै नहीं या चाय ।
परमेसर का दरसण हो जद, भाग जाय छै चाय ॥५९॥
कोसिस करता पिंडत की भी, जोरी सूं दे ताँण ।
इन्द्रयाँ मथकर चित्त खींचले, कूँतीसुत ! तू जाण ॥६०॥
इन्द्रयाँ बस कर जोग साधकर, करले म्हारो ध्यान ।
इन्द्रयां जीं की बस में होवै, थिर बुद्धी तू मान ॥६१॥
विसयां को नर ध्यान धरै जद, बामें लागण होय ।
लागण में सूं बणै कामना, रोस बिघन सूं होय ॥६२॥
रोस कर्यां सूं मोह बणै छै, मो सूं सुरता जाय ।
सुरता बिगड्यां बुद्ध बिसट हो, पाछै नर बिनसाय ॥६३॥
राग रोस नै छोड़ चुक्योड़ी, इन्द्रयां बसमें ल्याय ।
अंतस बस कर भोग कर्यां भी, चित परसन रै जाय ॥६४॥
चित परसन हो जाय जद्यां तो, दुख सारा मिट जाय ।
क्यों-कर परसन चित की बुद्धी, जल्दी सी ठहराय ॥६५॥
जोग नहीं तो बुद्धि नहीं हो, नहीं भावना आय ।
भाव नहीं तो नहीं सांति हो, सुख असांत कै नांय ॥६६॥
विसयां मांही चलती इन्द्रयां, कै पाछै मन धाय ।
जल में भाल नाव नै जिस विध, वो बुध नै ले जाय ॥६७॥
जीं की इन्द्रयां बस हो सारा, विसयां सूं हट जाय ।
महाबाहु अर्जन ! जद ऊंकी, बुद्धी थिर हो जाय ॥६८॥

सब प्राण्यां कै रात पड़ै जद, ग्यानी रात जगाय ।
सारा प्राणी जाग रह्या हो, रात जद्यां पड़ जाय ॥६९॥
पाणी आता समदर नांई, जो कोई निसचल होय ।
भोग कर्यां भी सांती पावै, कामी सांती खोय ॥७०॥
छोड़ कामना और चायन्यां, ममता नै बिसराय ।
छोड़ हैंकड़ी करै आचरण, वोही सांती पाय ॥७१॥
असी ब्रह्म की हालत पायां, नाहीं मोह सताय ।
अंत समै भी पारथ ! पावै, मोकस ही हो जाय ॥७२॥

## कुटी की काण

( छोरयाँ को गीत-कुटी की काण मानर कुटी की कैण
मुजब काम करबा की सीख भाई ने दे छै )

जीवन कुटी या अपणी छै ।
तू काण कुटी की मान, म्हारा बीरा रै ॥ १ ॥
नित रोज कुटी में पढ़बा सूं ।
तू होजासी गुणवान, म्हारा बीरारै ॥ २ ॥
घरमें पींदर कात्यां सूं ।
थारी रै जाणैली स्यान, म्हारा बीरारै ॥ ३ ॥
दवा कुटी की लेबा सूं ।
थारा रोग मिटैला मान, म्हारा बीरारै ॥ ४ ॥
सहकार सभा में आबा सूं ।



थारी पासी कटै सुजान, म्हारा बीरारै ॥ ५ ॥
सांड गांव में राख्यां सूं ।
तनै बलद मिलै बलवान, म्हारा बीरारै ॥ ६ ॥
दौड़ कुमाई करबा सूं ।
तू होजासी धनवान, म्हारा बीरारै ॥ ७ ॥
बुरी चाल नै छोड्यां सूं ।
तनै मिलै धपाऊ धान, म्हारा बीरारै ॥ ८ ॥
बात ग्यान की सुणबा सूं ।
तू होजासी सुरग्यान, म्हारा बीरारै ॥ ९ ॥

## डरपो मत

( जीवन कुटी का सेवक कुटी सूँ डरपबाला भोला
पालत्यां को डर काडै छै )

डरपोमत म्हे तो थांका घर का छां ॥ डरपोमत० ॥
रोटी तो म्हे बांधर न्यावां ।
पाणी भी म्हे पील्यां छां ॥डरपोमत०॥१॥
थांका घर सूं कुछ नहीं मांगां ।
चोखी बात सुणावाँ छां ॥डरपोमत०॥२॥
न्यारा मत का मत नै समझो ।
म्हे तो थांका मत का छां ॥डरपोमत०॥३॥

जीवन कुटी का म्हाँनै समझो ।
दुनियाँ का म्हे सेवक छां ॥डरपोमत०॥४॥
म्हां की चिंता कुटी करै छै ।
जद ई गैलो बिचाराँ छां ॥डरपोमत०॥५॥
थांका घर को फिकर करां छां ।
थांनै म्हां का समझां छां ॥डरपोमत०॥६॥
जीवन कुटी नै थांकी समझो ।
थांसूं याही चावां छां ॥डरपोमत०॥७॥

## बोरा धुरिया को ख्याल

( बारलागांव में रोजीना खिलबाला नाटक की एक झांकी )

जवाब धुरिया को—

परमेसर देखै बोरा मानजा मत पाप कुमावै–
लेण देण तो भलो किसब छै, और भलो व्योपार ।
हक ईमानी बात करै तो, साजो साहूकार रै ॥ १ ॥
लेण देण सूं धन्धा चालै, बिण ज पुगावै माल ।
दोन्यूं काम भलांही कर तू, राख पुराणी बोल रै ॥ २ ॥

जवाब बोरा को—

खाबा नै मिलसी स्याणा पालती मत नीत डिगावै-
कैस्या प्यारा बचन सुणाया, भली सुणाई बात ।
पाप कुमाबो मैं नहिं चाऊं, बे हक पर या लात रै ॥ ३ ॥



मीठी मीठी वात बणा कर, थे ले जाओ आर ।
पाछो हाथ करोई कोनै, जद बिगड्यो बेवार रै ॥ ४ ॥

जवाब धुरिया को—

रिण हत्या सूं सब डरपां छां, पाछा देवां ल्यार ।
म्हां सूं सांप बैठै कौनै, करो एक का च्यार रै ॥ ५ ॥
भाव न्याव में सदा दखावै, नरजो अंतर काण ।
आधो तू पल्ला में पटकै, लियो लूटबो ठाण रै ॥ ६ ॥

जवाब बोरा को—

चिकती बात काडदी अबकै, म्हारै सामो झांक ।
दो पीसा जो नहीं कुमाऊँ, खाऊँ काई राख रै ॥ ७ ॥
खेत कुमाई म्हारै कोनै, म्हारै यो रुजगार ।
ई में ही मैं रोटी खाऊँ, सभी चलाऊँ कार रै ॥ ८ ॥

जवाब धुरिया को --

थारी रोटी कुण कोसै छै, बन्द करे कुण कार ।
जाणाँ थारै याहि कुमाई, और नहीं रुजगार रै ॥ ९ ॥
थारा पेट जस्यो हो म्हारो, रोटी माँगै रोज ।
म्हाँनै भूखाँ मार मार कर, थारो जीवो नोज रै ॥ १० ॥

जवाब बोरा को--

घणां कह्यां सूं बात बदैलो, मती दिवावै रोस ।
पैली द्यां छां पाछै लेवां, ल्यांवां कोनै कोस रै ॥ ११ ॥

लेण देण को नहीं जमानो, नहीं धीज को काम ।
ले लूटा थे अस्या हुया छो, लाज रखावै राम रै ॥ १२ ॥

जवाब धुरिया को—

साँची बात सुहाई कोनै, चिणको लाग्यो ठेठ ।
करसा तो म्हे करां कुमाई, मौज उड़ावै सेठ रै ॥ १३ ॥
म्हां का घर को लियो अलेवण म्हैल भुकाया आप ।
तूंद फुलाकर बड़ो बण्यो छै, लागैलो अब स्राप रै ॥ १४ ॥

जवाब बोरा को—

काल दुकाल कडाया थारा, जीं की या आसीस ।
म्हारो खालो हुयो टापरो, जद आवै छे रीस रै ॥१५॥
जीव लखोता फिरै रांडका, मांगू बीस हजार ।
काला कागद लियां फिरूँ छूँ, मांग्यां सूँ तकरार रै ॥१६॥

जवाब धुरिया को—

बीस हजार कडा सू ल्यायो, भोत दिखाई दाब ।
थारा कागद तू ही मांड्या, घणो बदायो स्याब रै ॥१७॥
कुमा कजा कर तनै दिया छे, कोडी कोनै पास ।
दीन दुखी नै घणो सतायो, जावैलो खो नास रै ॥१८॥

जवाब बोरा को—

बाप मस्यो जद म्हारै आयो पुआ कराया छूट ।
बिगड़ी थारी बात बणाई, जद्यां बताई लूट रै ॥ १९ ॥



बीज भात द्यूं हांसिल दे द्यूं, खाबानै द्यूं नाज ।
अटक्या थारा काम काडद्यूं, जद बोलै छे गाज रै ॥२०॥

जवाब धुरिया को—

राज बीज अर नाज दियो जद, भोत कस्यो ईसान ।
पाव तोल पंसेरी लेली, कडै गयो ईमान रै ॥ २१ ॥
मीठो होकर उलै पेट में, चलै अनेकों चाल ।
धोखो देकर नालिस करदे, कुड़क करावै माल रै ॥२२॥

जवाब बोरा को—

जियां खुसी हो थे ले जावो, देद्यो पाछा ल्यार ।
जद भी नालिस म्हे करां तो, म्हांनै द्यो धरकार रै ॥२३॥
सैमूला खाजाओ थे तो, लाग्यां थांको दाव ।
थैल्यां की थैल्यां म्हे देवां, लेबा नै हरनांव रै ॥२४॥

जवाब धुरिया को—

बादू बात करै मत बोरा, थारा ल्यायो बीस ।
वां बीसां का साठ चुकाया, फेरद्यूं बाकी तीस रै ॥२५॥
भोला छा जद लूट लिया तू, अब नहिं लागै दाव ।
थारी म्हारी राख आबरू, आगै मत लै नांव रै ॥२६॥

जवाब बोरा को—

म्हारो सारो घर खाकर तू, जोर दिखावै आज ।
डरपा देबो धाम लियो जद, थारो ही यो राज रै ॥२७॥

दिया जका तू खरा चुकादे, मती करै तकरार ।
फेर बारणैं थारै आवूं, तो दीजे दुतकार रे ॥ २८ ॥

जवाब धुरिया को–

ल्यायो सो तो सभी चुकया, और चुकाया बाद ।
राजी राजी घरां चल्यो जा, मती करै रंबाद रे ॥ २९ ॥
थारी सारी बात सुणी छै, अब आ लागी मेर ।
ठाली बात बदाई छै तो, हो जावैलो ढेर रे ॥३०॥

ज.वाब बौरा को—

तू जीत्यो मैं हार गयो अब, म्हारी नीची मूंछ ।
बांडो हो तू करै दकाला, कसी कटाऊं पूंछ रे ॥३१॥
थारो म्हारो बण्यो सनातन, बण्यो राखणो हात ।
काम पड़्या सूं फेरूं आजे, थारी राखूँ बात रे ॥३२।

जवाब धुरिया को—

भोला ढाला हुया पालती, बांका नांप्या पेट ।
थारी सारी चाल समझली, किंया बण्यो छे सेठ रे॥३३॥
कलम कसाई घणा बड़ा छो, थांकी पड़गी बाण ।
मीठी मीठी छुरी चलाकर हरो दुखी का प्राण रे ॥३४।

जवाब बोरा को—

झूठी बात दूखती कैदी, मैं मन ल्यूं छूँ थाम ।
बुरो मानबो मैं नहिं सीख्यो, गम खाबाको काम रे ।३५॥



जबाब धुरिया को—

सांची सांची बात कही छे, बुरो भलाँ ही मान ।
सांच झूठ को न्याय करैलो, ऊपरलो भगवान रे॥३६॥

## रस जीबा को

( पालती में ज्यान बापरवा की झांकी )

रस जीबा को र पिलादे रसिया,
र चखादे रसिया रसजीबा को ।
म्हां की कोथली कै बेजका घणा छै २
डोरो ल्यार सिलादे रसिया रसजीबा को ॥ १ ॥
ऊंली चालां चाल रह्यां छां २
सूंली चाल चलादे रसिया रसजीबा को ॥ २ ॥
आपां पंथी होय रह्या छां २
गांव भला में लगादे रसिया रसजीबाको ॥ ३ ॥
गाढी निंदरा मस्त पड्या छां २
बेगो और जगादे रसिया रसजीबा को ॥ ४ ॥
थोथा छांपण बाज रह्या छां २
गरब गुमान भुलादे रसिया रसजीबा को ॥ ५ ॥
म्हां को हिरदो बुझ्यो पड्यो छै २
अब तो आर खिलादे रसिया रसजीबा को ॥ ६ ॥

एक जीबा में सार नहीं छै २
वीर बणार जिलादे रसिया रसजीबा को ॥ ७ ॥

## एक अठन्नी

( समझदार बहू सासू नै घरको कपड़ो घर में तय्यार करबा की सल्ला दे छै )

एक अठन्नी दे म्हारी सासू, पींदण ल्यार बिसाबा नै ॥
गांठ बाँध रुई की जावै, घर को माल लुटाबा नै ॥
घर को काम घराँ ही करस्यूँ, जद्याँ मिलैलो खाबा नै ॥
घट्टी ओर घराँ ही पीसूं, जाऊँ नाँय पिसाबा नै ॥
घर में पींदर पूणी करस्यूं, जाऊँ नाँय पिंदाबा नै ॥
घर में पींदूँ घर में कातूँ, लत्ता घराँ बणाबा नै ॥
घर में पीसर रोटी पोल्यूँ, जाऊँ नाँय बिसाबा नै ॥
घर की रोटी घर को लत्तो, चावै जीव जिवाबा नै ॥
जीवन कुटी यो कर्यो उजालो, सूंली चाल चलाबा नै ॥

## प्रलय–प्रतीक्षा नमो–नमो

( जीवनकुटीर की दिनांध्यां की प्रार्थना )

राग-रहित हो जन-सेवा की,
शुभ-अभिलाषा नमो नमो ।



निर्भयता-युत-सत्य-शांतिमय, ...
कर्म-चिकीर्षा नमो नमो ॥ १ ॥
व्यक्तिगत अरु पारिवारि की,
स्थिति से ऊपर उठी हुई ।
वीरहृदय को जो सुख देती,
राष्ट्र-निनीषा नमो नमो ॥ २ ॥
अंधकार के बादल नभ में,
मँडराते जब घुटे हुये ।
मृत्यु-नृत्य के बीच भटों की,
जीवन-आशा नमो नमो ॥ ३ ॥
बाड़ बेल को जब खाती हो,
आशा का आधार कहाँ ।
ऐसी स्थिति में धर्म-स्थापन,
की आशंसा नमो नमो ॥ ४ ॥
सत्ता का मद, धन की रचना,
सांप्रदायिकी खींचातान ।
निर्बलजन-अवहेलन करना,
अनय-जुगुप्सा नमो नमो ॥ ५ ॥
निज-दुर्बलता, घर की दुविधा,
जनता का अज्ञान महा ।

...ठिनता, साधन-लघुता,
कठिन-परीक्षा नमो नमो ॥ ६ ॥
भूख-प्यास अरु सर्दी-गर्मी,
वर्षा-आँधी सभी सहें ।
और सहें नित श्रमण जागरण,
कष्ट-पिपासा नमो नमो ॥ ७ ॥
वैभव सुख की चाह नहीं हो,
मान बड़ाई चहें नहीं ।
जीवन की परवाह नहीं हो,
प्रबल-मनीषा नमो नमो ॥ ८ ॥
मौसम के जिन चिह्नों को भी,
होना था अनुकूल जहाँ ।
नैया की गति रोक रहे वे,
जलधि-तितीर्षा नमो नमो ॥ ९ ॥
तथा-कथित सब प्रबल-शक्तियाँ,
हों विपक्ष में जुटी हुई ।
जगदीश्वर की दया-मया से,
जगत-जिगीषा नमो-नमो ॥१ ॥
निर्धनता, अज्ञान, भीति ने,
जीवन का रस छीन लिया ।
मरणानन्तर-जीवन-दायक,
प्रलय-प्रतीक्षा नमो नमो ॥११ ॥

...गी दूसर...

## पोथी मिलबा का ठिकाणा—

( १ ) जीवन-कुटीर, बनस्थली, पोष्ट निवाई ।
( २ ) मनोरञ्जन प्रेस, गोपालजीका रास्ता, जयपुर ।
( ३ ) सेवक-सदन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर ।

# जपर की बोली में गीताजी

दुनिया में अस्यो कुण छै ज्यो गीताजी नैं कोनैं जाणै ? दुनियां की सारी बोल्याँ में गीताजी को तरजमो मौजूद छै। म्हारा ध्यान में या बात आई छै क गीताजी को तरजमो जैपर की बोली में होणो चायजे। थोड़ो सो तरजमो नमूना का तौर पर ई पोथी में दियो छै–यो नमूनो लोगां कै दाय आबाकी खबर मनै मिलसी अोर म्हारो मन उमगसी तो मैं सारी गीताजी को तरजमो जैपर की बोली में छपास्यूँ। नमूना का बारा में ज्यां की जसी राय हो वा मालुम होणी चायजे अोर कोई भूल चूक हो सो भी बताणी चायजे।

हीरालाल शास्त्री।

मनोरञ्जन प्रेस, गोपालजीका रास्ता, जयपुर।



बरस पैलो ]                [ सानगी दूसरी

# जीवनकुटीर का गीत

## [ माहवारी पोथी ]

जुकता के ३ गीतया

प्रकाशक–

जीवन-कुटीर, बनस्थली

पो० अॉ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का चार पीसा }    जून १९३४ { दाम एक बरस का ।।।)
डाक मैसूल का ।।) न्यारा

# एक छोटीसी अरज

जीवनकुटी का गीतां की या दूसरी बानग
हाजिर छै । जीवनकुटी जैपर राज को एक
संस्था छै । म्हे कुटी हाला कतरी मुसकलां
सामनो करता हुया कैस्यो जरूरी काम करह
छां या बात अब आप लोगां सूँ छानी कौनै
घणी बात बदायाँ सूँ काँई हो छे-आप गीत
की पोथी का पक्का गायक बणजाओला तो
नवादू गीताँ को मौज तो आपनैं दो पीस
की मदद आपकी मनभावणी संस्था जीवनकु
नै मिलजासी । बस याही एक छोटो सी अर
छे क आप पोथी नै देखताँ ही बारा म्हैनाँ
पक्का गायक बणजाओ अर जीवनकुटी
भला कार में आपको सीर करल्यो ।

ता. १-६-३४ ] हीरालाल शा



बरस पैलो बानगी दूसरी

# जीवनकुटीर का गीत

## बारलागांक हालां की प्रार्थना

प्रभुजी जलम सुधारोजी, सरणो थांको छै ।
सरणो थांकोजी, म्हांको जलम सुधारोजी, सरणो थांको छै ।
पेट भराऊ रोटी खावाँ, नित उठ थांका म्हे गुण गावाँ ॥
दालद दुःख निवारोजी, शरणो थांको छै ॥१॥
लीप्या पोत्या मकान राखाँ, साफ बतकरी धोती राखाँ ।
गाँव साफ रै सारोजी, सरणो थांको छै ॥२॥
पढ़वो लिखवो म्हानै आवै, कदे न कोई ठिगबो पावै
प्रभुजी वेग उधारोजी, सरणो थांको छै ॥३॥
म्हाँनै काम सदा ही भावै, ठालो रैवो नहीं सुहावै ।
सुधरै मिनख जमारोजी, सरणो थाँको छै ॥४॥
मीनत कराँ कुमाकर खावाँ, नहीं सींत पर मन ललचावाँ ।
हिरदो करो करारोजी, सरणो थांको छै ॥५॥

म्हाँको साँचो रूप पिछाणाँ, दुनियाँ की गत विधनैं जाणाँ।
डर अर वैम निकारोजी, सरणो थांको छै ॥६॥
बुरी बात सैं चित्त हटावां, नाहीं डरपां ना डरपावां।
न्यायपंथ हो म्हां को जी, सरणो थांको छै ॥७॥
झूठ कपट सूं सदा बचाओ, म्हांनैं सांचा साफ बनाओ।
बोल न बोलां खारोजी, सरणो थांको छै ॥८॥
आपस की म्हे भली बिचाराँ, मन में कुढबो कदे न धारां।
दिल समदर कर डारोजी, सरणो थांको छै ॥९॥
मिल जुलकर म्हे रैबो सीखाँ, बैर बिरोध मिटाबो सीखाँ।
एको रहै हमारोजी, सरणो थांको छै ॥१०॥
गांव जात की सेवा करणी, शक्ती शान्ती मन में धरणी।
जागै प्रेम हमारोजी, सरणो थांको छै ॥११॥

## नुकता को ख्याल

( पंच सरदार नुकतो करावो चावै छै, घरधणी की सरदा कौने, मख्या हुया बाप दादा सुरगलोक में सूं नुकतो न करबाकी बात कैछै, उपदेसक उपदेस सुणावै छै-जद जार सबकै नुकतो न करबाकी जच जाय छै )

जवाव पंच सरदारां को

नुकतो तो करदे थारा बाप को रख जाग जिमीनैं—



चाली आई रीत बड़ां की छोड़ी किस विध जाय।
जे छोड़ें तो नांव बड़ां को मांटी में मिल जाय रै॥१॥
जात बिसादर जस्या जगत में और कदे नहिं होय।
ऊंठ बारणै जो नहिं बिखरी सारी दीनी बोय रै॥२॥
जवाब घरधणी को
सुण लीज्यो पंचो पीसो एक भी घर मांय नहीं छै—
हाथ जोड़ कर करूं बीनती सुणल्यो सब सरदार।
बाल बाल पैलां को होगो और नहीं आधार जी ॥३॥
खाली कोठो पड्यो नाज बिन तन पर लत्ता नांय।
दिन तोडूं छूं कयां जयां मैं कोनै म्हारी पांय जी ॥४॥

ज० पंच सर० को

मुर्दा ज्यां का गड्या पड्या छै बिगड़ी बांकी जात।
फिरै कंवारा डोलता कोई देखै कोनै दांत रै ॥५॥
भाई सगां कै फिस्यो जीमतो अब तू टाला खांवै॥
कस्या किरावर पैली कां पर क्यों पाणी फिर जाय रै॥६॥

ज० घरधणी को—

मुसकल सूं तो बीज मिल्यो छै लियो परायो बैल।
थे आकर यो हुकम करो छो नुकता को कर सैलजी।
नुकतो तो बण आसी कोने करसी चरचा लोग।
बस बारै को होकर लाग्यो निमलाई को रोगजी ॥८॥

ज० पंच० सर० को।

पांच पचास क्यासी जद भी नहीं लखपती होय।
मूंडा की थू राख काड कर बिजनस ऊजली होय रै ॥९॥
जाग जमीं तो फेर होयली यो मोसर नहिं आवै।
दो मण चूण करयां बिन थांसे जलम अकारथ जाय रै १०

ज० घरधणी को।

हाथ हाथ नै धीजै कोनै जाऊं कुण कै पास।
कोसिस तो मैं करूं मोकली मिलवाको नहि आसजी ॥११

ज० पंचसर० को।

धीजो पतीज घटी छै तो भी बैठास्यां सब सोय।
अटक्यो थारो काम काडस्यां चाहे कुछ भी होय रै ॥१२

ज० घरधणी को

थे तो किरपा घणी करोला करस्यो म्हारो काम।
ल्याऊं माथै बार कडा कर पड़ै चुकाणा दाम जी ॥१३

ज० पंचसर० को।

ऐसो मोटो भाग खरच को पैदा दूणी होय।
मर्द छतां ई बड़ै ठिकाणै नांमूंछी नहीं होय, रै ॥१४
मालपुआं को बडो नांव छै म्हां की याही राय।
दो पीसां कै कारणै क्यों बात बड़ी बिगड़ाय रैं ॥१५
नानी सूनी मौत नहीं छै करलै खूब विचार।
ढोड़ पुआ ही मांग रही छै म्हांको यो निरधार रै ॥१६



ज० घरधणी को।

सेर नाज खाऊं छूं मैं भी समझूं सारा बोल।
सरदा सारू काम होय छै हिरदा में ल्यो तोल जी ॥१७

ज० पंच सर० को।

मात पिता जण जलम दियो छै मोत करी बेगार।
फोसे नुकतो तू करै तो जीबा में धरकार रै ॥१८

ज० घरधणी को।

थांनै पंच बड़ा मैं मानूं, राखूं थांकी काण।
चून बांध चोगरदी फिरगा लेल्यो म्हारा प्राणजी ॥१९
अरज करया की म्हारी राखो, मैं या कैदी साफ।
अरदाती क्यों लाद रह्या छो अब तो कर द्यो माफजी ॥२०

## जवाब बाप दादां को।

नुकतो नहिं चावां सुणल्यो ध्यान सैं परलोक गया म्हे
म्हांकै नांव करो नुकता झूठा लीजो जाण।
थांकी जीभ चटेड़ा मेलै जद देवै परवाणजी ॥२१॥
मरती बेल्यां बुद्ध बिसट हो जद म्हे बोलां चूक।
मरतां ही तो साफ दिखावै नुकता की नहिं भूकजी ॥२२
मिरतलोक में बसै जकां कै नुकता की अभिलाक।
मरता हो ज्यो भाग भाग कर पड़ै जीमबा ढाकजी ॥२३

जीवैछा जद आपां घर में रैवैछा सुख मान ।
आप मर्यां जुग परलो होवे बोलै लोग सुजानजी ॥२४
जीया जतरै हुई बंदगी दिया मर्यां सूं बाल ।
फाड़खती बस हुई आपणी अब कोनै लेवालजी ॥२५॥
पैल्यां घर में सरतन हो छो देखै छा चुपचाप ।
छतां दिवालो मुआ करो छो हुयो जद्यां सन्तापजी ॥२६
कतरो धन म्हे छोड़ मर्या छा जाणां छाँ सब हाल ।
नुकतो माथै ल्यार कर्याँ सूँ होवैलो बेहालजी ॥२७॥
खाबा को थे करो खुवाबो म्हांनै आवै रीस ।
मर्यागयां को चित्त दुखाओ लागैली दुरसीस जी ॥२८
म्हांनै थांको घणो भरोसो मानो म्हांकी बात ।
म्हांको भूठो नाँव करा कर मती जिमाओ जात जी ॥२९

जवाब उपदेसक को ।

पञ्चाँ नै लोपो स्याणा भाइयो घर देख चलो थे ।
नुकता चाल बड़ी की नाहीं मानो म्हाँकी बात ।
पाछै लाग्यो पाप आपणें जद्यां जिमाई जातजी ॥३०॥
सुणो जद्यांतो घणा काम की बात सुणावां एक ।
सासतर नुकतो नहीं बतावै करै जिमक्कड़ टेकजी ॥३१॥
जीतैजी तो थे ठुकराओ रोटी मुसकल होय ।
मरबा पाछै मुआ करोआँ सूं नहीं बंदगी होयजी ॥३२



जे चावो तो मात पिता कै सेवा करनो जोग ।
मात पिता तो भूखा मरगा लोग लगावै भोग जी ॥३३
मरबा सूं तो दुःख होय छै मीठो किस विध भावै ।
मर जावै सो घर जावै छै कंगला क्यों कर जाय जी ॥३४
थांकी पोई थे ही सेको दुख में संगी राम ।
हाथ पूंछ कर चल्या जायला एक न आवै काम जी ॥३५॥
घर में दीखै पड्यो दिवालो पंच करावै नांव ।
भूठो नांव काम कद देसी जाणै सारो गांव जी ॥३६
जिमी जागां नै गैणै रख कर बड़ा बणो छो आज ।
इज्जत हाथां बेच बाच कर रखबा लाग्या लाज जी ॥३७
थेही थांकी करो बुराई और करै नहिं कोय ।
सारा मिलकर बंद करो तो चर्चा भी नहिं होय जी ॥ ३८
भाई सगा तो भली बिचारै बिगड़ी साधै बात ।
पेट भरै अर पोट बाँधलै भली जिमाई जातजी ॥३९
पैली का तो पंच बड़ा छा निमटावै छा न्याव ।
कंगला पंच हुया ये देखो खाबा को छै च्याव जी ॥४०

जवाब आखिरी शामिल को ।

नुकता नहिं करणा कैणा मानणा घर बार बसाणा ।
सासतर में जो बात लिखी हो करणी बिसवा बीस ।
सासतर बारै चाल ओपका हाड रह्या छो पीस जी ॥४१

जात बिरादर सीस धरो थे करो भलाई धाप ।
गास्या खातिर जात न्यात को मती बंधाओ पापजी ॥४२
मात पिता की सेवा करणी लेणी आग्या मान ।
माल मरयां पर उड़ा उड़ाकर मती करो अपमान जी ॥४३
आपसरी की करो भलाई करो बुरा को त्याग ।
बिन जीम्यां ही जार धणी कै भली बंधाओ पाग जी ॥४४
देखा देखी तीख करो मत समझो सोच बिचार ।
जात को करो भलाई होसी जद उद्धार जी ॥४५

## नुकता को पाप ।

( नुकताको खण्डन )

जोबनकुटी की कैण सुणो थे,
नुकतो पाप घणो जबरो ॥१॥
घर में मोत भई जद देखो,
माण्यो रोज घणो जबरो ॥२॥
मरी लाश पर बैठ र जीमो,
समझो पाप घणो जबरो ॥३॥
दुनिया जीमै नांव मरया को,
ऊंलो ख्याल घणो जबरो ॥४॥
जाग जिमी लीलाम करावै,
होवै नांव घणो जबरो ॥५॥



न्यात्‌लू साटे लुट्यो टापरो,
समझयो काम घणो जबरो ॥६॥
अंगतू छा सो हुया लुटेरा,
लूट्यो माल घणो जबरो ॥७॥
ज्यांकी जूती ज्यांको माथो,
देखो ख्याल घणो जबरो ॥८॥
बड़सी चूकी हुया भिखारी,
पड़ गयो काल घणो जबरो ॥९॥
नुकता को थे जीमण छोड़ो,
बणसी काम घणो जबरो ॥१०॥
मरद बणो थे पाप छोड़यो,
मिलसी साथ घणो जबरो ॥११॥
सासतर नुकतो नहीं बतावै,
फैल्यो जाल घणो जबरो ॥१२॥
नुकता बिना बंधाओ पगड़ी,
होसी ठाठ घणो जबरो ॥१३॥

## पींदण बिसाओला

( घर का कपड़ा को घर की रोटी सों मुकाबलो )

चूलो बलै तो आपकै चर्खो बिसाओला,
घट्टी चलै तो आपकै पींदण बिसाओला ॥१

चर्खो चलो भायला छै रै सदा हो साथ मे,
चलो तो थे घाल मेल्यो चर्खो बिसाओला ॥२
घट्टी पींदण साथ का छै बात पक्की जाण ज्यो,
घट्टी तो बिसाय मेली पींदण बिसाओला ॥३
नाज घर में पीसल्यो छो पींदस्यो घर में रुई ।
कातबा की मौज लेस्यो पींदण बिसाओला ॥४
पिसाई का पीसा लागै पींदै कोने सींत में ।
पिंदाई का पीसां सूं हो पींदण बिसाओला ॥५
पिसाई का पीसा लागै चून बिगड़े गांठ को ।
चोखी पूणी चायजे तो पींदण बिसाओला ॥६
एक रेजो मोल ल्यावो मण कुपासी लागसी ।
कुपास घर में राखस्यो तो पींदण बिसाओला ।७
बनथली का सब घरां में न्यारो पींदण देखल्यो ।
सांची मौज लेणी हो तो पींदण बिसाओला ॥८

## साँची बात ।

( दो चार आंख्या देख्या ख्याल )

देखो सारी सांची बात कुटीया खूब दिखाई छै ।
सासतर को तो नांव धरै छै,
मन की करै उपाइ ।



अकरम करतां बात बड़ाँ की,
देवै तुरत भिड़ाइ ॥१॥
एक राम का बेटा सगला,
झूठी ल्होड़ बड़ाइ ।
काम करयाँ सूं बड़ा होय छे,
ठाला की हलकाइ ॥२॥
भागा दौड़ी करे पालती,
दुनियां खाय कमाइ ।
खाती जाय बिगोती जावे,
या कैसी नुगराइ ॥३॥
जीव जीव को वैरी दीख्यो,
देख भाल परखाइ ।
मुरदा नै भी मुरदा मारै,
आख्याँ देख बताइ ॥४॥
जींसूं निमलो जींने मिलगो,
पूरो धोंस जमाइ ।
जद बाबोजी सबलो मिलगो,
टांगां पूंछ दबाइ ॥५॥
घरको धंधो घर में करले,
खोटी आस पराइ ।

घरको पीसो घर में राखे,
बोलो कसी बुराइ ॥६॥
ठाला बैठ्या हुकम करै छै,
के दिन की टणकाइ ।
अब तो संमलो हवा बदलगी,
कस्ता करयाँ भलाइ ॥७॥

## कन्या–पुकार

( कन्यावां की तरफ सूं मोट्यारां आगै )

कन्या खडी पुकाराँ चितद्यो सुणो र समझो ।
थाँका ही घर में जलमी म्हाने भी थाँकी समझो ॥१
छोरी हुई सुण्या सं अफसोस थे करो छो ।
छोरयाँ जस्या ही छोरा सबनै समान समझो ॥२
थे ही जलम का दाता थे ही दुभाँत राखो ।
यो पाप को घडो तो फूट्याँ सरैलो समझो ॥३
गुडती फिराँ अकेलो पगल्याँ जरा बडी हाँ ।
जद खेलबा का दिन हो कर ब्याव काडो समझो॥४
जद दाब हो रुप्याँ की बाई को ब्याव रोपो ।
दाँडाँ जयाँ ही बेचो अब तो जरा सा समझो ॥५
जद लोभ हो रुप्याँ को कुण जोडपो भी देखे ।
बूडो बडो कस्यो भी लाडो बुलाओ समझो ॥६



घर का धणी का घर में जद जार रेणो चावै ।
थे काम की गरज सूं कोनै खिंदावो समझो ॥७॥
घर आपको संभाल्यां सोभा बधे छै घरको ।
क्यों आंतरा छो पटको बण बावला थे समझो ॥८
मोट्यार सूं घणी या कस्ता करे लुगाई ।
जूती समान जद भी क्यों हो कदर थे समझो ॥९
गाडी का पाचरा ज्यों थे चाचरो गिणो छो ।
मूरख दुणया छो खुद तो, मूरख सभी नै समझो॥१०
मोट्यार थे बाण्यां छो अब तो करो भलाई ।
थांकी गिरस्ती जद ही अच्छी चलेली समझो ॥११

## चूँदड़ो !

( घर को पींदूयो, काल्यो अर बण्यो कपड़ो पैरबा की सीख )

ओड़ो खूब चली छै नारी ! सजधजवारा चूँदड़ी—
घर में रुई पींदो आप, कातो सूत घरां ही आप ।
घर की घरमें धरो बणाय, घराँ की ओड़ो चूँदड़ी ॥१
घर में मिलै जसी म्हे रोटी, खावां राजी होकर रोटी ।
रोटी मोल कदे नहीं आवा, खरीदो मतना चूँदड़ी ॥२
थे तो मोट्यारां नै पूंछो इज्जत कडै गई सो पूँछो ।
पगड़ी पड़ी सीस सूँ जाय, लगावै थामो चूँदड़ी ॥३

रंगबो जीवनकुटी में सीखो, छापो आय अडै ही सीखो ।
ओडो देख भाल हरखाय, बचाणी पीसा चूँदड़ी ॥३
मंयो जार मोल को ल्यावै, ओड्यां पैर्यां अंग दिखावै ।
थे तो फाड़ बगावो बार, दिखाणी अंगकीं चूँदडी ॥५
घर को पीसो फरो बगावै, मयाँ ओड बावली रखावै ।
घर में पड्या दिबालो डाक, रखावै लज्जा चूँदड़ी ॥६
घर को पीसो काड मतीना, घर पैला को भरै मतीना ।
पीसो देख बयो यो जाय, थमावै पीसौ चूँदडी ॥७
मंयो फूफन्यो सी नहीं डाटै, उलझ जाय तो झटपट फाटै ।
उतर्यां सूँ जो दे नहिं काम, बिसाओ मतना चूँदड़ी ।
बामण बाण्या हुया बावला, मोल काटता फिरै बावला ।
बांको जीव मंयाँ में जाय, बिसावै झीणी चूँदड़ी ॥९
थे तो सीख भला की मानो, मनमें बुरो कदे नहिं मानो ।
घर की डूब रही या नाव, किनारे ल्यावै चूँदड़ी ॥१०॥

---



# जीवनकुटी पाँच बरस को होगई !

गीतां की पैली बानगी में आप लोगां नै या मालम करदी गई क जीवनकुटी काँई छै । दिसंबर १९३३ में डिग्गीहालाँ का नोरा ( जैपर ) में जीवनकुटी को हजारां आदम्याँ को जलसो हूयो सो भी आपनै हालतांई नीकां याद होसी । अर बार थोड़ा दिन पैली खास बनस्थली में ज्यो उच्छव हुयो ऊँका समाचार भी आप सुण्या होसी । जीवनकुटी नै लोग भोत चावै छै—जद ही अस्या गरमी का मौसम में किराया की मोटर जसी बुरी सवारी में गांठ को भाड़ो आपकै कनै सूँ लगार भी जैपर स्हैर का भोतसारा आदमी जलसा में सामल होगया । जलसा की रंगत बेडब रही—सैकड़ां आदमी आधी पाछै तक जम्या रह्या अर पचासां तो सारी रात ही आँख्यां मावोकर काढ़दी । एक ही नहीं अनेक भाई ऊबा हो होर बोल्या अर म्हांकी हीमत बँधाई । म्हे तो म्हांनै क्यों भी कौनै समझां—पाँच बरस सूँ बणेछे सो बन्दगी बजाद्यांछाँ अर म्हां को जीव सोरो करल्यां छां । पण जैपर का पावणां तो म्हां की घणी बड़ाई करी अर म्हांनै लाजा ही मार नाख्या । अब एक तरफ तो म्हे जैपर हालां को गुण मान्यो वै म्हां की असी चौखी संभाल करी—पण दूसरीतरफ म्हे वांनै ओलमो भी जरूर देस्यां क वै म्हां की अतरी मूठी बड़ाई करनांखी ।

२०

जलसा में छोरी छोरा व लुगायां न्यारा न्यारा गीत सुणाया अर म्हे म्हांकी पाँच बरस का हालचाल की छप्योड़ी पोथी भी बांचर सुणाई। जैपर का पावणां म्हां का काम नै चोखो समझयो जीं को एक मसोदो बणार पास कर दियो और म्हांकी मदद कै वास्तै रुप्यां की बोछाड़ कर नाखी। म्हे देखता ही रैगया क लोग पैली सूँ पल्लै बांधर खूब पोंच्या! जैपर स्हैर का रैबाला पावणां नै बारलागांव में तकलीफ तो होती सो तो हुई ही। म्हे म्हांकांनी सूँ ठंडा जलकी मनवार करदी—और दूसरै दिन संवारै सांच्यां ही रावड़ी पार सीख देदी।

जीवनकुटी अब पाँच बरस की होगई और जलसा कै दिन आयंदा कै वास्तै ई संस्था की घणी ऊँडी नीव घाल दी गई। आप लोग जीवनकुटी पर सदा ही किरपा बणी राखबो करो बस आपसूँ याही चावां छां।

हीरालाल शास्त्री।

## पोथी मिलबा का ठिकाणा—

(१) जीवन-कुटीर, वनस्थली, पोष्ट निवाई।

(२) मनोरञ्जन प्रेस, गोपालजीका रास्ता, जयपुर।

(३) सेवक-सदन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।

# जैपर की बोली में गीताजी

दुनिया में अस्यो कुण छै ज्यो गीताजी नै कोनै जाणै ? दुनियां की सारी बोल्याँ में गीताजी को तरजमो मौजूद छै। म्हारा ध्यान में या बात आई छै क गीताजी को तरजमो जैपर की बोली में होणो चायजे। थोड़ो सो तरजमो नमूना का तौर पर ई पोथी में दियो छै-ओ नमूनो लोगां कै दाय आबाकी खबर मनै मिलसी और म्हारो मन उमगसी तो मैं सारी गीताजी को तरजमो जैपर की बोली में छपास्यूँ। नमूना का बारा में ज्यां की जसी राय हो वां मालुम होणी चायजे और कोई भूल चूक हो सो भी बताणी चायजे।

हीरालाल शास्त्री।

मनोरञ्जन प्रेस, गोपालजीका रास्ता, जयपुर।



# जीवनकुटीर का गीत

[ माहवारी पोथी ]

प्रकाशक-

जीवन-कुटीर, बनस्थली

पो० आँ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का च्यार पीसा } जुलाई १९३४ { दाम एक बरस का ।।।) डाक मैसूल न्यारो

## मसालादार !

बारलागांव का लोगाँ नै समझावा कै वास्तै वांकी खुद की बोली में गीत बणाया और स्हैर हालां नै भी वै गीत चोखा लाग्या तो वांनै छा जस्या नै ही छपवा दिया। पण मालम पड़ै छै क स्हैर हालां कै वास्तै थोड़ा मसालादार गीत भी चायजे। ई वास्तै थोडा नुवां गीत बणाणा पड़सी ज्यांकी स्हैरी ढाल होसी और ज्यां में स्हैर की सी बातां होसी। व्याह स्यादी का और दूसरा मौकां का गीत भी बण जायला तो छपा दिया जायला। स्हैर हालां कै वास्तै गीत छपावा को बिचार कर्‌यो जद अब कांई करां म्हाँ बारलाँ गाँव हालां नै भी पंगत गैल घुरसगारी करणी पड़सी—

ता० १।७।३४ हीरालाल शास्त्री।

---



## जरा सी मदत चायजे

पाछला पांच बरसां में जैपर राज का रैबाला भोतसा लोग जीवनकुटी की गैरी मदत करी छै। म्हांकी निगै में जीवनकुटी का काम नै सभी चोखो समझै छै। रुप्यो पीसो भी म्हांनै चावै तो छै, पण म्हांनै रुप्यो पीसो मांगबो सुवावै कोनै। म्हानै या आस भी छै, क म्हांनै चासी जतरो रुप्यो पीसो बिना मांग्यां भी चाल्यो आसी। रुप्या पीसा की कमी सूँ जीवनकुटी को काम रुकै कोनै म्हांनै यो बिसवास छै। अब म्हे एक दूसरी तरै की मदत दुनियां सूँ चावां छां। वा, याही क आप लोग गांव सुधार का काम नै आपको खुद को समझो। गांव सुधार को काम भोत बड़ो छै—और ईं नै करबा बेई बड़ी भारी ताकत चायजे। म्हांरी राय में ईं काम की एक कमेटी बणाई जाय और ऊँ कमेटी की मदत कै वास्तै एक सभा भी बणाई जाय।

मैं चाऊँ जसी कमेटी बणजावै तो वा कमेटी गांव सुधार को भोत बड़ो काम कर सकै छै। म्हारा खयाल सूँ कमेटी नै राज सूँ भी मदत मिल सकै छै। आजकाल गांव सुधार को काम कोई नुंई बात कोनै। आपणा देश में कई जगां सरकार की तरफ सूँ भी यो काम हो र्‌यो छै—सो अब जैपर राज भी ईं काम में पाछै नहीं रैवैलो। राज की तरफ सूँ पैली दिखा लियो जाय क कसी जगां कांइ तरै को काम हो र्‌यो छै—जीवनकुटी ज्यो काम कर्‌यो छै वो भी नीकां देख लियो जाय—अर फेर यो बिचार

कर लियो जाय क जैपर राज में कांई तरै सूं काम हो सकै छै। यो काम जरूरी छै—ईं बारा में सबकी एक राय छै—जरूरी छै तो करणो भी चायजे—बस सवाल यो ही छै क ईं काम नै करयो कियां जाय। पण एक बार राज या बिचार ले क यो काम करणो ही छै जद पाछै तो सो गेला दीख्यासी। जीवनकुटी का सेवक आपनूं बणी जतरी बन्दगी बजा दी और आयनदा बणासी जतरी बजाता रैसी। पण हालतांई म्हांकी अतरी आकाय कोनै क सारा राज में यो काम फैला सकां। इतनो बड़ो काम तो राज ही कर सकै छै-और राज नै जद पिरजा की मदत भी मिलजाय जद तो सोनो और सुगन्ध हो जाय।

म्हांकी एक अरज याही छै कि राज का हाकिम—अफ़सर जीवनकुटी का काम नै देखै. ऊं पर विचार करै और पाछै जचै तो गांव सुधार को काम राज की तरफ सूँ छेड दियो जावै। पिरजा सूं भी म्हांकी या ही अरज छै क वैभी जीवनकुटी का काम नै देखै और देख्यां पाछै जचै तो जगां जगां अस्यो काम छेड़बा को परबन्ध बांधै। कांई राज नै कांई पिरजा सबनै म्हां गरीबां की तरफ को न्योतो छै क वै जीवनकुटी का काम की तरफ निगै करै।

हीरालालशास्त्री।

---



बरस पैलो बानगी तीसरी

# जीवनकुटीर का गीत

---

## सेवक—फरियाद।

[ ज्यो पालत्यां का सेवक बांकी तरफ सूँ भगवान कै आगै करी छै ]

भगवान ! अब कद्यांसी करुणा की टेर सुणस्यो।
सेवक खड़ा पुकारां प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ १ ॥
भोला हुया ये करसा आप्यो नहीं पिछाणै।
बरदान थांसूँ मांगै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ २ ॥
कर कर कुमाई सबकी ये पालणा करै छे।
रोटी बिना ये तरसै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ ३ ॥
गल्ला कुपास करसा पैदा करै छै ये ही।
लत्तां बिना ये तड़पै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ ४ ॥
थोथा पड्या ये घरमें करजो घणो बढायो।
झूठो गुमान राखै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ ५ ॥
कोठ्यां का पाणी सूक्या विरखा भी धोखो दे छै।

बलदां को हाल बोदो निमलो तमाम धन छै।
छै खात मूत थोड़ो प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ ७ ॥
हठसूँ करै कुमाई साखां निव्याँ सो देखै।
दावो पड़ै ख टीड़ी प्रभुजी कद्यांक सुणस्यो ॥ ८ ॥
जुगता कद्यांसी लागै साखां खलाँ में आवै।
रीता जद्यांभी रैवै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥ ९ ॥
रोटी मिलै तो खावै लत्तां बिना सरावै।
माथै कडार ल्यावै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥१०॥
चावै करै बुराई उल पेट मांय कोई।
पण आपये लड़ैला प्रभुजी ! कद्द्यांक सुणस्यो ॥११॥
सब पर पड़ी छै विपदा जीं को उपाय करणो।
मिलकर ज़रातो सीखै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥१२॥
बारै गऊ का जाया घर में हो सांड टांडै।
मुरदा अस्या बण्या ये प्रभुजी कद्द्यांक सुणस्यो ॥१३॥
बाज़ार में भलांह। कुछ भी क़दर नहीं हो ॥
जद जाय ये कचैड़ी कुत्ता जसी ही दर हो ॥१४॥
भाई सगां में जावै जद ये बड़ा बणै छै।
अब आबरू रखाओ प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥१५॥
जीवन कुटी का सेवक यांनै भली सुझावै।
पण बैम का भस्या ये प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥१६॥
ज्यानै बणाणो मतलब चाहे जियां जचावै।



वांकी ये लैर लागै प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥१७॥
खुद पालती का जाया अर पालती नै लूटै।
कुल में हुया ये काग्या प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥१८॥
गूंगा हुया ये करसा नाहीं जुबान उपड़ै।
बैरा हुया भला की बातां सुणै नहीं छै ॥
थांकै कनै जद्यांही प्रभु ! हार कर म्हे आया।
अब पालती की अर्ज़ी प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो १९-२०
प्रभुजी ज़रा अक़ल द्यो प्रभुजी ज़रा जुरत द्यो।
प्रभुजी मरद बणाओ प्रभुजी ! कद्यांक सुणस्यो ॥२१॥

## नारी–मरदाणी।

[ पालती की लुगाई का दुख की फोटू ]

नारी मरदाणी ! तू आबरूकी अम्मर सैनाणी !–नारी मरदाणी।
खाली होगो टापरो सो देखलै ए मरदाणी।
आंख्याँ खोलर–आंख्यां खोलर झांक, तूतो ईंकै कानी झांक,
अब तो घर कै कानी झांक नारी मरदाणी ॥ १ ॥
छोरा छोरी बावड़ बावड़ रोटी मांगै मरदाणी।
भूखा रोवै–मरता रोवै नार, थारा कालजा का टूक,
थारा हिवड़ा का ये टूक नारी मरदाणी ॥ २ ॥
सी सरदी में थरथर धूजै थारा टाबर मरदाणी।
तनपर लत्तो तनपर लत्तो नाख, अब तो याँका तन नै ढांक,

यांकी सी सरदी तू डाँट नारी मरदाणी ॥ ३ ॥
लीरक लीरा घाघरियो तू पैरयाँ डोलै मरदाणी ।
लाजां मरगी लाजां मरगी लाज, थारा नागा तन नै देख,
थारो डील उघाड़ो देख नारी मरदाणी ॥ ४ ॥
आज बीत्यो पीसणो जद पीसै कांई मरदाणी ।
घर में कोनै घर में कोनै नाज, जद भी ऊपरली छै दाब,
तो भी देबा की छै दाब नारी मरदाणी ॥ ५ ॥
बोरो भी यो बण्यो कसाई कुड़क लियायो मरदाणी ।
देखै छै, तू देखै छै तू नार, थारी छचाली लरड़ी जाय,
थारी भैंस टांगर जाय नारी मरदाणी ॥ ६ ॥
ढोलाजी को कालजो तो भाख्यो धड़कै मरदाणी ।
घरकै भीतर घरकै भीतर नार ! यो तो थारे ताईं नार,
यो तो बारै जाकर गार नारी मरदाणी ॥ ७ ॥
ढोलाजी तो हाथां चुड़लो पैरलीनों मरदाणी ।
थारा घरकी थारा घरकी लाज, तू तो हिम्मत करकै राख,
अब तो मरदी करकै राख नारी मरदाणी ॥ ८ ॥
थारा घर को काम सारो हात थारै मरदाणी ।
डूब रही छै डूब रही छै नाव, या तो थारा घर की नाव,
त्यारो थारा घरकी नाव नारी मरदाणी ॥ ९ ॥
भाग कुआ में नाख थे तो काम करो ए मरदाणी ।
जीवनकुटी की जीवनकुटी की कैण सारू चालो सारी नार,
थे तो चालो स्याणी नार नारो मरदाणी ॥ १० ॥



# घूँघटो ।

( पड़दा को खण्डन )

थे तो बार उघाड़ो सारो आफत वारो घूंघटो ।
लाग्यो भोत बड़ो यो पाप, अब तो दूर हटावो आप;
सुधरै मिनख जमारो प्यारो, बार उघारो घूंघटो ॥१॥
सैंदा सैं तो पड़दो करणो, पैला देख नेक नहिं डरणो ।
देखो ऊंली चाल चली या, बार उघारो घूंघटो ॥२॥
मूंडो घूंघट माँय लुखावो, गैलै चलतां लोग लुभावो ।
अब तो निरभै होर रहो थे, बार उघारो घूंघटो ॥३॥
घूंघट में क्यों पाप छिपाओ, पाप नहीं तो क्यों घबराओ ।
छोड़ो गंदो भाव विसय को, बार उघारो घूंघटो ॥४॥
डील लुखायाँ सत नहिं रैणो, मनका बेल सैं ही सत रैणो ।
जूझो वीर भोम को नार, बार उघारो घूँघटो ॥ ५ ॥
बेमारी थे यों ही भुगतो, पड़दा सैं कुछ ज्यादा भुगतो ।
आधी चंगी बार बणो थे, बार उघारो घूँघटो ॥ ६ ॥
घर की घर में पड़ो सिड़ो थे, कुछ तो बारै आर अड़ो थे ।
उजड़ बोला काम पड्या ये, बार उघारो घूँघटो ॥ ७ ॥
खुली हवा में घरसैं निकलो, सौल देखवा बारै निकलो ।
मुरदा पण नै छोड़ सभी थे—बार उघारो घूँघटो ॥८॥
धरम करम में संग पती को निरभै देणो संग पती को ।

( ६ )

थाँका हक नै नार संभारो, बार उघारो घूँघटो ॥ ९ ॥
देस विदेसां पड़दो टूट्यो, घणो पुराणो धड़को छूट्यो ।
हिम्मत को यो खेल सुणो थे, बार उघारो घूँघटो ॥१०॥
पड़दा दानव मार भगावो, जल्दो सी थे पिंड छुड़ावो ।
जीवन की यों सार करो थे, बार उघारो घूँघटो ॥११॥

## केश्यो ।

[ गरीब का दिल कै माफिक लाल केश्या की धुन ]

एका रै एका प्यारा बेगो बेगो आव रै ।
थारै रै आया सूँ कारज होयलो ॥ १ ॥
धन्धा रै धन्धा भाया प्यारो म्हाँनै लाग रै ।
ठाला को दुनियाँ में प्यारा पै नहीं ॥ २ ॥
घाटा रै घाटा बैरी बाँध गूदड़ा चाल रै ।
ठैस्या सूं बिगड़ैली थारी आबरू ॥ ३ ॥
पीसा रै पीसा प्यारा पल्लै म्हांकै ठैर रै ।
चाय की बेल्यां क्यों भास्यो है रह्यो ॥ ४ ॥
ताता रै ताता बैरी ठंडो होकर बोल रै ।
थारी रै टणकाई कै दिन चालसी ॥५॥
सूता रै सूता प्यारा अबतो बेगो जाग रै ।
सोयां सूं भाईड़ा म्हारा नै सरै ॥६॥
बी० ए० रै बी० ए० भाया धंधो करबो सीखरै ।

( ७ )

फेशन सूँ घरकां नै लेकर डूबसी ॥ ७ ॥
सौरी रै सौरी प्यारा पैर जिमी पर टेकरै ।
ऊंचो रै झांक्या सूँ ठोकर खायलो ॥ ८ ॥
बामण रै बामण प्यारा असल धरम नै पालरै ।
ठाली रै बातां कै बाथ्यां मती पड़ै ॥ ९ ॥
ठाकर रै ठाकर प्यारा राजधरम नै पालरै ।
पिरजा को करबो कर पूरी पालणा ॥१०॥
बाण्यां रै बाण्यां भाया पूरै कांटै तोलरै ।
नातर तो नरकां में सूदो जायलो ॥११॥

## पाखण्डी लीला

( दुनियां का आंख्या देख्या पाखंड को फोटू )

छानै छानै पाप कुमावै, चोड़ै ढूंग दिखावै छै ।
अकरम करता फिरै अधरमी, झूंठी धूंस जमावै छै ॥
सासतर को तो नांव धरै पण, मन की मौज उड़ावै छै ।
बात धरम की करता डोलै, अधरम रोज रचावै छै ॥
मन की चीती जद करणी हो, नांव बड़ां को ले दे छै ।
चाल बड़ां की सारी छोड़ी, मूंडो कियां दिखावै छै ॥
पुरसारथ तो छोड़ दियो खुद, दोस भाग नै देवै छै ।
करबा की ये करै नहीं जद, दुखड़ो पांती आवै छै ॥

आप आप की बाटी सेकै, अर ये गांव डुबोवै छै।
गांव डूबसी जद कुण तिरसी, आंधा नांहि दिखावै छै॥
घर कै भीतर जोर करै, पैला की जूती खावै छै।
मुरदापण की बाण पड़ी, पण जरा नहीं सरमावै छै॥
सांच झूठ नै झूठ सांच नै, सारी ऊंलो समझै छै।
आंख मींच कर हरजस गावै, मन का मन में स्यावै छै॥
पाप करम का ओला बेई, नांव कलू को ले दे छै।
सैन रूप तो कलजुग बैठ्या, कलजुग कस्यो बतावै छै॥
बालपणै परणा कर छोरा, वांको जलम बिगाड़ै छै।
दुनिया में जीवा की गत विध, वांनै नहीं सिखावै छै॥
घर की लड़की बेंच अधरमी, बाबाजी परणावै छै।
पाप करै अर छानै राखै, बद कर बात बणावै छै॥
जीतै जी तो मा बापां नै, टुकड़ा मुसकल होवै छै।
मर जावै जद करज कडा कर, जबरो जिग्ग रचावै छै॥
मिन्दर का ये हुया पुजारी, मिन्दर घास भरावै छै।
खोल धोगती तिलक काड कर, ये पिंडत बण जावै छै॥
सक्करी रोटी और रावड़ी ल्यार लुगायां खावै छै।
पिंडतजी चौका की धज ये, जद भी भोत दिखावै छै॥
बोदा सोदा मिलै जिनावर, वांकी नाड़ कटावै छै।
नार मिलै जद रजपूती को, अंजस नहीं दिखावै छै॥
पालण की तो बात दूर छै, उल्टा और सतावै छै।



फरज अदा जो करणो चावै, ऊँने दूर रखावै छै॥
दीन दुख्यां का कठ काटै, पण पाणी छाणर पीवै छै।
दोय वार मिंदर में जाकर, सारा पाप धुपावे छै॥
कमती तोलर पल्ले पटकै, बाद तोल घर ल्यावै छै।
सौ सौ मूसा खाय बिलाई, तप को ढंग रचावै छै॥
भाग दौड़ कर करै कुमाई, पैला मौज उड़ावै छै।
गंडक चून सैंमूलो खावै, आप तुसां नै खावै छै॥
न करबा का काम भोत सा, वांकी जिद ये राखै छै।
सारी बातां समझै जद भी, करसा निन्ना ठिगावै छै॥
अब तांई की माफी पिरभू, थां सूं सारा चावै छै।
जीवनकुटी का सेवक प्रभुजी, ऊबा अरज सुणावै छै॥

## चोखा राजाजी।

चोखा राजाजी ये भोत भला छै,
म्हां का राजाजी—चोखा राजा जी—
ईसरदा का सिरदारां के जलम लियो ये राजा जी—
संवत अड़सठ २ मांय या तो भादवा की बात,
या तो बुद तेरस की बात—चोखा राजा जी॥ १॥
साडा नौ का हुया जद्यां ये गोद आया राजाजी—
ग्यारा का ये होर बैठ्या राज सींघासण,
पायो राज सींघासण—चोखा राजाजी॥ २॥

मेओ कालिज करी पढ़ाई छै वरसां तक राजाजी—
फौजी विद्या २ फेर पाई विल्लायत में जार,
ये तो बूलबिच में जार—चोखा राजाजी ॥ ३ ॥
विल्लायत सूं पाछा आयर काम सीख्यो राजाजी—
साडा उगणी २ होर लीन्यो इगत्यारी को काम,
पायो इगत्यारी को काम—चोखा राजाजी ॥ ४ ॥
मारवाड़ सूं राणीजी दो ब्याकर ल्याया राजाजी—
बाई जो छै २ एक यां कै राज कँवर छै दोय,
यांकै बनासाब छै दोय—चोखा राजाजी ॥ ५ ॥
जम्बवाजी का बंधा में सूं पाणी ल्याया राजाजी—
जैपर मांही २ भोत सारी टूंट्यां लाग्यां जाय,
नई टूंटयां लाग्यां जाय—चोखा राजाजी ॥ ६ ॥
लूगायां को ओगदखानों नुओं बणायो राजाजी—
और वणैलो २ हाल लूंठो ओगदखानों एक,
वो तो सब कै ताई एक—चोखा राजाजी ॥ ७ ॥
बड़ो मदरसो भारयो लूंठो खूब बणायो राजाजी—
सारै होगो २ नांव सारा रजवाडा मैं नांव,
जीं सूं सुणो जडैही नांव—चोखा राजाजी ॥ ८ ॥
ल्लायत में जार पोलो जबरो खेल्यो राजाजी—
सारा मानी २ हार यां को देश विदेशां नांव,
होगो सारै ठै ही नांव—चोखा राजाजी ॥ ९ ॥





धणा करया छै और करैला काम चोखा राजाजी—
म्हां का मन में २ आज यां को घणो भरोसो जाण,
यां को पतियारो हो जाण—चोखा राजाजी ॥१०॥
जीवन कुटी पर म्हैर करी जद फोटू दीनी राजाजी,
दरवाजा में २ आर थेतो फोटू देखो बार,
देखो घणी सोवणी बार—चोखा राजाजी ॥११॥

## नारी-मैमा

( लुगाई-मोट्यार का मेल को सुख )

घर की सोभा नारसैंजी सुणज्यो चित्त लगाय।
घर सूनो बिन नार कैसजी, बात कहूँ समझाय ॥
सीख की सुण लीज्यो नारी रै सीख की सुण लीज्यो नारी।
नार सुपातर होय आपदा टारै वा सारी।
नार बिन घर में दुख सैणा रै नार बिन घर में दुख सैणा।
मिलै सुपातर नार मौज सैं दुनियाँ में रैणा ॥ १ ॥
बड़ो भाग मोट्यार कोसजो नार कया में होय।
नारी का तकदीर सैंसजी मरद कया में होय ॥
सीख की सुण लीज्यो नारी ॥ २ ॥
नर नारी का मेल सैंसजी घर में आनँद होय।
नर नारी की फूट सैंसजी दुखड़ो घर में होय ॥
सीख की सुण लीज्यो नारी ॥ ३ ॥

नारी घर नै केवटैसजी करै कुमाई लोग ।
दोन्यूँ मिल आनँद करैसजी सुखी लुगाई लोग ॥
सीख की सुण लोज्यो नारी ॥ ४ ॥

नारी को आदर कस्योसजी रामचन्द्र भगवान ।
सीताजी बनवासनैसजी लीनो आनन्द मान ॥
सीख की सुण लीज्यो नारी ॥ ५ ॥

## ❀ बधाई ❀

(जैपर में कस्योड़ा सालाना जलसा का मौका पर गांवहालां की ब व कुटीहालां की तरफ सूँ जैपर स्हैर का बास्यां नै या बधाई सुणाई छी ।)

बिना बुलाया पावणा म्हे आज आया छां ।
गांवड़ां सूँ सैर में म्हे आज आया छां ॥ १ ॥
बोलबा का कायदा में थे घणा हुश्यार छो ।
सूदी बाणी बोलबा म्हे आज आया छां ॥ २ ॥
थांका जैपर सैर कोतो देस में नामून छै ।
सैर थांको देखबा म्हे आज आया छां ॥ ३ ॥
जीवनकुटी की बारता सूँ भोतसा सैंदा नहीं ।
सही सुणावा बारता म्हे आज आया छां ॥ ४ ॥
जीवनकुटी में आज पैली चेतो थे थोड़ो दियो ।
चेतो थांको खींचबा म्हे आज आया छां ॥ ५ ॥



बात करै छै सासतर की सासतर जाणै नहीं ।
खरी सुणाबा बात या म्हे आज आया छां ॥ ६ ॥
असल धरम नै लोप कर ज्यो ऊपरलो डाल्यां फिरै ।
बांकै करबा चानणो म्हे आज आया छां ॥ ७ ॥
बारै न्यारा मांय न्यारा यो कैस्यो पाखण्ड छै ।
कड़ा बचन ये बोलबा म्हे आज आया छां ॥ ८ ॥
बड़ी बात की परवा नांही बोदी नै लाद्यां फिरै ।
निगै कराबा चूक की म्हे आज आया छां ॥ ९ ॥
गुड़ खावै पण गलबाण्यां का पच करै छै भोतसा ।
बांकै लेबा चूँटक्या म्हे आज आया छां ॥ १० ॥
आप आपका स्वारथ मांहि सारा ही आंधा हुया ।
आँख्यां बांकी खोलबा म्हे आज आया छां ॥ ११ ॥
घर घर को सब काम करले दुनियां को जद कुण करै ।
साफ थानै पूछबा म्हे आज आया छां ॥ १२ ॥
सांची करदे भूठ नै ज्यो भूठ नै साँची करै ।
पोल बां की खोलबा म्हे आज आया छां ॥ १३ ॥
सैर कां की राय में म्हे गांव का जंगली हुया ।
सैरीपण नै जांचबा म्हे आज आया छां ॥ १४ ॥
म्हां की तो क्यों गिणती कोनै आदमी समझो नहीं ।
रोस मन को काडबा म्हे आज आया छां ॥ १४ ॥
माल म्हाँको उपजायोड़ो बरसाँ सूँ गुमजाय छै ।

खोज काडता काडता म्हे आज आया छां ।। १६ ।।
म्हां का दुख की ठीक कुणनै जीव निकल्यो जायछै ।
जद्यां सुणाबा रोजणो म्हे आज आया छां ।।१७।।
म्हे सुणी छै थां में सूं भी कुछ का दिल में ठोड़ छै ।
वां को तो गुण मानबा म्हे आज आया छां ।।१८।।
म्हे डूब्या तो थे भी डूब्या थे भी म्हां की लैर छो ।
देबा या चेतावनी म्हे आज आया छां ।।१९।।
मीठी बोलाँ खारी बोलाँ जो बोलाँ सारी सुणो ।
सूदी सट फटकारबा म्हे आज आया छां ।।२०।।
बात खरी म्हे कहदी जद भी हिरदा में तो प्रेम छै ।
प्यारा थांका जीव सूँ म्हे आज आया छां ।।२१।।


# विज्ञापनद्यो !

यां गीतां को प्रचार महलां से लेर झोंपड्यां ताईं छै कारण यो छै क जो जीवन कुटीने जाणै छै वै यांनै बिना मोल लियां कोनै रै सकै । ईं वास्तै कम सुं कम जैपुर राज में तो या पोथी विज्ञापन को सब सुं चोखो जरियो छै ही ।

अश्लील विज्ञापन कोनै लिया जासी । रैटस् भी आपने आपका मन माफिक ही मिलसी ।

पत्र व्यवहार को पतो:—

**जीवनकुटीर कार्यालय**

खेजड़े का रास्ता, चांदपोल बाजार

जयपुर ।

# जैपर की बोली में गीताजी

दुनिया में अस्यो कुण छे ज्यो गीताजी नै कोनै जाणै ? दुनियां की सारी बोल्याँ में गीताजी को तरजमो मौजूद छै। म्हारा ध्यान में या बात आई छै क गीताजी को तरजमो जैपर की बोली में होणो चायजे। थोड़ो सो तरजमो नमूना का तौर पर पेली दियो जा चुक्यो छै—वो नमूनो लोगां कै दाय आबाकी खबर मनै मिलसी और म्हारो मन उमगसी तो मैं सारी गीताजी को तरजमो जैपर की बोली में छपास्यूँ। नमूना का बारा में ज्यां की जसी राय हो वा मालुम होणी चायजे और कोई भूल चूक हो सो भी बताणी चायजे।

हीरालाल शास्त्री।

मनोरञ्जन प्रेस, गोपालजी का रास्ता, जयपुर।



# जीवनकुटीर का गीत

[ माहवारी पोथी ]

प्रकाशक—

जीवन-कुटीर, बनस्थली

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का न्यार पीसा } अगस्त १९३४ { दाम एक बरस का ।।।) डाक मैसूल न्यारो

## जैपरी क हिन्दी

घणा खरा लोग तो जैपर की बोली का गीत देखर राजी हुया दीख्या पण कोई कोई को दिल नाराज भी रियो दीखै छै, कोई कोई या कही बताई क बार अस्या ही गीत हिन्दी में बणाता तो हिन्दी की कसीक सेवा होतो ? म्हारी ओड़ी को अरज या छै क मैं छपाबा कै तोड़ी अथवा तो कोई भासा की सेवा करबा बेई गीत कोनैं बणाया—सांची बात या भी छै क मैं भासा को या काव्य को या संगोत को पिंडत भी कोनै। गाँव में परचार कै वास्तै गीत बणाणा पड़्यां पिंडतां कै सामनै भी पेस हुया, बांनै भी चोखा लाग्या, वै लोग घणा हो कैबा लाग्या जद जार छप दिया। और मैं तो एक नाकुछ आदमी छूँ, पण म्हारी राय में ज्यो हिन्दी छै सो हो मारवाड़ी वा जैपरी छै, वाहो राजस्थानी और ग्रियरसन साब को "वेस्टर्न हिन्दी" छै। जैपरी भासा कोई अलग भासा कोनै कसूर माफ हो, मैं तो जैपरी नै भी हिंदी ही मानूँ छूं।

हीरालाल शास्त्री

## जैपर में जीवनकुटीर को कार्यालय

म्हे जीवनकुटीर नांव को अस्थान बणायो जद का ही म्हांका साथी भायला और दूसरा लोग भी म्हांनै बराबर या कैता आवै छै क क्यों न क्यों ... जैपर स्हैर में भी करो। म्हे म्हांका मन में या सोचता रह्या क स्हैरां में तो सेवा करबालां की कमी कोनै, जो हो तो आपाँ गाँव में ही सेवा को काम कराँ। दुसरकां म्हां कनै अतरा आदम्यां को जोड़ भी कोनै बैठ्यो ज्यां का बलसूँ दो जगाँ की खेती नै दाब सकता। जीवनकुटीर को काम पाँच बरस ताँई चलचुक्यो और म्हे १०-५ आदमी भी थोड़ा भोत बणबा कै गेलै लाग्या जद म्हां को ध्यान स्हैर ओड़ी भी गयो छै। म्हांकै जैपर का काम ... बर रैबो ही करै छै—और वां मामूली कामां ... सिवाय यो माहवारी पोथी छपाबा को खास काम पैदा होगयो। और भी पोथ्यां बणाबा छपाबा ... काम बदाबा को म्हांको विचार छै। कई आदमी म्हांनै कातबो पींदबो सिखाबा वास्तै भी कैबो करै छा। यां सब बातां पर विचार कर्यो जद म्हांकै याही जची क जैपर स्हैर में जीवनकुटीर को कार्यालय थरपल्यां, जीं की मारफत सारा ही काम हो जाय। म्हे बारलागांव की हवा खायाड़ो आदमी

जैपर जस्या स्हैर का बास्यां को और काँई बन्दगी बजा सकांला-सो म्हांनै ठीक ठीक मालुम कोनै पड़ै। पण म्हे यो विसवास दिवा सकां छाँ क म्हांका करबा लायक कोई बन्दगी दीखै तो ऊँनै करबा बेई म्हे बीसों बिस्वा तय्यार छाँ। जीवनकुटीर की रीतनीत साफ छै—जीवनकुटीर गाँव की चीज़ छै, गाँव को चीज़ ही रैबो चावै छै। पण गाँव नै स्हैर की मदद की जरूरत पड़यां बिना कोनै रै। गांव कै पाछै स्हैर की सोभा छै—सो स्हैर नै चायजे क बणै सो मदद गाँव को करै। म्हे स्हैर हालां की कुछ बन्दगी जरूर बजास्यां—पण ऊँकी एवज में स्हैर हालां कनै सूँ कोमत भी चूकलेस्यां—और वा कोमत याही क वै म्हांका गाँव का काम में मदद करै। आज पैली भी म्हांनै स्हैर सूँ सब तरै की मदद मिली छै—और म्हे जाणा छां आयन्दा भी मिलती रैसी।

चाँदपोल बजार में खेजड़ा का रास्ता में एक चोराहो भी कोनै चालणो पड़ै क "जीवनकुटीर-कार्यालय" (जयपुर सिटी) दीख्यासो। और जीवनकुटीर की एकाध मूरत तो स्हैर का बास्यां का दरसण चाहे जद ही करती रैसी।

हीरालाल शास्त्री।



बरस पैज्यो बानगी चोथी

# जीवनकुटीर का गीत

## वैराटरूप-दरसण

(गीताजी का ११वाँ अध्याय का १५-३१ श्लोकां को तरजमो)

### अर्जुनउवाच।

पश्यामि देवांस्तव देव देहे,
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्राह्मणमीशं कमलासनस्थ,
मृषींश्चसर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥१५॥

नाथ! आपकी देही में ये सारा देवमनै दीखै।
तरैं तरैं का प्राण्यां का अर झुंड मोकला ये दीखै॥
कँवलासण पर बैठ्योड़ा ये स्वामी ब्रह्मा दीख छै।
रिसी मुनी सगलाये दीखै दिव्य सरूप ये दीखै छै॥१५॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं,
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।

[ २ ]

**नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं,**
**पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥**

भुजा मोकली और पेट ये मूंडा आंख्यां देख रह्यो ॥
च्यार्यूं मेर बिना हद को यो रूप आपको देख रह्यो ।
अन्त आपको कोनै दीखै नहीं मद्ध भी दीखै छै ।
बिस्वरूप ! विसवेसर ! थांको नहीं सरु भी दीखै छै ॥

**किरीटिंन गदिनं चक्रिणं च,**
**तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।**
**पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता,**
**दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥१७॥**

गदा चक्र अर मुकट धर्योड़ा रास तेज की दीखो छो ।
चमक दमक या सारै फैली जद मुसकल सूं दीखो छो ॥
बलती आग सुरज कै माफिक जोत आपकी दीखै छै ।
अपरंपार फैल कर सगलै रुप आपको दीखै छै ॥१७॥

**त्वमक्षरं परम वेदितव्यं,**
**त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।**
**त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता,**
**सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥१८॥**

मनै जाणवा लायक प्रभुजी ! पर ब्रह्म थे लागो छो ।
अर दुनियां को बड़ो आसरो प्रभुजी ! थे ही लागो छो ॥

[ ३ ]

अविनासी छो धरम सनातन का रखवाला थे ही छो ।
म्हांरे भांवै पुरस सनातन हे परमेसर ! थे ही छो ॥१८॥

**अनादि मध्यान्तमनन्तवीर्यं,**
**मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।**
**पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं,**
**स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥१९॥**

सरु मद्ध अर अन्त नहीं छै अर थांको बल बेहद छै ।
चांद सुरज छै आंख्यां थांकी और भुजा भी बेहद छै ॥
बलती आग जस्यो यो मूंडो भगवन ! आप दिखाओ छो ॥
और आपका तेज ताप सूं जग नै आप तपाओ छो ॥१९

**द्यावापृथिव्योरिदमन्तरंहि,**
**व्याप्त त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।**
**दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं,**
**लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥२०॥**

धरती अर आकास बीचका छेका में थे व्याप रह्या ।
और एकला थे ही भगवन् ! दसों दिसा में व्याप रह्या ॥
अद्भुत और भयंकर थांको रुप प्रभो ! या देख रही ।
तिरलोकी या डर की मारी प्रभो ! धूजती देख रही ॥२०

**अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति,**
**केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।**

**स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः,**
**स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥२१॥**

देवां का ये झुण्ड देखल्यो थांकै मांय समाय रह्या ।
डर का मार्‌या हाथ जोड़ कर केई गुण भी गाय रह्या ॥
और 'भलो हो' बोल २ कर रिसी मुनी सिध लोग सभी ।
कई तरैं सूँ कर अस्तूती गुण ये गावै लोग सभी ॥२१॥

**रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या,**
**विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च ।**
**गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा,**
**वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥२२॥**

रुद्र और आदित्त वसू सब और साधगण देख रह्या ।
विस्वदेव अस्वनी दोन्यूं मरुत पितर भी देख रह्या ॥
यक्ष और गन्धर्व और ये असुर सिद्ध सब देख रह्या ।
झुंडां का ये झुण्ड आपनै अचरज में सब देख रह्या ॥

**रुपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं,**
**महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।**
**बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं,**
**दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥२३॥**

महाबाह ! ये बोला मूंडा और नेत्र भी बोला छै ।
बोली सारी भुजा जांघ भी और चरण भी बोला छै ॥



बोला सारा पेट भोतसी डाडां सूं विकराल बडो ।
सांग देख कर दुनियां व्याकुल म्हारो भी बेहाल बड़ो ॥२३

**नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं,**
**व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।**
**दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा,**
**धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥२४॥**

आभर कै थे अड्या हुया छो भोत रंगां का चमक रह्या ।
मूंडो थांको फाट रह्यो छै बड़ा नेत्र भी दमक रह्या ॥
अस्यो रुप में देख देख कर अन्तस में घबराय रह्यो ।
धीरज और सान्ति हे भगवन् ! नहीं जरा भी पाय रह्यो ॥२४

**दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि,**
**दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।**
**दिशो न जाने न लभे च शर्म,**
**प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥२५॥**

डाडां सूं ये घणा भयङ्कर थांका मूंडा दीखै छै ।
जगपरला की आग जस्या ये वैही मूंडा दीखै छै ॥
हे देवेस ! दिसा मैं भूल्यौ नहीं सान्ति मैं पाऊं छूं ।
जगदाधार ! खुसी हो जाओ याही आज सुणाऊँ छूँ ॥२५

**अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः,**
**सर्वे सहैवावनिपालसंघैः ।**

भीष्मो द्रोणाः सूतपुत्रस्तथासौ,
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥२६॥

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति,
दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु,
संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥२७॥

धृतरास्टर का बेटा देखो भगवन् सारा भाग रह्या ।
राजावां का झुंड भोतसा यां कै सागै भाग रह्या ॥
भीष्म द्रोण अर करण जस्याभी देखो भगवन् भागरह्या ।
म्हांकी ओड़ी का भी मुखिया मुखिया जोधा भाग रह्या ॥
जोधा बेगा भाग भाग कर थांकी ओड़ी आय रह्या ।
डाडां सूं विकराल भयङ्कर मूंडा मांही जाय रह्या ॥
दीखै छै ये केई केई पैली छा ज्यो भाग रह्या ।
चुरकट यांकी हुई खोपर्यां दांतां बिच ये लागरह्या ॥२७॥

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः,
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा,
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥२८॥

जियां नद्यां का बैता पाणी समदर सामा धावै छै ।
बियां धधकता थांका मूंडां में जग-जोधा जावै छै ॥२८॥





यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा,
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोका,
स्तवापिवक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥२९॥

जियां पतङ्गा मरबावेई बलती आग समावै छै ।
बियां लोग भी भाग आपका मूंडां में पड़ जावै छै ॥२९॥

लेलिह्यसे ग्रसमानःसमन्ता,
ल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं,
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥३०॥

सब नै निगल धधकता मूंडा सूं अब जीभ चलाओ छो ।
सारो जगत तेज सूं पूर्यो जोती तेज तपाओ छो ॥ ३०॥

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो,
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यां,
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

जाणयो चाऊँ आद रुप नै करणी थांकी बिना पता
नमो ! देव ! राजी हो अब थे उग्र रुप कुण देओ बता ॥३१॥

---

## टणका मिजमान

(जीवनकुटी का सेवक जैपर राज का दौरा में गाँव २ में आपका आबाकी बधाई गावै छै)

मनवार करो तो थांकै बारणै मिंजमान खड़ा म्हे
जिवनकुटी का भेज्योड़ा म्हे, आया थांकै द्वार ।
दीन दुख्यां की सेवा की म्हे, करता फिरां पुकारजी ॥ १ ॥
म्हां की खातिर कुछ नहीं चावां, करां भला को कार ।
अरज एकही थांसूं करणी, जरा करो उपकारजी ॥ २ ॥
पेट आपको सभी भरै छै, काग कूकरा सूर ।
मिनखां चारो गिणती आवे, भली करयां भरपूरजी ॥ ३ ॥
आपां अपणो स्वारथ साधां, जद ही डूब्यो देस ।
परमारथ कै कारणैस म्हे, अस्यो बणायो भेसजी ॥ ४ ॥
कैबा का ही म्हे गरजी छां, और चलै नहिं जोर ।
एक लगन या म्हां कै लागी, साँझ सुणो चाहे भोरजी ॥ ५ ॥

## चेतसी भारत की नारी ।

चेतसी भारत की नारी रै चेतसी जैपर की नारी ।
नार सुपातर होय साधना साधै वा सारी ॥
घर की मैमां नारसैंसजी घर की मालिक नार सखी म्हारी॥
नारी चित में धार लेस तो होवै बार सुधार ॥ १ ॥



सारी रीत कुरीत कैसजी नारी किला समान-सखी म्हारी॥
राखै रीत कुरीती त्यागै हुयाँ नार गुणवान ॥ २ ॥
कन्याँवाँ में होय साँच तो विद्या को परचार-सखी म्हारी॥
घर दुनियाँ को ज्ञान नहीं हो वा शिक्षा बेकार ॥ ३ ॥
शिक्षा पूरी नहीं हो सकै रैताँ बाल विवाह-सखी म्हारी॥
विद्या सूं भी घणो जरूरी रुकणो बाल विवाह ॥ ४ ॥
पड़दो घूंघट बण्यो रह्यांसजी विद्या बादू जाय-सखी म्हारी ।
जे विद्या हो कामकीसतो पड़दो घूंघट जाय ॥ ५ ॥
विद्या कोर विरोध करैज्यो वाँनै मूरख जाण-सखी म्हारी॥
विद्या सूं तो होय फायदो होय नहीं नुकसाण ॥ ६ ॥
सदाचार छै नर की शोभा नारी को सिणगार-सखी म्हारी ।
सदाचार बिन नर नारी की विद्या नै धरकार ॥ ७ ॥
सामगरी निज भोग कीज्यो नारी मैं ली मान-सखी म्हारी॥
इक तरफा वै सदाचार की बात करै हैवान ॥ ८ ॥
झूठो घूंघट सदाचार की करै नहीं प्रतपाल-सखी म्हारी॥
भोग-रोग सूँ बची हवाज्यो वा सत की रखवाल ॥ ९ ॥
टणका मणका दूरा फींकै सादा बस्तर धार-सखी म्हारी॥
विद्या और शील का बलसैं निरभै विचरै नार ॥१०॥
देस भलाई करै साँचली नर सूँ ज्यादा नार-सखी म्हारी॥
भारत अर जैपर को जदही होवै लो उद्धार ॥११॥

[ १० ]

## आंख्यां देखी बात ।

( गांव सुधार करबो चाबाला सेवक की मुसकलां को ब्यौरो )

सुणज्यो म्हांकी बीती बात खरी म्हे आज सुणावांला ।
अपणा घर को फिकर करै चाहे दुनियां जाओ डूब ।
स्याणा सूंठ मगद का लाडू बात बणावै खूब ॥ १ ॥
रीत रिवाज मोकला बदगा लागत लागै भोत ।
सब कामां मैं रुप्यो चायजे जलम होय चाहे मोत ॥ २ ॥
रीत पुराणी बीती कोनै चली नवादू ल्हैर ।
चाकी का दो पाटां बिच में पिस रिया नाहीं खैर ॥ ३ ॥
सांचल्लो तो घरम ऊठगो कूटै झूंठी लीक ।
ऊपरला पलमा की परवा नहीं मांयली पीक ॥ ४ ॥
मान मांयलो खतम होगयो रैगी थोथी स्यान ।
थोथी स्यान राखबा खातिर रोज खिंचावै कान ॥ ५ ॥
दूरन्देशी भूल गया सब बोदो स्वारथ याद ।
बिगड़ी सारी हवा सुणै कुण सेवा की फरियाद ॥ ६ ॥
सब का मोटा पेट होगया सेवा करणो कोत ।
सो मैं एक निठांसी निमटे--ऊंकी मुसकिल भोत ॥ ७ ॥
सेवकजी जद गाडा होकर मन में बांधै जोर ।
फेरां की परणचोड़ी वांकी करले घर में घोर ॥ ८ ॥

[ ११ ]

क्यों राजी सूं क्यों धमक्यां सूं तिरिया हो चुपचाप
सारा घर का फेर करैला सेवक कै संताप ॥ ९
घर का भी जद हार मान कर छोड़ै ऊंकी गैल
सारा अंगतू जोर बांध कर फेर करैला फैल ॥१
सब सूं न्यारो होय आपकै नागांई ले धार ।
सांचो सेवक सबनै जीतै याद राख करतार ॥११
सची सेवा करणो धार्यो बस्या गांव कै मांय ।
सैर छूटगो साथ छूटगो उलझ्या झाड़ां मांय ॥१२
लू भुगती अर सह्यो तावडो भुगती मे की धार ।
कादो कीच मोकलो भुगत्यो सर्दी की फटकार ॥१
सेवक नै तो कडा नेम भी होय पालणा जोग ।
कडा नेम सांच्यां ही पाल्यां छूटै बोला भोग ॥१४
गांवां की छै बडी दुरदसा नहीं कलपना होय
चावै जितरा भोग छोड द्यो नहीं बराबर होय ॥१५
ज्यांकी सेवा करणी होवै रैणो वांकै बीच ।
वांकै बीच रयां पर देखो ऊंचो रैणो नीच ॥१
मांग्या पीसा कमती आवै वांमें काम चलाय ।
ऊंचो रैणो चाव जदभी कनै नहीं उपाय ॥
सब सूं मुसकिल म्हांनै दीख्यो करणो सांचो त्याग
ऊंखल मैं माथो जद लागै लागै कोनै थाग ॥१८

चंदा का पीसा म्हे ल्यावां जाणै म्हांको जीव ।
थोडा दे दे घणा खरां को देतां निकलै जाव ॥१९॥
निंदरा करबो म्हे नहिं चावां वो नहिं म्हाको काम ।
सांची बात जरासी कैदा जींको साखी राम ॥२०॥
सांची सेवा जींनै करणी राखो जीव मसोस ।
भूखा नागा रैस्यो जदभी करस्यो कुण पर रोस ॥२१॥
सेवा करबा बोल्या आया आया बांव चढार ।
थोडी सी जद तांती बीती भाग्या पूंछ दबार ॥२२॥
भगत गुमायो पीसा खोया कर्‌या कयां नै त्यार ।
म्हे समझी छी पार करैला पूच्यां पैली पार ॥२३॥
ज्यां लोगां में आर बस्या म्हे निकल्या म्हांका बाप ।
सूंली नै ये ऊंली समझी मगज चाटगा धाप ॥२४॥
लम्बो चौडी राम कहाणी भोत बडो संबाद ।
कैबा की नहिं सुणबा की या सुणै कूण फरियाद ॥२५॥
बामण बाण्या धरम लोपगा भोत बदायो पाप ।
समझै सारा धरम पापनै हुयो धरम को पाप ॥२६॥
टुच्या पुच्या और भोतसा वैभी वांकी साथ ।
सारा मिलकर काम बिगाडै करदे दिन की रात ॥२७॥
कोई २ भला आदमी बैम करै दिन रात ।
ऊपर मीठा भीतर समझै घोल रह्या छै घात ॥२८॥



जिनगानी का पांच बरस म्हे ऊंडा दीन्या गाल ।
आठ पहर बत्तीस घड़ी ही म्हां पर झूम्यो काल ॥२९॥
बोल्या सारा जाणै कोनै म्हांनै पूछै स्याब ।
पांच बरस में रुप्या हजारां कांमै दीन्या दाब ॥३०॥
वां सबसां ने अरज एक छै काम देखल्यो छेड ।
मैना दो मैना तो झेलो म्हांकाली मुठभेड ॥३१॥
जीं बस्ती में टुकडा खातर बोल्या लागै लैर ।
ऊं बस्ती को कलाकन्द भी म्हांनै लाग्यो झर ॥३२॥
सब कामां सूं घणो जरूरी लाग्यो म्हांनै कार ।
गाडी छाती करकै छेड्यो वोही म्हे उपकार ॥३३॥
पांच बरस तक लियो झटल्लो ऊबा ऊंही ठोड ।
धारी जतरी पूरी करस्यां प्राणां की या होड ॥३४॥
और काम भी घणा कर्‌या पण वांकी कोनै बात ।
राजी होकर जरा देखल्यो दस पन्दरा की पांत ॥३५॥
बालू का टीबा में म्हे तो बिडलो रोप्यो आर ।
लोही सूं सींच्यां ही राखै हर्‌यो भर्‌यो करतार ॥३६॥
म्हांनैं सूझी साही छेडी ऊंकी लाग्या गैल ।
दूजी बात बताओ ल्याओ वाभी देखां सैल ॥३७॥
जींनै उपजै ज्योही सल्ला म्हांनै देओ आर ।
म्हांकै गलै उतरसी जद तो करां सीस पै धार ॥३८॥

कच्चो चिट्ठो पेस कर्‌यो छै ईं पर करो विचार ।
म्हां की नांई हिरदो खोलो फेरि करो निरधार ॥३९॥
राजी राजी जका झेल ले खांडा की या धार ।
म्हां को दिल तौ या चावै छै जलमैं लाख हजार ॥४०॥

मनोरंजन प्रेस, गोपालजी का रास्ता, जयपुर ।



## मिलवा का ठिकाणाः—

१—मनोरंजन प्रेस, जोहरीबाजार, जयपुर ।

२—राजस्थान पुस्तक-मंदिर,
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर ।

३—( व पत्रव्योहार को पतो )—
जीवनकुटीर कार्य्यालय,
खेजड़े का रास्ता,
चांदपोलबाजार, जयपुर ।

# जैपर की बोली में गीताजी

पैली बानगी में गीताजी का तरजमा को नमूनो दियो छो। म्हारै कन्नै हाल तक घणां लोगां की राय तो कोनै आई–पण जतरी सी राय आई छै ऊंपर सूं म्हारो यो अन्दाज हुयो छै क जैपर की बोली में अथवा राजपूताना की बोली में गीताजी को तरजमो कर देबो ठीक रैलो। एक भाई तरजमां का छदां नै ठीक कोनै बतायो। कोई भाई मनै दूसरा छन्दां का नमूना बतावै तो मैं वांका बताया हुया छन्दां में सूं कोई सो छन्द पसन्द करल्यूँ और ऊँ में तरजमो करबा की कोसिस करुं। गीताजी को तरजमो छपाबा को बिचार छै इं वास्तै मैं लोगां की राय सूँ काम करबो चाऊँ छूँ। इं चौथी बानगी में एक नमूनो और दियो छै–तरजमा का चोखा बुरा पण का बारा में तथा छन्द का बारा में भी आप लोगां की राय मालुम होणी चायजे॥

हीरालाल शास्त्री

# बारला गाँवा का ग़रीबां को भलो कियां हो।

गरीब की भलाई करबा नै सब कोई चोखो काम बतावै छै। सब सूँ घणा गरीब कुण छै ? म्हारा खयाल सूँ तो सबसूँ घणा गरीब बारला गाँव में रैबाला लोग ही छै। वै बिचापड़ा रात दिन मैनत को काम करै छै; जद भी वांका पेट नै अन्न और तन नै लत्तो कोनै मिलै । ई को कारण योही छै क वै लोग आपको मैनत के माफ़िक पैदावार कोनै कर सके और जितनी पैदावार वांके हो जाय छै वाभी वांकनै ठैरै कोनै। म्हे जो हालत गांव हालां की देखी छै वा कबा सुणबा में कोनै आवै—जीं सूँ म्हांनै तो बारबार याही सूझै छै क कोई दाय कर गाँव हालां कों भलो कखो जावै। गांव हालां को भलो राजनै ई वास्तै करणो चायजे क वै लोग राज का कुमाऊ पूत छै—वांकी कुमाई सूँ राज को भोत सारो काम चालै छै। बारला गाँवां में राज को साँचो आधार छै बारलागाँवा को हाल बिगड़जासी तो राज को हाल भी चोखो कोनै रैसकसी। यो ऊंडो हेरो हेर लियो जद ही अंग्रजी इलाका में कई जगां गांवां का सुधार को काम राज की तरफसूँ छेड्यो गयो छे। पञ्जाब में तो गाँव का सुधार कै वास्तै एक हाकिम ही मुकर्रर कर दियो गयो छे। आपणो जैपर महाराज नै आपकी पिरजा जीवसूँ भी प्यारी लागणी चायजे–एकबार राज की निगै ई काम की तरफ़ होजाय जद फेर तो यो सारो काम ठीक हो जाय। राज कै सिवाय स्हैर और कस्बां का रैबालां नै बारलागांव की भलाई में क्यों लागणो चायजे ? ई वास्तै लागणो चायजे क ग़रीब की भलाई सूँ ही परमारथ सिद्ध होवै छै– दुसरकां या बात भी छै क गांव कै पाछै स्हैर को काम चालै छै—नाज, कुपास, घी,

लकड़ी सब क्यूँ चीज स्हैर हालां नै गांव सूँ ही मिलै छै। कोई स्हैरी भाई या न समझै क म्हे तो पीसा देर चीज ल्यां छां, ईं में गांवहालां को कांई ईसान छै ? सारा काम पीसा सूँ ही होवै छै—पण कोई पीसा लेर करबालो भी न हो जद ? पीसा लेर काम करबाला थक्या मांदा हो जाय और पीसा मिलतां सांतर भी बांकी काम करबा की ताक़त न रैवै जद ?

म्हे जीवनकुटी हाला थोड़ो भोत काम सरु कर्यो छै-म्हांकी एकलां की तो आकाय कोनैक इतना बड़ा काम नै पार पटकयां—म्हाँसूँ बणसी सो बन्दगी बजाता रैस्याँ—पण राज और स्हैर का लोगाँ पर गाँवको ज्यो करज्यो छै ऊँको म्हांसूँ तो ब्याज भी कोनै चूकै। राज का करबा को काम राज नै करणो चायजे—जियाँ और जगां राज की तरफ़ सूँ कोसिस होरी छै—बियाँ ही जैपर में भी हो सकै छै। और जैपर स्हैर का रैबालां नै भी गाँव का सुधार कै वास्तै एक कमेटी बणाणी चायजे—ईं पवित्तर काम में आपां सबलोग राजकी कियांवाणी मदद करां सो सारो विचार या कमेटी करले। जीवनकुटी को काम चलाबा कै साथ२ म्हारो यो विचार भी छै क मैं जैपर राज नै और जैपर राज की पढ़ी लिखी और धनवान् स्हैरी पिरजा नै एकबार नहीं अनेक बार अरज करूँ क जियां म्हे म्हांकी पांती को बोझो उठा राख्यो छै बियां आप भी आपकी पांती को बोझो उठाओ। म्हांकी ईं अरज की सुनाई हो जासी जद तो बारलागांवां का ग़रीबां की भलाई को क्यों डोल बैठसा—

हीरालाल शास्त्री।

बरस पैलो बानगी पांचवां

# जीवनकुटीर का गीत

## ग्यारा भक्त

[ गीताजी का १२ वां अध्याय को अनुवाद ]

### अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१॥

ग्यारा भक्तां की पैचाण सुणो नाराण सुणावै छै—

### अर्जन बोल्यो

सदायुक्त हो इयां आपकी पूजा भक्त कराय ।
अविनासी अर निराकार को, अथवा ध्यान लगाय ।
दोन्यां में सूँ उत्तम योगी, कहो कान ! समझाय ॥१॥

### श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥२॥

बड़ी भक्ति सूँ म्हारै में मन, योगी नित्त लगाय ।
भजले म्हारा सगुणरूप नै, उत्तम वोहि कहाय ॥२॥

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहितेरताः ॥४॥

नस्टै दीखै प्रगटै नाहीं, व्यापक और अचिन्त ।
थिर निसचल अर बसैमूल में, ऐस्यो ब्रह्म भजन्त ॥
सारी इन्द्रयां बसमें राखै, सगलै बुद्धि समान ।
सबका हितनै साधै वै भी, पावै मनै सुजान ॥३-४॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्त चेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥५॥

निराकार में चित्त लगावै, वांनै मुसकल होय ।
देधारयां की निराकार में, पूंच सैज नहिं होय ॥५॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयिसंन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासेत ॥६॥
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥७॥

पण जो दूजा म्हारै अरपण, करकै सारा काम ।
म्हारा होकर एक लगन सूँ, भजै चित्तनै थाम ॥६॥
म्हारै में जो चित्त लगावै, वांनै देऊँ त्यार ।
मौत रूप संसार समंदर सूँ बिन लाग्यां बार ॥७॥





मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥८॥

म्हारै मांही मन अरु बुद्धी, दोन्यूं देय लगाय ।
ईसै म्हारै मांही बासो, मिलसी संसै नांय ॥८॥

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥९॥

म्हारै में ज्यो चित नै थिरकर, नांही सकै लगाय ।
लगती कोसिस सूं मिलबाकी, अर्जन आस रखाय ॥९॥

अभ्यासेऽप्य समर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥

कोसिस भी ज्यो नहीं कर सकै, अरपण करदे कर्म ।
सिद्धि मिलैली करबासूंभी, म्हारी खातिर कर्म ॥१०॥

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुंमद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरू यतात्मवान् ॥११॥

याभी ज्यो तू नहीं कर सकै, जोग-आसरो लेर ।
आपो बसकर सब कामां का, त्याग फलां नै फेर ॥११॥

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥१२॥

अभ्यास करम सैं ज्ञान बड़ो छै, ज्ञान सैं ऊंचो ध्यान ।
फल को त्याग ध्यान सैं ऊंचो, पावै सान्ति निदान ॥१२॥

अद्वेष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ निश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥

बैर नहीं हो सबसैं दोस्ती, दयावान गमखाय ।
ममता ओ ऐंकार नहीं हो, दुख सुख एक गिणाय॥१३॥
सदा सबूरी राखै योगी, आपो बस में होय ।
मन बुद्धी म्हारा में राखै, पण को पक्को होय ॥
अस्या गुणां को बोही म्हारो, भक्त दुलारो होय ॥१४॥

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्ष भयो द्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥

दुनिया जीसैं उचटै नांही, खुद भी उचटै नांय ।
खुशी कुढन डर दुःख छोड़दे, प्यारो भक्त कहाय ॥१५॥

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रिय ॥१६॥

इच्छा छोडै साफ चतुर हो, उदासीन अविकार ।
ज्यो सारा सङ्कल्प छोड़दे, करूं भक्त नै प्यार ॥१६॥

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभ परित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥१७॥





हरस बैर सब छोड़ चुकै ज्यो, तजै सोच अर आस ।
आछ्या बुरा फलां नै त्यागै, भक्त दुलारो खास ॥१७॥

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥१९॥

जींकै दुसमण दोस्त बराबर, मान और अपमान ।
मोह छोड़दे सर्दी गर्मी, सुख दुख लखै समान ॥
सोभा जसी कुसोभा मानै, राखै मौन सबूर ।
घर की ममता त्यागै थिरमति, प्यार करूं भरपूर॥१८-१९॥

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तपर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥२०॥

श्रद्धा रखकर म्हारा होकर, केवा मूजिब बार ।
धरम रूप यो इमरत सेवे, वांसू घणो दुलार ॥२०॥

[ ८ ]

# नारी जायो रै

## ( पालती नै चेतावणी )

नारी जायो रै तू थारी माको दूध लजायो रे ! नारी जायो रे !

समझै छो तू बात सारी तो भी चरको खायो रै ।
बीती सो तो, बीती सो तो छोड, तू तो रैती की नै राख,
अब तो रई पई नै राख, नारी जायो रै ॥१॥
पुरसारथ की बात छोड़ी, भाग नै ले आयो रै ।
आगे पूँछे आगे पूँछे भाग, थारा जीवनै यो भाग
तो जीव बचा कर भाग, नारी जायो रै ॥२॥
सारी दुनिया मौज करै छै, थारै कलजुग आयो रै ।
बुरीगार नै, बुरीगार नै जाण, तूतो ऊँ नै कलजुग जाण
वोही थारा ले छै प्राण, नारी जायो रै ॥३॥
अन्तकरण को घणो भरोसो, कोडै खोकर आयो रै ।
थारी इज्जत, थारी इज्जत राख, अब तू चावै जियां राख
तू तो आस पराई त्याग, नारी जायो रै ॥४॥
तू ही थारा भाई सगां नै बोलां सूं अगतायो रै ।
आपसरी की, आपसरी की होड़, तू तो बेगो सो अब छोड़



[ ९ ]

तू तो टणकाई नै छोड़, नारी जायो रै ॥५॥
निमलो थारो भाई बन्द छो, जीं नै घणो सतायो रै ।
भाई बन्द सूं, भाई बन्द सूँ मेल, तू तो सांचा मन सूं राख
तू तो सोच समझ कर राख, नारी जायो रै ॥६॥
मुरदापण की बाण थारी, जीव थारो खायो रै ।
थारा दोखी थारा दोखी जाय, ये तो हूँकारा सूं जाय
ये तो करत्यां दकालो जाय, नारी जायो रै ॥७॥
भूठा सा फूँकरडा आगै डर कर शीस झुकायो रै ।
टणकाई तू, टणकाई तू राख, थारा दोखी आगै राख
तू तो टणका आगै राख, नारी जायो रै ॥ ८ ॥
तू तो दोखी सोखी की पीछाण में भरमायो रै ।
दोखी कुण छै, सोखी कुण छै देख, तू तो आंख्यां खोलर देख
तू तो ऊंडो हेरो हेर—नारी जायो रै ॥ ९ ॥
एका का ही घाटा सूं तू सौ सौ बार ठिगायो रै ।
एको करले एको करले बार थारा सारा कारज होय
थारी मुसकल सूदी होय-नारी जायो रे ॥ १० ॥
तू करसी तो सो क्यों होसी बादू क्यों घबरायो रे ।
दिल को धड़को, दिलको धड़को काडथोड़ो माथो ऊंचो राख
तू तो टेक धरम की राख, नारी जायो रे ॥ ११ ॥

---

# स्वागत्

(बनथली में कखोड़ा पालत्यां का जलसा में कुटी की तरफ सूं कखोड़ो पालत्यां को स्वागत्

भलां पधार्‌या आज थे सारा पधार्‌या छो।
काम की कर ठाल थे सारा पधार्‌या छो ॥१॥
जीवन कुटी नै देखबा को मन्सूबो करबो कर्‌या।
घणां दिनां में आज थे सारा पधार्‌या छो ॥२॥
जीवनकुटी की आज पैली बात थे सारो सुणी।
सुणी जसी नै देखबा सारा पधार्‌या छो ॥३॥
जीवनकुटी में पालती का फायदा की बात छै।
आज आंख्यां देखबा सारा पधार्‌या छो ॥४॥
ख्याल तमासा गाजा बाजा कोरा मत थे जाणज्यो।
ऊंडो हेरो हेरबा सारा पधार्‌या छो ॥५॥
पालणां सब को करो छो पालती जद नांव छै।
अर्थ साँचो जाणबा सारा पधार्‌या छो ॥६॥
हारथोडा थां पालत्यां को भाग पर विस्वास छै।
भाग नें पिछाणबा सारा पधार्‌या छो ॥७॥
लोग कै छै पालती नै भरतजी को स्राप छै।
निरचू होबा स्राप नै सारा पधार्‌या छो ॥८॥



थांका दुख को जड़ा मूल सूँ म्हांनै सारो ग्यान छै।
मूल दुख को खोदबा सारा पधार्‌या छो ॥९॥
पालती अब हिमत हारी हिरदो भी जागै नहीं।
हिम्मत को रस चाखबा सारा पधार्‌या छो ॥१०॥
रोग थांको घणो खरो छै थांका हि बसको लखो।
भेद यो ही जाणबा सारा पधार्‌या छो ॥११॥
मणिया माला एक का थे बिखर्‌योड़ा रुलता फिरो।
माला पाछी गूँथबा सारा पधार्‌या छो ॥१२॥
मान बो न मानबो तो थांका चित की बात छै।
प्यारा म्हांका जीव सूं सारा पधार्‌या छो ॥१३॥

---

# बिदा

(बनथली में कखोड़ा पालत्यां का जलसा में पालत्यां की बिदा-पालत्यां नै कुटी का आदमी मीठो ओलमो देछै। पैली कुटीका सेवक बनथली में सूं रोजीना गाँवा में जाता-ई. जलसा पाछै गाँवां में रैबा बेई गाँव हालां की साथ ही चल्या गया छा)

एजी लैर लगाणा पावणा थे जबरा आया जी—
म्हांका घर नै छोड़ म्हे तो चाल्या आया जी।
थां जस्या ही झूंपड़ा म्हे आय बणाया जी ॥-१॥

बिना बुलाया थांकै घर म्हे जाता आया जी ।
थे भी खोदा खोद म्हांनै घणा सताया जी ॥- २॥
पैली पैली नांव म्हांका घणा लगाया जी ।
मन में आया ज्यो ही पैका धाप उड़ाया जी ॥--३॥
थांकै भी क्यों स्वाद छै थे यों भरमाया जी ।
थांका प्यारा भायला थांनै घणा डुलाया जो ॥४॥
थां सबलां का बोलां नै म्हे भलां जराया जी ।
मोत्यांला की किरपा म्हांनै जम्या रखाया जी ॥५॥
चंदा का म्हे रुपया ल्याकर रोटा खाया जी ।
आगता जद हुया मांगता बंद कराया जी । ६ ॥
बिना मांग्या भी कदे जदे तो रुपया आया जी ।
परमेसर की गोद में अब आसण पाया जी ॥ ७ ॥
मिलसी जतरै रोटी खास्यां रंग जमाया जी ।
भूखारैस्यां जद भी करस्यां मर्दा जाया जी ॥ ८ ॥
प्यारा आया पावणा म्हां कै मन में भाया जी ।
जिवनकुटी का सेवकां का चित्त लुभाया जी ॥ ९ ॥
थे तो म्हांनै लेजाबाला घणा बताया जी ।
जाबालां नै लेजाबाला राम बणाया जी ॥ १० ॥
गांठ गूदड़ा बांध थांकै पूंछै धाया जी ।
कांई गजब की भुरकी नाखी लैर लगाया जी ॥११॥

---



# ललकार

( दो च्यार उपदेस की बातां )

सुख सूं कपड़ो अर रोटो मिलै
मत नाक जद्यां भी चढाया करो ।
जद घाटो पड़े तदबीर करो
हकनाक मती घबराया करो ॥
नरमो कर आपसरो में रहो
करड़ावण आप भुलाया करो ।
जबरो बण जो अपमान करै
झट जोस जरा सो दिखाया करो ॥१॥
निमलो खुद सूं जद आय मिले
कुछ भाव दया को बताया करो ।
सबलो जद आकर वार करै डर
सीस कदे न झुकाया करो ॥
जद हिम्मत को कुछ काम पड़ै
मत जीव जरा भी लुखाया करो ।
घरको नुकसान बणे जद भी मन
गाँव भला में लगाया करो ॥२॥
कुछ काम शुरू कर आप उडो,

मजबूत रहो घबराओ नहीं ।
जा भीतर बाहर साफ रहो,
खतरा सूं कदे कदराओ नहीं ॥
सब मेल करो, सब साथ चलो,
सब एक रहो बिखराओ नहीं ।
ललकार जवाब करो मरदो,
सच बात कहो कलराओ नहीं ॥३॥
अब कालकलू सब बीतचुक्यो,
बस नांव कलू को लिया न करो ।
भगवान भजो बिसवास करो,
चित पाप कथा में दिया न करो ॥
अब छूट सजीवण बूंटो पिवो,
अर भैर कदे भी पिया न करो ।
सत को पण थे जकड़ो पकड़ो,
बिना सत्त घड़ी भी जिया न करो ॥४॥
तकदीर को ठीकरो फोड़ धरो,
अब भाग कै आग लगाद्यो जरा ।
सब झूठ लिलाड़ लिखंत करो,
पुरसारथ लेख लिखाद्यो जरा ॥





मुरदापण छोड़ कै मर्द बणो,
मरदी कर ख्याल दिखाद्यो जरा ।
दिल को धड़को अब दूर करो,
डर मैं डरपार भगाद्यो जरा ॥५॥

---

## कानजी सांवरियो

( जीवनकुटी की प्रार्थना )

कुटिया की लाज रखाओ जी,
म्हारा कानजी सांवरिया ।
काना वनस्थली में आओ २
गीता को कौल निभाओजी,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥ १ ॥
काना कड़ो बरत म्हे लीनो २
निमलां की मदद कराओजी,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥२॥
काना ज्योती दिव्य दिराओ २
म्हारो मारग थे दरसाओ जी,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥३॥

50

काना धन जन को द्यो सारो २
कुटिया को काम जमाओ जी,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥४॥
काना लोग भरम में डूब्या २
दुनिया की नाव तिराओ जी,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥५॥
काना काम करां यो थांको २
यो निजू काम सुधराओजी,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥६॥
काना विनती म्हे या करदी २
प्रभु बेगीसी चित ल्याओ जो,
म्हारा कानजी सांवरिया ॥७॥

---

बरस पैलो ]                                        [ बानगी छठवीं

# जीवनकुटीर का गीत

## माहवारी पोथी


प्रकाशक-

जीवन-कुटीर, बनस्थली

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का च्यार पीसा } अक्टूबर १९३४ { दाम एक बरस का ।।।) डाक मैसूल न्यारो

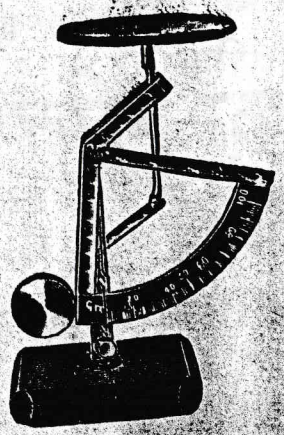

# स्टेशनरी

## दुब्बे ब्रादर्स

### त्रिपोलिया बाजार

### जयपुर ।

सस्ती और बढ़िया

सब प्रकार का उत्तम कागज व स्टेशनरी खरीदने का एक मात्र स्थान ।




## जड़ में कीड़ो

म्हांनै अतरा बरस बारला गांवां का गरीबांकै बीच में रैतां इंगा, जद म्हे या देखी छै क सारी दुनिया की जियां ये गरीब भी आपको फायदो करबो चावै छै, चाहे जियां सांच झूट सूं आपको मतलब बणा लेबो चावै छै—पण फरक यो छै क ये लोग आपका असली फायदा नुकसाण नै, आप का सांचल्ला सोखी-दोखी नै जरा सो भी कोनै पिछाणै ई हिसाब सूं ये आपही आपका दुसमण होरह्या छै। फेर य में ज्यो पंच पांच्या छै वै तो आपनै रामजी सूं थोड़ा भो ही नीचा भलां ही समझता हो। गरीब आदमी पुराण चाल नै छोड़र जरा भोत ही ऊंनै ऊंनै चल्यो जाय त फेर पंचायती में ऊंकी खैर कौनै-"न्योतो लावणो अर क बंद-अर बारै बरस तांई जात बारै"! ब्याव सगाई जा में ही करणा पड़ै छै सो 'जातगंगा' सूं दबणो ही पड़ै आपसरी की तीखा तीख, होड़ा होड़ तो आप आप जात में सबकै ही छै, ज्यो स्हैर में छै सोही गांव में मोज छै। हरेक गांव में दो चार पटैल भी छै-बांकी खुद हालत भलां ही कसी भी हो, पण दूसरा गरी

तांई तो पटैल एक दूसरो राज ही बण ज

छै । इजारा का गांवां में चाहे जियां बांध कर देणी, गांवका मलबा नै खुद चाखणो अर आपका भायलां नै चखाणो, ज्यो घणा गरीब हो वां पर क्यों न क्यों बोझ और लाद देणो —बस पटैलां का ये काम छै। पटैलां का बड़ा बेवारी परगना का राज मुलाजिम —यां का बारा में तो कही जाय सो ही थोड़ी । ये लोग स्हेर में बड़ा हाकिमां कै सामनै जस्या गरीब बण जाय छै — बस्या ही आपका पट्टा का गांवां में आयां पाछै कोनै रै। फेर बोरां को लंबर आवै छै — बोरा समझै और चावै तो गरीब की भोत मदत कर सकै छै और आपकी रोटी भी कमा सकै छै — पण आजकाल तो वै आपका ही पेट नै भरबो चावै छै, जद फेर गरीब धुरिया भी बांनै सूका पाका राखबा की विद्या सीखबो सरू कर दियो दीखै । आखरी लंबर में गांव का पंडा पुजारी आवै छै । ये लोग वियां तो मांगर खाय छै, हाथ को दियो ले जाय छै पण जियां और बातां को इजारो पंचां कनै या पटैलां कनै छै वियां ही सारा धरम करम को इजारो यां 'गरु म्हाराज' कनै छै ।

गरीब आपको आप दुसमण अर फेर ऊंकै ये पांच तरै का भायला । म्हे या देखी छ क असली राज का बारा में लोगां का बुरा विचार कोनै—पण राज को सरुप





गरीबां नै तो राज का छोटा—मोटा मुलाजिमां में ही दीख सकै छै—जद वै बिचारा कैबा लाग जाय छ–" आपणा राज में तो सुणाई कोनै, कोई न्याव कोनै करै " । म्हांनै जीवनकुटी हाला नै रुप्या पीसा की अर म्हां की खुद की मुसकलां को सामनो तो करणो पड़ै ही छै--पण राज की मीं पिंरजा की म्हे भलाई करबो चावां छां, ज्यां गांवां नै म्हे हरया भरया देखबो चावां छां, वांकी जड़ में तो कीड़ो लाग रह्यो छै । जी सूं म्हे बारंबार राज को ध्यान ई तरफ खींचबो चावां छां--नांतर तो "डोकरियां किण काम राजकथा सूं राजिया" । म्हे चुप चाप बंदगी बजावाला आदमी छा और अब भी वैही छां--पण यो गीतां को सिलसिलो चाल पड्यो तो म्हे कदे कदे म्हां का दिल को यो एक और गीत भी गाय्यां छां । गीत बांचबाला गीतां की तान में ई गीत नै कमती सुणैला तो वांको राम सुणैलो ।

हीरालाल शास्त्री

---

बरस पैलो बानगी छठी

# जीवनकुटीर का गीत

श्री गीताजी का ११ वां अध्याय का ३२-५० श्लोकांको तरजमो

## श्री भगवान बोल्या—

**कालोऽस्मि लोकक्षय कृत्प्रवृद्धो**
**लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।**
**ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे**
**येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥३२॥**

लोकां को मैं नास करैयो बढ़्यो हुयो छूं काल बली ।
लोक समेटण की अब चित में धारी छै मैं काल बली ॥
दुसमण की ज्यो फौजां में ये जोधा दीखै अड़्या हुया ।
थे न लडस्यो जद भी अर्जुन ! जाणो यांनै मर्‍या हुया ॥३२॥

**तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व**
**जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् ।**
**मयैवैते निहताः पूर्व मेव**
**निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥३३॥**



ईस थे ऊबा हो जाओ यो जस लूटो पड़्यो हुयो ।
दुसमण जीतर राज भोगल्यो धनजन सूं यो भर्‍यो हुयो ॥
पैली यूं ही मार चुक्यो मैं थांका दुसमण ध्यान धरो ।
सव्यसाचि ! अब निमित्त बणो थे याही बाकी ध्यान धरो ३३॥

**द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च**
**कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् ।**
**मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्टा**
**युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥३४॥**

द्रोण भीष्म अर करण जयद्रथ जोधा मार्‍या निगै करो ।
मारो, मत डरपो थे रण मे, जूझो दुसमण फते करो ॥३४॥

## संजय बोल्या—

**एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य**
**कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी ।**
**नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं**
**सगद्गदं भीत भीतः प्रणम्य ॥३५॥**

कानां की या बात सुणी जद अर्जुन डरसूं कांप गया ।
हाथ जोड़कर नमस्कार कर ऐस्या गद्‌गद् वचन कया ॥३५॥

## अर्जुन बोल्या

**स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या**
**जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।**

[ ६ ]

**रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति**
**सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥३६॥**

अन्तरजामी बात ठीक छै मैमा यो संसार करै ।
थांकी मैमां सूँ यो साँचो हरस करै अर प्यार करै ॥
राक्षस भी ये डऱ्या हुया छै च्यार्यूं कानी धाप रह्या ।
सिद्धसङ्घ ये सारा मिलकर थांनै सीस नवाय रह्या ॥३६॥

**कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्**
**गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।**
**अनन्त देवेश जगन्निवास**
**त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥३७॥**

नमस्कार म्हाराज ! आपनै करै नहीं क्यों सभी जणां ।
ब्रह्मा का भी रचबाला छो और आपछो बड़ा घणां ॥
हे देवेस ! निवास जगत का ! आप अनन्त ! विराज रह्या ।
सत् कै और असत कै आगै अक्षर आप विराज रह्या ॥३७॥

**त्वमादि देवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य**
**विश्वस्य परं निधानम् ।**
**वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम**
**त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥३८॥**

आदिदेव छो आप प्रभूजी ! पुरुष पुरातन आप बड़ा ।
सगराई ब्रह्माण्ड विस्व का आप आसरा घणा बड़ा ।।

[ ७ ]

जाणनहारा और जाणबा जोग आप छो धाम बड़ा ।
आप जगत में व्याप रह्या छो अनंत रूप छो घणा बड़ा ॥३८॥

**वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः सशाङ्कः**
**प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।**
**नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः**
**पुनश्चभूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३९॥**

आप वायु छो यम छो अग्नी और वरुण छो चाँद प्रभो ।
आप प्रजापत ब्रह्मा भी छो ब्रह्मा का भी पिता प्रभो ॥
नमस्कार छै नमस्कार छै आज हजारों बार प्रभो ।
फेर आपनै नमस्कार छै फेर नमस्ते आज प्रभो ॥३९॥

**नमः पुस्तादथ पृष्ठतस्ते**
**नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।**
**अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वम्**
**सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥४०॥**

आगै पाछै सारैठैं ही नमस्कार छै सर्वात्मा ।
अपर बली छो सगलै व्याप्या जी सूं ही छो सर्वात्मा ॥४०॥

**सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तम्**
**हे कृष्ण हे यादव हे सखेति**
**अजानता महिमानं तवेदम**
**मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥**

[ ८ ]

यादव ! कृष्ण ! सखा ! ज्यो हठकर मित्र मानकर बात कही ।
मेमा नै पैचाण्यां बिन ज्यो भूल प्रेम सूँ बात कही ॥४१॥

**यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि**
**विहारशय्यासनभोजनेषु ।**
**एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं**
**तत्क्षामयेत्वामहमप्रमेयम् ॥४२॥**

हँसी दिल्लगी में भी ज्यो कुछ और कदे अपमान कर्‌यो ।
बैठ्यां सूतां और बिचरतां खातां ज्यो अपमान कर्‌यो ॥
और एक तो अथवा अच्युत ! मित्रां में अपमान कर्‌यो ।
अप्रमेय ! मैं सारी माफी चाहूँ ज्यो अपमान कर्‌यो ॥४२॥

**पितासि लोकस्य चराचरस्य**
**त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।**
**न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोन्यो**
**लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥**

चलबावाला न चलबाला आप जगत का पिता प्रभो ।
और बड़ा सूं बड़ा गुरु छो और पूज्य छो आप प्रभो ॥
सब सूं बदकर असर आपको तीनूं लोकां मांय प्रभो ।
नहीं बराबर को भी कोई बदकर होवै कियां प्रभो ॥४३॥

[ ९ ]

**तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं**
**प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।**
**पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः**
**प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥४४॥**

अस्या बड़ा छो जद्यां आपका चरणां में मैं पड्‌यो हुयो ।
राजी होओ आप पूज्य छो परमेसर मैं पड्‌यो हुयो ॥
पिता पुत्र नै मित्र मित्र ने माफ करै ज्यों माफ करो ।
प्यारा आप आपको प्यारो देव ! मनै भी माफ करो ॥४४॥

**अदृष्टपूर्वम् हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा**
**भयेन च प्रव्यथितम् मनो मे ।**
**तदेव मे दर्शय देव रूपम्**
**प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥**

पैली को देख्योड़ो कोनै देख अनोखो रूप प्रभो ।
राजी भी में होय रह्यो छूँ डर सूं व्याकुल चित्त प्रभो ॥
हे देवेस ! निवास जगत का ! आप खुसी हो जाओ जी ।
बो को वोही रुप आपको फेर मने दिखलाओजी ॥ ४५ ॥

**किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त-**
**मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव ।**
**तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन**
**सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥४६॥**

सीस मुकुट हो गदा हाथ में चक्र हाथ में लेल्यो जी ।
करबो चाऊं नाथ ! आपका दरसण वै ही देद्यो जी ॥
जगत रूप छो सहसबाहु छो बिनती एक सुणाऊं छूं ।
ऊँका ऊँही रूप चतुरभुज का में दरसण चाऊं छूं ॥४६॥

## श्री भगवान बोल्या

**मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदम्**
**रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् ।**
**तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं**
**यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥**

अर्जन ! थां पर राजी होकर आज अनोखो रूप महा ।
म्हारा आत्माबल सूं थांनै आज दिखायो रूप महा ॥
आद रूप छै बेहद म्हारो तेजस्वी यो रूप महा ।
नांहीं पैली कोई को भी देख्योड़ो यो रूप महा ॥४७॥

**न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न—**
**च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ।**
**एवंरूपः शक्य अहं नृलोके**
**द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥**

वेद पढो चाहे जिग्ग करो चाहे दान मोकला कर्‍या करो ।
और क्रिया चाहे करो मोकली उगर तपस्या कर्‍या करो ॥





अस्यो रूप ईं मिरत लोक में कोई नाहीं देख सकै ।
आज अकेला थे ही देख्यो दूजो नांही देख सकै ॥४८॥

**मा ते व्यथा मा च विमूढभावो**
**दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।**
**व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वम्**
**तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥**

घोर रूप यो मूढ भाव सूं व्याकुल हो थे मत देखो ।
म्हारो योही रुप खुसी हो बेधड़कै फेरयूं देखो ॥४९॥

## संजय बोल्या

**इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा**
**स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।**
**आश्वासयामास च भीतमेनम्**
**भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥**

अर्जन नै ये वचन कह्या अर खुदको रुप दिखा दीनो ।
रूप सोवणो धार म्हातमा उर में धीरज दे दीनो ॥५०॥

---

# अंगरेज़ी का पढ्या लिख्या

( दो च्यार सांची बातां—मजाक की शकल में )

अंगरेज़ी का पढ्या लिख्या की हालत आज बताऊँ छे ।
भूल चूक हो जावै जींकी माफी पैली चावूँ छै ॥१॥
पढ़बो लिखबो जाय अवस्था सारी विद्या ये भूलै ।
अंगरेजी को पढ़बो लिखबो कोईसानै आवै छै ॥२॥
एक रुप्या को ठारानां भर घिरत बिकै छै बाजारां ।
पांचानां को पूछो जद भी कागद पेन्सिल चावै छै ॥३॥
बाल बाल की खाल निकालै मार दलीलां देवै छै ।
सूदी सादी मामूली भी बातां नै उलझावै छै ॥४॥
अंगरेजी पढ़बा सूं देखो अकल अजीरण हो जावै ।
खुद की अकल मोकली दीखै और दाय नहीं आवै छै ॥५॥
अंगरेज पढ़बा सूं देखो ठालापण को गुण आवै ।
हाथ लगा कर काम कर्‌यां तो विद्या निसफल जावै छै॥६।
एक रुप्या का गऊं धडी भर मोल खरीदर ये ल्यावै ।
टको पीसो पलदारां की झट पट भेट चढ़ावै छै ॥७॥
कोई कोई बाबूजी तो साग ल्यावता सरमावै ।
दूजाँ कन्नै साग मंगाकर वै नित मूंड़ मुंडावै छै ॥८॥
पैली पैलो मिली नौकर्‌यां अबतो ये दुतकार सुणै।
रोज खुशामद करता डोलै ये जूती चिटकावै छै ॥९॥



तंदरुसती बाबूजी की पढ़तां पढ़तां खतम हुई ।
बिना चाय का कपड़ा लादर कोरा हाड छिपावै छै ।।१०॥
न दीख्यो जद चसमो धार्‌यो क्रीम लगाई टिचन हुया ।
भरी जवानी लकडी पकड़ी ठेग ठेग कर जावै छै ॥११॥
नई सभ्यता की ये चोखी बातां नांही सीखै छै ।
ऊपरली सजधज ये सीखै ऐबां नै अपणावै छै ॥१२॥
घरका सूं भी पड़ै आंतरा रूढि बाद भी रैजावै ।
घरका नांही नहीं घाटका पढ्या हुया भरमावै छै ॥१३॥
घुप्या घुपाया टीप टाप ये बाबू बणकर डोलै छै ।
सीधा सादा रैवाला ये घरकां सूं सरमावै छै ॥१४॥
आप 'साब' की दुम बणजावै ट्याम ट्यूम ही बोलै छै ।
घर कै मांय लुगायां यांकी बेड़्यां ही खणकावै छै ॥१५॥
मिस्टर तो पार्टी में जावै कोट पैण्ट अर हैट लगा ।
मिसेज़ बिचारी गल्यां मांय या गाल्यां गाती जावै छै॥१६॥
बिना पढ्या तो भूखा रैकर जीमण माल लुगावै छै ।
पढ्या लिख्यां को सभी कुमाई आडम्बर में जावै छै ॥१७॥
बाबूजी की सारी तनखा पंदराड्या में उठ जावै ।
पढ्या हुया बिल बाबूजी का चित नै घणो दुखावै छै ॥१८॥
तनखा चावै जतरी पावो फरनीचर तो लियो मंगा ।
खन्दी किस्तां चुकती रैवै मोटरकार बिसावै छै ॥१९॥

आप आपणो सांग बदलकर नकली सांग सजावै छै ।
हिन्दुस्तानी नांव बुरो छै यांनै नहीं सुहावै छै ॥२०॥
"क्लीन शेव" की मैमा जबरी बूंटां की या लैण लगो ।
टीप टाप कर चरड़ मरड़ की न्यारी छटा दिखावै छै ॥२१॥
हमदरदी को एक बड़ो गुण सीख मांगकर पारपड़ै ।
बिना पढ्यां नै गिणै ज्यानवर बाबूजी पद पावै छै ॥२२॥
विद्या को फल विनय होय छै याही सुणता आवां छां ।
ई विद्या का डर कीमारी विनय भाग कर जावै छै ॥२३॥
पैली पैली या समझै छा पढ़बा सूं ईमान बधै ।
बिना पढ्या ज्यों पढ़बा हाला भी गैरा गटकावै छै ॥२४॥
या समझै छा पढ़बासूं तो देसभक्ति भी आजावै ।
पढ़बाहाला देस भलाई कोड्यां मोल बिकावै छै ॥२५॥
या समझै छा पढ़बा सूं तो लोग सुधारक होजावै ।
पढ़्या हुया ये रूढ़िवाद में सारी अकल खपावै छै ॥२६॥
या समझै छा पढ़बा सूंतो दिल की ताकत आजावै ।
पढ़्या लिख्या पण पोच पणो ये सबसूँ घणो दिखावै छै ॥२७॥
उपजी जतरी सारी बातां खरी खरी ये लिख दीनी ।
आंख्यां देखी बात बताइ संसै नहीं सतावै छै ॥१८॥
पढ्यां लिख्यां सूं नाथ ! देस नै पूरो लाभ नहीं पूँच्यो ।
अब तो पूरो मिलै फायदो या ही अरज सुणावै छै ॥२९॥



अंगरेजी वो आप पढ़्यो जद देखी सारी रचना छै ।
ई रचना को रचबा वालो फेरयूँ माफी चावै छै ॥३०॥
अंगरेजी ज्यो नहीं पढ्या छै वां में भी ये गुण देख्या ।
अंगरेजी का पढ़्या लिख्यां सूं जीसूं माफी चावै छै ॥३१॥
अंगरेजी का पढ़्या लिख्या भी केई चोखा वो देख्या ।
वां सगलां सूं हाथ जोड़कर दिलसूँ माफी चावै छै ॥३२॥

---

## बात बिचारो

( लुगायां को फ़रज )

हाँ सखो ! थे बात विचारो । अपणा घर को काम संवारो ।
पैली थे विद्या अपणावो । मार अविद्या दूर भगावो ॥
विद्या को परचार हुयां सब होय सुधारो जी--सखी थे ॥१॥
ठाली थे पंचायत छोड़ो । निन्दा करबा सूं मुख मोड़ो ।
पांच जणी मिल आप भला की राय निकारोजी--सखी थे ॥२॥
हठ कर वाली थांनै जाणै । और अकल की दुसमण जाणै ।
बदनामी को तिलक आपको धोर उतारोजी--सखी थे ॥३॥
छोटा टाबर मत परणावो । वानै थे गुणवान बणावो ।
बाल पणै परणार जलम वांको मती बिगारोजी--सखी थे ॥४॥
गुडिया घूंघट काडर आवै । सासजी जद देखर स्यावै ।
मूरखताई त्याग डूबतो बंस उबारो जी--सखी थे ॥५॥

सारी रीत जरूरी लागै । रीत निभायां नक़दी लागै ।
पेट मोस मत भूल कुआं में सेमी डारोजी–सखी थे ॥६॥
देखा देखी का ये सौदा । हौड करै सो क्यों रै बोदा ।
सरदा सारु काम करो सुण बचन हमारो जी सखी थे ॥७॥
निर्बल आप बणी छो घरमें । ठांव ठोड की होगई घरमें ।
घरकी कैद बिगाड्यो थांको मिनख जमारोजी सखी थे ॥८॥
एक तमासो और सुणास्यां । थांकी कमज़ोरी दरसास्यां ।
सफर करै जद अदद आपनै गिणलै न्यारोजी–सखी थे ॥९॥
मरद आपकी बात डुबोई । रैती की नै नार डुबाई ।
दुखिया होकर देस आपणो चावै सारोजी–सखी थे ॥१०॥

---

## गीतावली मिलबा का ठिकाणाः—

१—जीवनकुटीर कार्यालय,
खेजड़े का रास्ता,
चांदपोलबाजार, जयपुर सिटी ।

मनोरंजन प्रेस, जयपुर ।

स्वदेशी व्यवसायों का उत्साह बढ़ाइये !

हमारे यहां—

शर्टिंग, कोटिंग, पेचा, पगड़ी, साफ़ा, धोती जोड़ा,
साड़ो, छींट, बायल, मलमल, क्रैप, तौलिया,
लिहाफ़, सर्ज, मौजे, बुनियान, चादरें,
पलंग पोश, बनारसी साड़ियां, ज़ीन
शुद्ध खादी, रेशमी, ऊनी, वगैरः

सब शुद्ध स्वदेशी ठीक और निश्चत भाव से मिलेंगे

एक बार अवश्य पधारिये और देखिये कि
स्वदेशी कपड़े ने कितनी तरक्की की है ।

पता:—

राजस्थान स्वदेशी स्टोर्स,
जौहरी बाज़ार, जयपुर ।

# यदि आपको-

१. बालकों तथा नवयुवकों के लिये उपयोगी साहित्य
२. जयपुर राज्य के शिक्षाविभाग द्वारा स्वीकृत समस्त पुस्तकें तथा उन पर अच्छे से अच्छे लेखकों के नोट्स;
३. बहुत सस्ते दामों में Second Hand पुस्तकें;
४. अत्युत्तम सब तरह की स्टेशनरी का सामान;
५. सब तरह के खेलों का सामान;
६. और जयपुर के किसी भी पुस्तकविक्रेता से अधिक कमीशन;

## चाहिये-

तो एकबार अवश्य हमारे यहाँ पधारने की कृपा करें।

**अन्य जगह से आपको हमारे यहाँ हर प्रकार की सहुलियत होगी।**

**राजस्थान पुस्तक मन्दिर,**

त्रिपोलिया बाजार,

जयपुर सिटी।



[ …स्त पैलो ]

[ बानगी …

# जीवनकुटीर का गीत

## माहवारी पोथी

प्रकाशक—

**जीवन-कुटीर, वनस्थली**

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

| | | |
|---|---|---|
| …म एक पोथी का | नवंबर | दाम एक बरस का ॥।) |
| ग्यार पीसा | १९३४ | डाक मेसूल न्यारो |

हर किसमके

तेल, साबुन, सैंट, क्रीम वगैरह
मफलर-मौजे, बनियान स्वेटर वगैरह
स्टेशनरी और ड्राइंग का सामान
खेल का सामान

**शांति भंडार,**

**किसनपोल बाजार, जयपुर सिटी**

---

**यहां से लीजिये**

१. सच्चा टाइम देने वाली धूपघड़ी।
२. हर तरह का इमारती पत्थर का सामान।
३. हर तरह की इमारती उलझन के लिये अच्छी मुफ्त सलाह।

**वर्मन कम्पनी**

**किशनपोल बाजार, जयपुर सिटी**



# चेतावणी

पुराणा ज़माना में बिरामण दुनियां की भलाईको काम करता सो वांका रोटी कपडा को भार दुनियां पर ही रहतो। बिरामणांनें आपका रोटा कपडाकै वास्तै दौडधूप कोनै करणी पडती। बिरामणां कै सिवाय जो कोई लूला पांगला होता वांका भारभी दुनियांका गिरस्त्यां परही रहतो। आज दिनभी आपणां समाजमें लोग सरधा सारु धरमपुन्न करै ही छै, पण वो याता अस्या नामधारी बिरामणां कनै जायछै ज्यो दान लेबोही जाणै छै और दुनियांकी भलाई कै वास्तै कुछभी कोनै करै या दुनियाको पीसो जायछै वां हट्टा कट्टा भिखमंगा कनै जो मांगर खाबानही आपको रुजगार बणालियो छै। आजकालकी हवामें भोतथोडा आदम्यांनै दुनियांकी भलाईकी बात सूझैछै बाकी साराही एकसूं एक बढकर भागवान बणबो चावैछै। दुनियांकी भलाईका काममें लागबालानै सदा ईंबातको डर लागतो रैछै कुण जाणै काल दिन आपांनें रोटी मिलसी या कोनै वो एकलोहो जदभी भुगतलै, पण ऊंके बाल बच्चाभी हो छै, वांका दुखनै वो सहजांही कोनै देखसकै; और छोटी मोटी बातांको त्याग करबा मेंही जोर आवे जद बाल-

बच्चांको त्याग कर जगतकी भलाई में लागबाला तो कोई बिरला नीमटै। थोडाभोत समझदार आदमी तो त्याग करबालाकी कदे कदे तारीफभी करदे छै, परन्तु आज कालका ज़मानामें पूंजीकै सामनै दुनियांको माथो नवै छै, त्यागकै सामने तो कमती नैतो दीख्यो । ईको मतलब यो हुयो क त्यागकी सांचल्ली परतिष्ठा कोनै हो—और त्याग कर बालानै दुनियांभी अपणाबा की एवज त्यागबानै तय्यार हो जायछै । दुनियांका मामूली आदमी आपरा तेललूंणका झगडासूं फुरसत कोनै पावे—और वै ई बातनै समझैभी कोनैक आपानें आपणां घरका फिकर कै सिवाय कुछ दुनियांको फिकरभी करणो चायजे । और जोकोई खास तौरसूं घरबार छोडर दुनियांकी भलाई करबो विचारै वां नै रोटी कपडाकी चिंता सताबा लाग जायछै—असी हालत में कोई घणीं करडी विचारबाला माईका लालही भलांही आपकी टेकपर जम्यारै जाओ बाकी तो ई झगडामें भूल चूक पडभी जासी तो नीकल भागबो चासी।

दुनियांको जितनो पीसो आजकल धरमपुन्नका नांव सूं मुफतखोरां की जेब में जायछै उतनोही बार देसकी भलाई करबालांनै मिलजाय तो देस सेवकांकी एक फौज खडी होजाय । और देस सेवकांकी एकफौज खडी हो-



जायली जद जारही देसकी भलाई होसकैली। जद च्यार्यूं मेर आग लाग रहीहो तो एकदम भोतसारा आदमी बुझावै तो स्यात् आग कबजमें आजाय—बाकी अस्या तूफान में कोई एकदो जगां पाणींका घडा छिंडक्यांसूं तो ज्यादा मतलब कोनैही नीकल सकै । आपणा समाजकी हालत ज्यादा खराब छै और ऊंनै सुधारबाकै वास्ते लाखां आदमी खडा होबाकी जरुरत छै । और वां लाखां आदम्यांका रोटी कपड़ाको परबंध होबाकी जरुरत छै।

आपणो समाज आपका फायदा नुकसाण नै हालतक कोने जाणै। ज्यो रीतरिवाज पडगया छै, वानै चाहे जियां भी निभा देवो चावै छै। वां रीत रिवाजांका मूलको विचार कोनै करे—ईकै सिवाय मरासर मालुम होजायके फलाणो रिवाजतो खोटो छै, जदभी चार्यूं तरफकी हवाको जोर अय्योही छै क इक्या दुक्या आदमीकी ऊं रिवाजनै छोडदेबाकी हिम्मत कोनै होसकै । आपणा राजको ध्यान भी सुधारकी तरफ कमतीही दीख्यो—राज स्यात् या समझै छै क "ज्यां कामां नै लोग खुसी सूं करैछै अथवा ज्यां कामां पर धरम की छाप लगा मेली छै वांका बीच में राज को पडबो ठीक कोनै; लोग माफिक हो जद तो राज भी कानून बणादे"। असल में या बात ऊंनी छै—लोग

सचमुच ही कोई बात नै छोडबो चासी, जदतो वे आपही छोड देसी, वांनै कानून की जरुरत ही कांई रैसी ? ज्यां रीत रिवाजां सुं पिरजा को बराबर नुकसान हो रह्यो छै और ज्यांनै लोग कुछ तो आपकी जिद सुं और कुछ पास पडोस की हवा का असर सुं न छोडबो चावै, वां रीत रिवाजां कै खिलाफ जरूर कानून बणा देणो चायजे और कानून की पाबंदी की निगरानी भी कडाई कै सा करणी चायजे। गांवां का विचार सुं दो कानून तो तुर बण जाणा चायजे—

(१) एकतो वो कानून जीं सें लोग फिजूलखर्ची सें बच सकै—

(२) दूसरो वो कानून जीं सैं लागां नै आपकी पैदा वार बधावा कै वास्तै चोखा बैल, चोखो बीज, खाद वगैर आराम सुं मिल सकै—और वांकी पैदावार का चोखा दा ऊठ सकै।

कई रियासतां में अस्या कानून बणया हुया छ अ जांच करी जाय तो बठा की पिरजा को हाल जरूर ज्यादा चोखो नांकलसी। पिरजा की भलाई की खास नि राखर चालबा की घणी सुं घणी जरूरत छ।



ऊपर लिखी सागी बातां का निचोड यो छै—

(१) समाज का सब आदम्यांनै आपका घरका सिवाय दुनिया की भलाई को फिकर भी करणो चायजे— और आपकी कमाई में सूं एक पांती वां लोगां नै सुपरद कर देणी चायजे जो आपका घरका काम नै छोडर दुनियां की भलाई में ही आठ फैर बत्तीस घडी लाग्या रैछै—

(२) समाज की भलाई चाबाला भोतसा आदमी खडा होणा चायजे ज्यो चाव्यूं मेर भलो संदेस सुणावै और बावली दुनिया नै समझावै।

(३) राजकी तरफ सुं कानून का बल सूं बुराई नै रोकणी चायजे और भलाई को परचार होणो चायजे—

दुनिया की हालत आपां समझ राखी छ ऊं सूं भोत ज्यादा खराब छै—अगर आपां समझदार छां जद तो जल्दी ही फिकर करां और थोडी भोत रोक थाम लगाल्यां नातर तो जल्दी ही अस्यो तूफान आसी ज्यो कोई का बाप सुं रुक्यो कोनै रुकसी। म्हानै सूझी जसी या चेतावणी देदी—ई पर गौर करबो बिचारवान आदम्यां का हाथ की बात छ।

हीरालाल शास्त्री।

बरस पैलो बानगी सातवीं

# जीवनकुटीर का गीत

## गरीबकी फरियाद ।

हे नाथ ! म्हांका चित्त में कुछ एकता को भाव हो ।
अर्थ का संगी फिरां परमार्थ को भी च्याव हो ॥१॥
निजको थोडो काम बिगड्यो जद बडी चिन्ता करी ।
भाइयां की दुरदसा सूँ म्हांका दिल में घाव हो ॥२॥
ज्यासूं निमला ज्यो मिल्या वांका वै लागू हो रह्या
म्हांको म्हांका भाइयां सूं प्यार को बरताव हो ॥३॥
जोरकी ही जीत होछै न्याव सूँ अन्न्याव सूं ।
आपका दरबार में हे नाथ ! यो दरसाव हो ॥४॥
"शेरखां" को हाय ! पासो आजतक सूंलो पड्यो ।
हार सूं म्हे आगता छां म्हांको भी अब दाव हो ॥५॥
लोग कै छै झूठ सूं ही यो चलै संसार छै ।
झूंट को म्हे ख्याल देख्यो सांच को भी ताव हो ॥६॥
धर्म नै लंगड़ो बतायो तेज चाल अधर्म की ।
चाल बन्द अधर्म की हो जद कस्यो अटकाव हो ॥७॥



न्यायकारी बण रह्या छो सुध गरीबां की नहीं ।
काम म्हांको चालसी जद आपसूं ठहराव हो ॥८॥
आपका दरबार में ही "गुड़" करी फरियाद छी ।
गुड़ सूं मीठा हो रह्या छां नाथ ! बीच बचाव हो ॥९॥
म्हे गुलेटा भोत खाया और अब ताकत नहीं ।
एक बारी फेर कां छां पार अब तो नाव हो ॥१०॥
भोतसा ये ड़ाल्यां काटै मूल परभी वारछै ।
आप म्हांको नाथ ! जद ही म्हां जस्यां को जमाव हो॥११॥
म्हे ही म्हांका भायला छां दुसमणी म्हे ही करां ।
और नै म्हे न भी कां तो आपसूं न दुराव हो ॥१२॥
चाल म्हांकी बन्द होगी रासतो दीखै नहीं ।
आखरी फरियाद पर अब दूध पाणी न्याव हो ॥१३॥

---

## जीमण जीम्यां जावै छै ।

~~जैपर~~ हाला ~~आपसरी में~~ जिमा जिमा कर स्यावै छै ।
हाय बिचारी ~~जैपर~~ नै यो जीमण जीम्यां जावै छै ॥१॥
और जठा तो प्यारो हो सो प्यारा को घर बांधै छै ।
~~जैपर~~ हाला प्यारा बण कर घर की धूल उड़ावै छै ॥२॥

नांव आठवों बोलै जींको जंगी जीमण रोपे छै ।
भायाजी का दरसण पाछै पैली ही लुट जावै छै ॥३॥
भायाजी जनम्यावै जद तो यांकी तबियत खिल जावै ।
माथै ल्यार खुसी का मारच्या मारच्या माल उड़ावै छै ॥४॥
थोड़ा दिन में फेर जनेऊ को मौंको आ जावै छै ।
संसकार चाहे होय अधूरो जीमण पूरो चावै छै ॥५॥
टका भरच्या यां भायाजी को ब्याव लैर का लैर रुपै ।
सेखी में ये सोर सार कर घर को माल लुटावै छै ॥६॥
करमजोग सैं जे बाईजी यां का घर में जनम्यावै ।
हंसी खुसी नै भूल जाय ये सारा मिल पछतावै छै ॥७॥
दांत दूधका टूटयां पैली चित में चिंता हो जावै ।
छोरी ऊपर कपड़ा लादर ऊंनै बड़ी बणावै छै ॥८॥
बाईजी को मोल तोल भी कई जणा तो ठहरालै ।
हाय ! निसरडा बणै कसाई जिन्दो मांस बिकावै छै॥९॥
गांठ बांध कर घर में मेल्या पाछै जीमण रोपे छै ।
बेसरमी की हद होय पण नकटा नहिं सरमावै छै॥१०॥
घरका छोरा छोरी सारा चाहे अणपढ-रै जावै ।
नित रोजीना चांकी खातिर ज्योंणारां रचवावै छै॥११॥
हंसी खुशी का मौका पर तो जीमण की ज्यो हो सो हो ।
रोवा कूटो माच जद भी ये लाडू गटकावै छै ॥१२॥



कदे करे गंगोज बापडा कदे उजरणा कर देवै ।
एक फंद सूं छूटै कोनै दूजा में फंस जावै छै ॥१३॥
पितरां का ये करै कनागत वां में भी ब्योहार सधै ।
ब्योहारच्यां नै जिमा बडां की हुंडी ये सिकरावै छै॥१४॥
बामण जीमें गणेसजीका मौज गोठकी लूटै छै ।
आड धरमकी राख राख कर सौदा खूब पटावै छै ॥१५॥
अपरस की चतराई यांकै एक एक सुं बधकर छ ।
रस्तां में ये भोग लगा कर पूरो धरम निभावै छै ॥१६॥
दूर दूर तक रस्ता रोकै और कनातां लग जावै ।
आप आपकी बडी हैसियत चोडै सिद्ध करावै छै ॥१७॥
बिना पढ्योड़ा लोग पुराणा ई में सिद्धी समझै छे।
फैशन हाला पढ्या लिख्या भी विद्या सफल करावै छै१८
जनम परण अर मरण टलो चाहे यांका जीमण नहीं टलै।
जिनगानी कै चार्यूं कानी जीमण जाल बिछावै छै ॥१९॥
धरम छोड़ अर छोड सासतर कोसां नाठा बैठ्या छै ।
मीठो गास्यो खाय खुवा कर सारा मेल मिलावै छै॥२०॥
खावा और खुवावा बारै मिनखा दे को फल हेरो ।
सब को सेवक एक बिचारो हितकी बात सुणावै छै॥२१॥

———

# सूतोड़ा मरदो !

( जागबा की चेतावणी )

अब तो निंदरा नै त्यागो रै, सूतोडा मरदो ।
थांका रै हलका में नोपत बाजै छै रै ॥१॥
खेती की चोकस करल्यो रै, सूतोडा मरदो ।
सूनी रै खेती नै गदा खावै छै रै ॥२॥
मन को बिसवास बडो छै रै, सूतोडा मरदो ।
चाल्यां सूं तो मंजल आखर आवै छै रै ॥३॥
पूरब में सूरज ऊग्यो रै, सूतोडा मरदो ।
सूरज का उगबा सूं घूघू भाजे छै रै ॥४॥
बुरो जमानो तो बीत्यो रै, सूतोडा मरदो ।
थांकै रै तांई दिन चोखा आवै छै रै ॥५॥
बूढा ठेरा तो धाप्या रै, सूतोडा मरदो ।
मोटयारां के आगे आगल खूटै छै रै ॥६॥
मुरदापण नै तो त्यागो रै, सूतोडा मरदो ।
मुरदां की आंख्यां नै कागा टांचै छै रै ॥७॥
कुम्हार टपूडो बण गयो रै, सूतोडा मरदो ।
गदा कै भरोसै नार नै दोडायो रै ॥८॥



हाथां ही दुख पावो छा रै, सूताडा मरदो ।
मरदां का दुख सारा मिटता आवै छै रै ॥९॥

# पंच अस्तुती ।

दुनिया भर को धरम करम को पंच इजारो लिया फिरै ।
यांका सिरपर सारो बोझो जको विचारा लियां फिरै ॥१॥
पंचां नै परमेसर गिणना वो भी एक जमानो छो ।
आज बापडा पंच पाप को भारो माथै लियां फिरै ॥२॥
जरा भोत ज्यो यां पंचां का कैबा बारै पांव धरै ।
ऊंका तांई हुकम बडो ये खीसा मांही लियां फिरै ॥३॥
ऊंको हुक्को पाणी न्योतो और लावणो बंद करै ।
अस्यो नमूनो नादिरसाही औरां तांई लियां फिरै ॥४॥
घर कोई को होय लुटाणो पंच एकठा हो जावै ।
आगै होकर बांव चढा कर ये पंचाई लियां फिरै ॥५॥
घर जो कोई नहीं लुटावै गैलै गैलै काम करै ।
पंच खफा हो ऊंकै तांई कालो टीको लियां फिरै ॥६॥
कदे बिरादर निमला ऊपर कोई संकट आ जावै ।
ऊंकी रक्षा होत नहीं पण टणकाई ये लियां फिरै ॥७॥

पंचासूं भी घणा भयंकर धनी नवाद हो जावै ।
सब सूं बढ़ कर करै किगावर पंच लैर ये लियां फिरै ॥८॥
भागवान हो पंच बडा हो दुनिया को उपकार करो ।
नातर थांकी करणी थांकै ताईं अपजस लियां फिरै ॥९॥
जो कोई चोखा पंच होय तो वांकी म्हे तारीफ करां ।
वांकै ताईं रचबावालो गुण परसंसा लियां फिरै ॥१०॥

---

## बाजी राखणी ।

चेतो चेतो ए लुगायो बाजी राखणी ए ॥
लागी मूरखता की छाप, जीनै बेग मिटावो आप ।
अबतो नींद काडली धाप, बाजी राखणी ए ॥१॥
भूलो घणी पुराणी बाण, चालो रीत नवादू जाण ।
राखो थांका कुलकी काण, बाजी राखणी ए ॥२॥
थांकै गाल्यां को छै कोड, ऊंनै अबतो देवो छोड ।
त्यागो लावणा की होड, बाजी राखणी ए ॥३॥
थांका पढ्या लिख्या ये पीव, यांको मती दुखावो जीव ।
समझो याही सुखकी नींव, बाजी राखणी ए ॥४॥
उजलो राखो मनको भाव, छोडो सारा झूठ बणाव ।
लागै सादापण को च्याव, बाजी राखणी ए ॥५॥





जबरी घरकी थांकै पीक, घरको काम सुधारो नीक ।
जाति भली (~~चावो दुनियां की~~) भी ठीक, बाजी राखणी ए ॥६॥
त्यागो सकड़ाई को भाव, बारै भी क्यों करो जमाव ।
त्यारो भारत की थे नाव, बाजी राखणी ए ॥६॥

---

## बिदा ।

(जैपर में करयोडा जलसा में कुटीका सेवक स्हैर हालां कनै बिदा मांगे छै)

एजी करता रीज्यो याद, आपकी ओल्यूं आवैली ॥
बिना बुलाया म्हे आयाछा, जास्यां छूटी लेर ।
टोकारा कै समच आवां, याद करयां सूं फेर ॥१॥
च्यार फेर म्हे काम करां छां, थोडो मिलै सराव ।
जदभी आकर करां बंदगी, म्हांका मन मैं च्याव ॥२॥
जंगल का म्हे रैबाला छां, म्हां में कोनै ग्यान ।
कही सुणी को माफ करैला, आप जस्या गुणवान॥३॥
दया मया थे म्हांपर राखो, बडा बडा सिरदार ।
थां लोगां को हुकम उठास्यां, लाग्यां म्हांको वार ॥४॥
थां को ही म्हे काम करां छां, जतरी म्हांकी दौड ।
तो भी लोग ओलमा दे छै, जैपर दीन्यो छोड ॥५॥

(१४)

जड में पाणी देवा सूं तो, रूंख बिरख लग जाय ।
डाली पत्तां पाणी छिडक्यां, सारो बादू जाय ॥६॥
राजनीत म्हे समझां कोनै, म्हे छां भोला लोग ।
राजनीत सूं थे डरपो सो, अकल अजीरण रोग ॥७॥
एक मरम नै खूब समझल्यो, दुख सारा मिट जाय।
रैत राज सुं न्यारी कोनै, राज रैत कै मांय ॥८॥
बाड बेल सूं चोखी लागै, बेल बाड चढ जाय ।
बाड बेलनै खाय जद्यां तो, काम सभी बिगडाय ॥९॥
हाथ जोड कर विनै करां छां, सुणल्यो सारा साथ।
जिवन कुटी को मरम समझल्यो, फेर बटाओ हाथ॥१०॥
थांका म्हांका एक जिगर छै सारां को हित एक ।
सत्त धरम कै गैलै चालो राम रखावै टेक ॥११॥

---

## प्यारो सांवरियो ।

( पलती की प्रार्थना )

हाथ जोडकर करां बानती, सुणलै रै प्यारा सांवरिया,
रै रै हाथ जोडकर ।१॥
च्यार फैर म्हे करांरै कुमाई, पेट भरा दे रे सांवरिया,
रै रै च्यार फैर म्हे ॥२॥



(१५)

म्हांका घरकी पाल टूटगी, पाल बंधा दे रे सांवरिया,
रै रै म्हांका घरकी ॥३॥
जीव बचावो मुसकल होगो, जीव बचा दे रे सांवरिया,
रै रै जीव बचावो ॥४॥
आप सरी में लड़ता रे डोलां, मेल करा दे रै सांवरिया,
रै रै आपसरी म ॥५॥
भला बुरा ने नही रे पिछाणां, ज्ञान सिखा दे रे सांवरियां,
रै रै भला बुरा नै ॥६॥
भूत परेतां सूं डरपांछां, निडर बणादे रै सांवरिया,
रै रै भूत परेताँ ॥७॥
चाल भला की रै म्हे नहि जाणां, चाल सिखा दे रै सांवरिया,
रै रै चाल भला की ॥८॥
गांव भला में चित नहि लागे, चित्त लगा दे रै सांवरिया,
रै रै गांव भला में ॥९॥
जीवा को म्हे भेद न जाण्यो, अब समझादे रे सांवरिया,
रै रै जीवाको म्हे ॥१०॥
थारा बालक सारा म्हे छां, लाज रखा दे रे सांवरिया,
रै रै थारा बालक ॥११॥

---

स्वदेशी व्यवसायों का उत्साह बढ़ाइये !

## हमारे यहां—

शर्टिंग, कोटिंग, पेचा, पगड़ी, साफ़ा, धोती जोड़ा,

साड़ी, छींट, वायल, मलमल, क्रेप, तोलिया,

लिहाफ़, सर्ज, मौज, बुनियान, चादरें,

पलंग पाश, बनारसी साड़ियां, ज़ीन

शुद्ध खादी, रेशमी, ऊनी, वगैरः

**सब शुद्ध स्वदेशी ठीक और निश्चित भाव से मिलेंगे**

---

एक बार अवश्य पधारिये और देखिये कि

स्वदेशी कपड़े ने कितनी तरक्की की है ।

पता:—

## राजस्थान स्वदेशी स्टोर्स,

**जौहरी बाजार, जयपुर ।**

## मकान की सुंदरता के लिये

**सीमेंट की बनी**

जाली, गुलेबर, नल आदि

हर तरह की तस्वीरें तथा

और भी कई तरह का सामान

## हम से लें

**गन्नालाल बालमुकंद,**

किशनपोल बाजार, जयपुर सिटी

---

फोटोग्राफी व हाथ के दर्शनीय चित्र,

थियेटर रामलीला के परदे, खुशनुमा

साइनबोर्ड, काचके शिनाख़्त मोटोज़,

पीतल व लकड़ी के हर्फ, चपरास

आदि की खुदाई, और जल्सों पर

किराये के कपडे के मोटोज़

के लिये

## हमें आर्डर दें

**भारत पेंटिंग एण्ड इन्डस्ट्रियल वर्क्स,**

आर्यसमाज, जयपुर सिटी

सदा के लिये आपकी यादगार !

आपके लाभकी बात

सुंदर फोटो

फोटो का सब प्रकार सामान

पांच मिनट फोटो ग्राफी

हर तरह के कैमरे

तस्वीरों पर सुंदर फ्रेमिंग

अच्छे और सस्ते चाहें तो

हमें आर्डर दें

बद्रीनारायण श्रीनारायण फोटोग्राफर

त्रिपोलिया बाजार जयपुर सिटी



बालचन्द्र यन्त्रालय, किसनपोल बाजार जयपुर ।




# जीवनकुटीर का गीत

## माहवारी पोथी

युवकों की प्रार्थना


प्रकाशक—

जीवन-कुटीर, बनस्थली

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

| | | |
|---|---|---|
| दाम एक पोथी का ) ज्यार पीसा | दिसंबर १९३४ | दाम एक बरस का ।।।) डाक मैसूल न्यारो |

## यहां से लीजिये

१. सच्चा टाइम देने वाली धूपघडी ।

२. हर तरह का इमारती पत्थर का सामान ।

३. हर तरह की इमारती उलझन के लिये अच्छी मुफ्त सलाह ।

**वर्मन कम्पनी**

**किशनपोल बाजार, जयपुर सिटी**

---

## मकान की सुंदरता के लिये

**सीमेंट की बनी**

जाली, गुलेबर, नल आदि

हर तरह की तस्वीरें तथा

और भी कई तरह का सामान

**हम से लें**

**गन्नालाल बालमुकंद,**

किशनपोल बाजार, जयपुर सिटी




# दिवाली को राम राम

(पाछला ५–७ महीनां सूं वनस्थली क्षेत्रमें बडीभारी गड़बड़ चाल रहीछै–ऊंनै ठीक करवा कै वास्तै यो दिवाली को 'रामराम' लिख्यो छै सो ई बानगीमें देदियो छै जींसूं बाहरका लोग जीवनकुटी का कामको और ऊंकी मुसकलांको अन्दाज करसकै । यो 'रामराम' विना पढ्या लिख्या देहात्यां कै वास्तै लिख्यो गया छै सो याद रैणी चायजे । ई सूं म्हाको गांव हालां सूं बात करवा को तरीको भी मालूम होजासी 'रामराम' का बड़ा होवासूं गीत कम आसक्याछै सा कसर कदे म्हे फेर काड देस्यां)

साडा पांच बरस हुया जद म्हे म्हांका घरवार अर आरामनै छोडर निवाइ परगना का वनथली गांवमें आवस्यां म्हे या विचारी छीक वारला गांवांमें पिरजा दुःख पावै छै वा दिनरात काम करैछै, फेरभी ऊंका पेट नै रोटी और तन नै लत्तो कोनै मिलै। कोई दायकर आपां पिरजाको दुख बटासकां तो आपणो मिनख जमारो सुफल होजावै । ई भलाई का काम कै तांई म्हे मांगतांगर रुप्या पीसा

को सतूनों लगायो और मिल्या जतरा साथी त्यार करचा। सब सूं पैली म्हे खेती करबा को बिचार करचो- या देखबो धाम्यो क देखां खेती कुमाई में पालती की पैदाबार बदबा की तजबीज आपणौ सूं बैठजावै कांई। दूजी बात म्हे या बिचारी क आस पास का गांवां में चोखा सांड ल्यार छोड़ां जीं सूं पालती नै घर बैठ्यां मेला का बलद मिल जावै। तीजी बात म्हे या बिचारी क पालती नै खेती का काम सूं थोडो भोत सराव जरूर मिलै छै—जे हो तो ऊं सराव का भगत में पालती नै आप को कपड़ो घरको घर में त्यार करबो सिखा द्यां। जी सूं म्हे पींदबो कातबो अर बणबो तकात सिखाबा को सतूनों बैठायो। म्हे या सोची छी क पालती बणबो भी न सीखै ला तो हाल पींद कातर आपका कपड़ा लायक सूत तो त्यार कर ही लेला—जी सूं वांकै बणाईका पीसां में कपड़ो हाथ लाग जाय-लो। चोथी बात म्हे या बिचारी क गरीब पालती ऊंन असमाद में दुवाई कै तोड़ै भोत दुख पावै छै और भोत सा तो मर भी जावै छै—सो यां पालत्यां नै कैबा कै साटै दुवाई मिलणी चायजे और आपणौ सूं बणै जतरी बंदगी भी यां की करणी चायजे। लंबर पांच में म्हे या बिचारी क पालती नै स्याब तिस्याब न आबा सूं वो





ठिगा जाय छै—जे हो तो रातका समा में पालती का लड़कां नै पडा लिखार हुश्यार कर दिया जावै। छटी बात म्हे या बिचारी क पालती नै मोका सिर राज हासिल बीज अर नाज न मिलबा सूं भोत दुख पाणो पड़ै छै सो आपां बीच में पड़र पालत्यां की एक पंचायती बणार ऊंनै कमती ब्याज पर रुप्या उधार दिवा द्यां सो पालती को यो काम भी बण जावै। अतरी भली बातां बिचारी और साथ में या भी बिचारी क राज काज का काम में नहीं पड़णो तथा और भी सब तरै का टणटा बखेड़ा सूं दूर रैणो।

दीख बा में तो या दीखै क पालती नै आप की भलाई की ये बातां दांतां सूं पकड़र राख लेणी चायजे। पण पालती में अतरी ही अकल होती तो ऊंकी आज या दुरदसा ही क्यों होती—और म्हांनै यां झाड़ां में आर उलझबा की जरूरत ही क्यों होती? पालती जतरो बावलो छै उतनो ही वो आपनै स्याणो समझै छै, जतरो मूरख छै उतनों ही आपनै अकलभादर समझै छै। और एक बात या भी छै क पालती की कुमाई सींत मांत में हजम करबाला ऊंका भोत सा बेवारी छै—पालती नै वां बेवारच्यां सूं दबर चालणो पड़ै छै—और पालती चावै

चाहे न चावै ऊंनै बांकी बात भी मानणी पड़ै छै । सो म्हे कोई गांव में दो च्यार आदम्यां नै कोई सी भली बात समझार त्यार करता—जद पैली तो बावला पालती आप ही म्हांकी बातां को म्हांकी पीठ पछाड़ी ऊंलो अरथ लगार बैठ रैता—और ई में क्यों कमर रैती तो पालती की कुमाईका गायक वांनै बैकार म्हांकै खिलाफ कर देता । या खींचातांण बरसां तांई चालती रही । म्हांकी पडाई नै ऊंली पडाई बतादी, पींदबा नै पिंदारा को काम बता दियो. दुवाई में या खोड़ काडदी क ये तो दवाई ले जका नै रोटी कोनै खाबादे—सो आदमी भूखां मरतो ही मरजावै छै । सब सूं जबरी बात तो या उडा दी क ये तो आग्रिया मत का छै अर सब को धरम बिगाड़ता फिरै छै—और या भी उडादी क ये गंदीजी का आदमी छै और ये ही सूंघाई करदी—और या भी उडा दी क ये पालती नै राज सूं लड़ार आप तो भाग जायला और पालती नै फंसा जायला । म्हे यां बातां में सूं एक सूं भी कोनै घबराया—क्यों कर म्हे तो जाणै छा क झूंठ की दौड़ डागला तांई हो छै—ज्यो झूंठी बातां उडी छै सो वै सब आप ही खतम हो जायली । म्हांका ई खयाल कै माफिक लोग धीरै धीरै समझबा लाग गया छा । पडाई को, दुवाई को,





अर पींदबा कातबा को. ये तीन्यूं काम ही चोखा चालबा लग गया छा और वनथली में लेण-देण की पंचायती को काम सरू होगयो छो । लोग कदे जदे बिदक जायछा तो वांनै समझा बुझार वांकी दिलजमी म्हे करदे छा । एक ऐब म्हांका मिटाबा सूं कोनै मिट सक्यो— लोग म्हांनै भागवान समझता रिया और सबला भी—जीं सूं म्हांको डर अर लिहाज घणो मान्यों और म्हांनै आपकी भलाई चाबाला मामूली आदमी कोनै समझ्या सो म्हांसूं प्यार कमती करचो ।

च्यार पांच बरस तांई म्हे ई परगना की रचना देखी जद जार म्हे या ज्योपाई क गरीब आदमी का घर में सरतन न हो जद भी दूसरां का दबाव में आर नुकता में मोकलो खरच करदे छै—और ऊं सूं फायदो कांई भी कोनै होवै । नुकता का कारण सूं घणां की जिमी जाग बिक गई और घणां भाई भागवान सूं कंगाल होगया । जीमबा जिमाबा की बड़सी जोर पकड़ गई सो पिराणी को सराध तो क्यों करचो क्यों कोनै करचो—अर मरबा ला का नांव सूं पैली का जीम्योड़ां को करजो उतारबा लाग गया । म्हे नुकता की खंडना सरू करी तो भला

आदमी घबराया— वै सोची और तो सारी बात मान लेभ्या पण यो नुकतो ज्यो आगा लग्गू सूं होतो आवै छै सो यो बंद कियां होसी। भला आदमी घबरागा तो बुरा आदम्यां का दाव लाग गया— वै तो पिरजा नै पैली सूं ही बैकाता फिरै छा— अब तो वांकै एक तरै सूं मुद्दो पकड़ में आ-गयो। फेर भी लोग म्हांनै भोत चावै छा सो वांकै कमती बत्ती जची जद भी छोटा बडा तीन गांव नुकतो न करबा की और सिरफ सराध करबाकी म्हांकी बात मान ली और वां गांवां में कई मोकां पर नुकतो कोनै हुयो। एक सराध का मोका में बनथली में थोड़ी कवा सुणी करणी पड़ी— सो कुछ लोगांका मनमें नाराजी पैदा हुई और वै लोग यो पैको उडा दियो क जीवनकुटी हाला तो सैकार सभा (लेण देण की पंचायती) हालां नै एक प्याला सूं शरबत पादियो। नुकता की बात सूं आस पास का गांवां में खल बली तो मान ही मेली छी— और लोगां का मन में सूं एक मेक करबा को बैम भी पूरो कोनै निकल चुक्यो छो— सो शरबत का प्याला को पैको बीजली की जीयां फैल गयो— और लोग ऊंनै सांचो ही मान बैठ्या। पैको उडाबाला उडायो छो जीवनकुटी को और सैकार सभा को नुकसाण करबा बेई— पण वो तो सारा गांव पर ही





उलट पड्यो। सारी बनथली का आदम्यां की प्यालो पी लेबा की बात फैलबा सूं सब का हुक्का-तमाकू बंद होबा लाग गया। अब बनथली हालां की हीमत टूट गई— वै झूंठो पैको उडाबाला को मुकाबलो कोनै कर्यो— उलटा डरपगया और सारो दूसण जीवनकुटी कै माथै मंढ़दियो। बनथली हाला कैबो सरू कर दियो— क्यों आपणा गांव में जीवनकुटी बसती, क्यों नुकता बंद होबा की बात होती, और क्यों आपणै यो कालो लागतो। इयां बिचार बो कुटी पर अन्याय करबो हुयो। बनथली हाला चाता तो वै नुकता का बारा में कुटी नै साफ कै देता क और बातां तो म्हे मानी पण नुकता की बात कोनै मानबो चावां म्हांकी आकाश कोनै। (म्हांकी कुटी हालां की भी एक गलती हुई और वा या क म्हे बनथली हालां को बिसवास कर लियो— म्हांनै सोचणो चायजे छो क बनथली हाला हामल भरै छै पण यां सूं या बात निभबाली कोनै)। ज्यां दिनां में पैको उड्यो वांहीं दिना में म्हे लोग कुटी हाला कुटी कै भींतर एक बीमार की ठैल में लाग रिया छा— आखर ऊं बीमार नै परमातमा उठा लियो और म्हे च्यारूं मेर की रचना देखी तो सारो नकसो ही बदल चुक्यो छो— लोग मान चुक्या छा क कुटी हाला सांच्यां ही

(५)–जीवनकुटी को सूंघाई मैंगाई की बात सू क्यों भी तालको कोनै––सूंघाई होबा का कारण दूसरा ही छै––जीवनकुटी की करयोड़ी सूंघाई मैंगाई क्यों भी कोनै हो सकै।

(६)–जीवनकुटा न कोई को धरम बिगाड़ै न कोई नै एक मेक कर। जीवनकुटा सारी पिरजाकी भलाई करबो चावै छै––सो सब नै दुवाई दे छै, सब नै पडावै छै, सब न कातबो पींदबो सिखावै छै। जियां आर लोग आपका काम बेई चमारकै घर जाय छै· जियां ही जीवनकुटी हाला भी जाय छै––जियां और लोग चमार कै साथ बैठर खेती कुमाई को काम करै छ जियां ही जीवनकुटी हाला भी पडाबा को अर सिखाबा को काम करै छै। जीवनकुटी हाला जींका हाथ को पाणी पी सकै ऊंका हाथ की रोटी खा सकै छै। जीवनकुटी हाला छुवाछूत का या खाण-पीण का बारा में जोरी करबो तो दूर कोई भाई सू नीवा सी बात भी कोनै करै। शरबत का प्याला की बात ठेठ सू लेर ठेठ तांई झूंठी छै––असी झूंठी बात चलाबालां को और मान लेबालां को–सबको रामजी भलो करै। या बात सांची छै क म्हे स्हैर सू आयोड़ा पढ्या लि या





आदमी छां सा गांवां में ज्यां छोटी मोटी बातां नै घणी जबरी मानै छै–वांनै म्हे फालतू और झूंठी समझां छां। गांव का आदमी भुत परेतां सू घणा डरपै––पण म्हांकी निगा में भुत परेत होता भी होसी तो वै आदमी को क्यों बिगाड़ कोनै कर सकै। इयां ही केई आदमी क्यों जाणै न बूझै पण फूठ्यां ही सि बणर झाड़ा झपटा देर भोली दुनिया नै ठिगता फिरै छै––म्हे वां स्याणां की बात गां हालां की जियां कियां मान ल्यां?

(७)–जीवनकुटी या चावै छै क बिरामण पिरजा में भली बातां को परचार करै, बोरा आपकी भलाई की साथ साथ पालती की भलाईको भी यान राखै, पंच जातकी भलाई करै और आप की जात का निमला पातला भायां नै भी निमावै, पटैल गांव का गुवाल छै सो गांव की भलाई करै और आप का स्वारथ कै साटै गांवनै पींदै न बैठावै। बिरामण सू, बोरां सू, पंचां सू और पटैलां सू म्हे या भलाई की बात चावां छां तो कांई बेजा करां छां? म्हे

शरबत को प्यालो पार सबनै एक मेक कर दिया। म्हे दुखी तो छा ही—सो चुप चाप सारी रचनानै देखबो करचा—म्हे या ही सोची क अस्या मौका में लोगां नै समझाबा बुझाबा सूं क्यों भी कोनै होणो जाणो।

प्याला की बात नै अब ६-७ महना सूं ज्यादा होगया। होली पाछै दिवाली आगई। सो म्हे अब सब लोगां की जाणकारी के वास्तै जीवनकुटी की सांची सांची बातां की या पोथी छपाई छै। वै सांची सांची बातां ई माफिक छैः—

(१)—जीवनकुटी गरीबां की भलाई कै वास्तै बणी छै—जीवनकुटी में धन कोनै गड्यो। जीवनकुटी चंदा का पीसां सूं चालै छै। दुनियां चन्दा का पीसा सूं क्यों डरपै ? जीवनकुटी में सदाबरत तो बटै कोनै—कोई खरो काम करदे तो कुटी में सूं खरो पीसो मिल जाय। चंदा का पीसा सूं डरपै ज्यांनै चायजे क वै कुटी सूं सींतमांत में क्यों भी न चावैं और वांकी सरदा हो तो भलां ही कुटी की मदत करैं।

(२)—जीवनकुटी में वै आदगी बसै छै ज्यो आपको आराम छोडर ग़रीब की भलाई की खातर तकलीफ भोगबो चावै छै।



(३)—जीवनकुटी की राय में राज को अर पिरजा को भलो न्यारो न्यारो कोनै—सो जीवनकुटी तो राज की अर पिरजाकी दोन्यांकी भलाई चावै छै। ज्यो हाकम ऐलकार रिसबत ले छै या और तरै सूं पिरजा नै सतावै छ वै परमात्मा का अर राज का दोन्यूं दरबारां का कसूर वार छै।

(४)—जीवनकुटी को काम भली बात सुणाबा को छै—चोखो गैलो बताबा को छै। ज्यो सुणबो चावो सुणो, चोखै गैलै चालबो चावो चालो—नहीं तो आपकी राधा नै याद करो। जीवनकुटी न जोरी करबो चावै, और न जीवनकुटी कनै जोरी करबा बेई फौज पलटण को इन्तजाम। जीवनकुटी आप का कैबा की सब बातां कैदी—करबाकी करदी—आयन्दा म्हांको भोत कमती बोलबा को विचार छै—कुटी का लिहाज सूं ईसान का तौर पर कोई काम होसी तो बेकार छै—यां नै कुटी कै सांकड़ो आणो होसी वै सोच समझर आपकी खुसी सूं आसी—जद ही भली होसी।

तो या ही जाणा छां क भलाई कै रस्तै चालबा सूं वां को भी भलो ही होसी। और वै भलाई का गैला सूं दोरा छै तो वांकै जचै जियां करो। जीवनकुटी सूं बैर करबा को तो काम ही कोनै।

(८)—जीवनकुटी की राय में नुकतो सासतर कै खिलाफ छै, आगा लग्गा सूं कोनै होतो आयो, बार बीच का दिनां सूं नुकता को रिवाज चाल्यो छै, कोई सराध करै तो जीवनकुटी की तरफ सूं भलांही करै। पण बड़सी का बेवार साधबाला नुकता नै तो जीवनकुटी पाप ही समझै छै। पण जियां और कामां में जोरी को काम कोनै जियां नुकता में भी जोरी को काम कोनै—ज्यांनै नुकतो करणो ही छै वै म्हांकी तरफ सूं दस मण करता भलांई सौ मण करो।

(९)—यो सारो बैदो ई कारण सूं फैल्यो छै क लोग कुटी की साथ सांचा कोनै रिया—म्हांनै झूंठ्यांही राजी करबो चाया—आपणी झूंठ को फल यो पैदा हुयो छै—पण चाहे इतनो बैदो फैलर ही मालम पड़ी—आखर आपणो सांच को उजालो तो हो गयो।



म्हे ५–७ महना सूं म्हांको मूंडो सींर बैठ्या छा और दुनियां की सैल देखै छा। आज ये सांची सांची असल बातां सबनै बतादी छै—ज्यो भाई सांची समझो सो मानो, झूंठी समझो मत मानो। जीवनकुटीकी कैण सारू चालबा में फायदो दीखै तो चालो, नुकसान दीख तो मत चालो। जीवनकुटी पालती की भलाई कै वास्तै बणी पालती की भलाई कै वास्तै ये झूंपड़ा ऊबा छै और जतरै वो गोप्यांको नाथ निभासी जतरै ऊबा रैसी। जीवनकुटी हाला दुनियां भर का संकट झेलबा नै कमर कस राखी छै सो अस्या बख्या पैकां सूं कोनै घबरावै। पालती लाग! थे ऊंडो हेरो करा, जीवनकुटी को बिसवास करो अर जीवनकुटी कै सांकड़ा आवो ई में थांकी सारी तरैं सूं भलाई होसी। दोनो पालती जायाकी— गरीब जायाकी— जय बोलो!! बस ई में जीवनकुटी की तरफ को 'दिवाली को राम राम मानज्यो, घणा मान सेती। यां ही बातांको एक रसियो सुणो—

# ॐ सूंली बात ॐ

समझो सारी सूंली बात कुटी नै अपणी समझोजी ॥
म्हांनै अपणा सेवक समझो, मतना समझो गैर ।
सुणी सुणाई बातांकी थे, क्यों लागो छो लैर ॥ १ ॥
अपणा मन में हेरो करल्यो, राख धरमकी आण ।
साडी पांच बरस में थांको, कस्यो करचो नुकसाण ॥ २ ॥
थांकी खातिर कुटी बणी छै, भलो करै परचार ।
म्हांको स्वारथ कांई दीख्यो, करल्यो खूब बिचार ॥ ३ ॥
थांका भोला पण सूं लागै, कई ठिगां का दाव ।
वै ही म्हांनै बुरा बतावै, यो ही सूदो न्याव ॥ ४ ॥
भली भांत व्योपाल्यां पैली, फेर सिखावां ग्यान ।
थानै चोखो लागै जद तो थे भी लेवो मान ॥ ५ ॥
थांका मन नै खोटो लागै, ज्यो कोइ म्हांको काम ।
वे धड़कै नटजावो थे तो जोरी को नहिं काम ॥ ६ ॥
फूंक पराई सूं मत बाजो, निज को करो बिचार ।
आछी बुरी नितारो नीकां, फेर करो निरधार ॥ ७ ॥
पडै जकां नै फिरां पडाता, जतरी सी आकाय ।
ज्यांनै पडबो खोटो लागै, वां सूं जोरी नांय ॥ ८ ॥



घरमें काल्यो सूत सदा सूं, रेजा लिया बणाय ।
घरकी घरमें रूई पींदो, पीसा घर रै जाय ॥ ९ ॥
ज्यांनै पींदण खोटो लागै, वां पर कस्यो दबाव ।
म्हे कां जद भी थे मत पींदो, जै समझो अटकाव ॥१०॥
म्हां सूं जतरी बणै बन्दगी, करां दुवाई देर ।
ज्यांनै बुरी दुवाई लागै, क्यों पछतावै लेर ॥११॥
कैंदे ज्यांनै सांड मंगाद्यां, कोनै मांगां मोल ।
ई सैं भी नुकसाण होय तो, कैद्यो हिरदो खोल ॥१२॥
हारचा निमला जका पालती, वांकी सभा बणार ।
देर जामनी रुप्या मंगाद्यां जींको चैन अपार ॥१३॥
सभा कनै जद रकम होय तो, खोलै एक दुकान ।
पूरो तोलै सूंघो बेचै, नफो लेर उनमान ॥१४॥
सभा और दूकान मांय भी, जे कोई गलती होय ।
दोन्यां सूं दूरा थे रैवो, जोर करै नहिं कोय ॥१५॥
नुकतानै म्हे पाप बतायो, घणो बडो नुकसाण ।
बिना सलीकै काम करो थे, आवै बोलो पाण ॥१६॥
म्हांकी कैण बुरी ज्यो लागै, आवै कोनै दाय ।
दूणा नुकता करो भलांई, म्हांको कांई जाय, ॥१७॥
जींको ल्यायो पाणी पील्यां, समझो म्हांकी कैण ।
अछुवांई सूं करै जद्यां तो, ऊंकी रोटी लेण ॥१८॥

सूंघाई करवालां कैवै, कदे आरिया लोग ।
एक मेक करबाकी कैवै, वै सब झूंठा लोग ॥१९॥
शरबत का प्याला को पैको, सुणल्यो चेतो देर ।
बल्यां मरचा सो खूब उड़ायां, झूंठो च्यारचूं मेर ॥२०॥
चंदा का म्हे पीसा ल्यावां, बम्या गांवमें आर ।
परमारथ को काम करां म्हे, समझो सोच बिचार ॥२१॥
दीन दुखी का लागू बोला, फैल्या च्यारचूं मेर ।
वां सबनै म्हे दुसमण लागां मरम समझल्यो हेर ॥२२॥
झूंठा सांचा मेल मिलावै, करता फिरै कुनांव ।
भोला ढाला मिलै पालतो, लागै झटसी दाव ॥२३॥
वां दुस्टां की सब बातां नै, करस्यां म्हे बरदास ।
सतको गैलो म्हे पकड्यो छै, होस्यां नहीं निरास ॥२४॥
ये ही म्हांकी सांची बातां. ध्यान धरो सुरग्यान ।
थे भी यांनै सांची समझो, भलो कर भगवान ॥२५॥

जीवनकुटीर वनस्थली

पो० निवाई (जयपुर राज्य) हीरालाल शास्त्री.

दिवाली सं० १९९१ वि०





# गरीब की दिवाली

म्हांकै झूठो आज उछाव दिवाली फेर्यूं आईछै ॥
हंसी खुसी को करां दिखावो, म्हांका दिलमें घाव ।
खावा तांई रोटी कोनैं, कांसू करां उछाव ॥१॥
म्हांका घरमें वसै दिवालो, फेर दिवाली आय ।
मिलकर पाछीजाय दिवाली, छोड़ दिवालोजाय ।२।
म्हांकै दिलमें घोर अंधेरो, राज करै अग्यान ।
दीवाली का दीया जोयां, मिटै नहीं अग्यान ॥३॥
लिछमीजी नै म्हे पूजां छां, तोभी लिछमी दूर ।
ज्यो लिछमीको नांव नही ले, वांका घर भरपूर ।४।
लीपा पोतो करां मोकलो, घर ल्यां झाड बुहार ।
मनको मैलो जाय नहीं जद, कियां होय उद्धार ।५।
म्हांकै बेई कांई ल्याई, करदे वार दिखाव ।
रीत परीती फिरती डोलै, करती फिरै कुनांव ।६।
होली आर दिवाली आवै, फेरयूं होली आय ।
पैली सिरकां लादां कोनैं, छीजै म्हांकी काय ।७।
कोई साखां भेली कोई, घास भेल दियो आर ।

छोटी मोटी बातां साटै, घणो हुयो तकरार ।८।
एका सूं ही काम बणै पण, एको चाल्यो भाग ।
लिछमी ! थोडी मदद करैजद, लागै म्हांको थाग ।९।
एकोडी तो लिछमी रूसी, हुई सुरसुती पार ।
लिछमी और सुरसुती खोई, ल्यावै वो करतार ।।०।

---

## गणपत लाडला ।

आओजी विन्दायक गणपत लाडला गढ रणत भंवरसैं
म्योशंकर तो पिता आपका, अन्नपूरणा मात ।
सबसूं पैली आप पधारो, धरो दयाको हातजी ।१।
एकदन्त प्रभु दयावंत छो, मूसा का असवार ।
विघनहरण कर मंगल करज्यो, करज्यो वेडा पारजी ।२
बुद्ध आपकी घणी बडी छै, मैमा अपरंपार ।
म्हांकी बुद्धी निरमल करज्यो, अरजी वारंबारजी ।३।
आप गजानन रिंध सिध दाता, भक्तांका प्रतिपाल ।
दीन जनांका कारज सारो, और करो संभालजी ।४।





पिरजा गण म्हे विखरचा डोलां, गण का राजा आप ।
एक डोरमें म्हांनै ल्यावो, जद जांणां परतापजी ।५।

---

## जलसाकी मस्ती

जीवनकुटी में चाल म्हारी लैरां,
सैल दिखाल्याऊं जलसा की ।।१।।
काम काज छोडचा चाल म्हारी लैरां,
सैल दिखाल्याऊं जलसा की ।।२।।
सैलकी भी बात छै र कामकी भी बात छै,
सैल दिखाल्याऊं जलसा की ।।३।।

नाच म्हारी साथण कूद म्हारी साथण, सैल. ।।४।।
सांकडा की आसी आंतराकी आसी, सैल. ।।५।।
मोटो ही घघरो मोटी ही साडी, सैल– ।।६।।
मोटी ही अंगिया मोटी ही कुड़ती, सैल– ।।७।।
पींदबो भी सीखां कातबो भी सीखां, सैल– ।।८।।
बिगडी र अपणी दसा र सुधारां, सैल– ।।९।।

---

# बालकाँ की प्रार्थना

म्हां जस्या यां बालकां की, नाथ ! बेग सुणाइ हो ।
म्हांका दिल में जन्मभूमी—नेहकी सरसाइ हो ॥१॥
नाथ ! म्हे बलवान होवां, और विद्यावान भी ।
सुद्ध म्हांका आचरण हो, नीत मांय भलाइ हो ॥२॥
मान राखां म्हे बडां को, प्यार छोटां सूं करां ।
सांचली म्हां में बिनै हो, सांचली नरमाइ हो ॥३॥
देसको अभिमान हो, अर मर्दमी की आण भी ।
भै नहीं हो म्हांका दिल में, भादरी मरदांइ हो ॥४॥
लोभ म्हां सूं दूर रैवै, राग रोस विदा करां ।
ज्यो भलाई बणती आवै, एक वाहि कुमाइ हो ॥५॥
धर्मको म्हे सार समझां, छोड़ अन्ध परम्परा ।
सांच लो म्हे धर्म पालां, दम्भ दोस विदाइ हो ॥६॥
भेद भाव निकाल कर म्हे, एकताको भाव ल्यां ।
विस्व बंधो ! म्हांका दिल में, प्रेमकी प्रभुताइ हो ॥७॥

82

फोटोग्राफी व हाथ के दर्शनीय चित्र,
थियेटर रामलीला के परदे, खुशनुमा
साइनबोर्ड, काचके शिक्षाप्रद मोटोज़,
पीतल व लकड़ी के हर्फ, चपरास
आदि की खुदाई, और जल्सों पर
किराये के कपड के मोटोज़
के लिये
हमें आर्डर दें
भारत पेंटिंग एण्ड इन्डस्ट्रियल वर्क्स,
आर्यसमाज, जयपुर सिटी

सदा के लिये आपकी यादगार !
आपके लाभकी बात
सुंदर फोटो
फोटो का तय्यार सामान
पांच मिनट फोटो ग्राफी
हर तरह के कैमरे
तस्वीरों पर सुंदर फ्रेमिंग
अच्छे और सस्ते चाहें तो
हमें आर्डर दें
बद्रीनारायण श्रीनारायण फोटोग्राफ
त्रिपोलिया बाजार जयपुर सिटी

# जरूरी खबर

म्हे खूब उतावल करबो चाई जदभी छपाई को ठीक परबंध न होबासूँ या आठवीं बानगी देरसूँ निकली छै। अब म्हांनै ज्यो च्यार बानगी और निकालणी छै वांकी छपाई को म्हे खास परबंध करबो चावां छां—बाकी की च्यारयूं बानगी म्हैनांकी म्हैनां कानै नीकलसी और छपाई का सुभीता कै माफिक एक या दो बार में निकाली जासी। जसी एकाध बानगी टेम सूं पाछै निकलसी बसी दो एक बानगी टेमसूं पैली नीकल जासी। च्यारयूं बानगी गायकां कनै पूगती जरूर करदी जासी। एकाध गीतकी छपाई में ज्यो गलती रैगी छै वांनै सुधार लेणी चायजे।

हीरालाल शास्त्री.

बालचन्द्रयंत्रालय, किशनपोल बाजार जयपुर।



# जीवन कुटीर का गीत

[ माहवारी पोथी ]

प्रकाशक—

जीवन-कुटीर, वनस्थली

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का च्यार पीसा } जनवरी १९३५ { दाम एक बरस का ॥।) डाक मैसूल न्यारो

# जीवनकुटी में सन् १९३४ ई.

जीवन कुटी की तरफ़ सूँ ज्यो परमारथी काम कर्‌यो जाय छै ऊँका सारा हाल चाल को पोथी म्हे सदा साल छपाबो कराँ छाँ। पोथी त्यार करबा में कई दिन लाग जाबो करै छै और ऊँकी छपाई में भी नरो सारो खरच बैठ जाय छै। ई वास्तै अबकी बार म्हे म्हाँ का मन में सालीना पोथी छपावा की मोल् ही राखी। गीताँ की बानगी में म्हे क्यों न क्यों लिखबो कराँ छाँ सो या बिचारी क सन् १९३४ ई० को थोड़ो भोत हाल-चाल ई बानगी में छपा देवा सूँ काम चल जाय लो।

म्हे म्हाँका काम नै परख को तौर पर कराँ छाँ या तो जीवन कुटी नै जाण बाला सबी लोगां नै मालम छै। परमारथी काम कर बाला लोगां को ध्यान गाँव की तरफ पूरो पूरो कोनै गयो—सो गाँव में काम करबा की गत विध भी लोगाँ नै हाल ताँई कमती ही मालम हुई छै। म्हाँका बूता सारू म्हे यो विचार कर्‌यो छो क देखाँ

गाँव में कस्या २ काम नै कियाँ कियाँ करवा सूँ काँई काँई नतीजो नीकलै। पैली म्हे या सोची छी क बरस पाँचेक में भोत सारो निचोड़ नीकल्या वैलो। पण गया उन्हाला में पाँच बरस होगया जद म्हाँ नै निचोड़ नीकलबा का काम में कसर दीखी और जद ही म्हे यो विचार कर लियो क ई काम में हाल तीन बरस और लगाणा चाय जे। पाँच बरस का काम की पोथी म्हे हिन्दी-अंग्रेजी दोन्यां में छपा चुक्या छाँ अब तीन बरस और हो चुकैला जद म्हे म्हाँ की पूरा आठों साल की परख को नतीजो दुनियाँ के सामने पेश कर देवाँ ला।

सन् १६३४ ई० को साल म्हाँ कै वास्तै बड़ो मज़ादार नीकल्यो। सन् १६३३ ई० का अख़ीर का दिनां में म्हे नुकता कै खिलाफ़ परचार सरू कर दियो छो और ऊँ काम में म्हे पैंड दो पैंड आगे भी चल नीकल्या छा। नुकता बन्दी को काम मुसकल तो छो पण म्हाँ नै या दोखबा लागगी छी क ई काम नै मर पचर आपां क्यों तो पार पटक ल्यांला। पण म्हाँ का चालता काम कै अणा चुको ही एक जोर को टोरी लाग गयो जीं को हाल म्हे पाछली बानगी में छाप चुक्या छाँ। म्हे म्हाँका कोई सा काम नै भी जाँत पाँत का आसरा सूँ करबो को नै चायो। कोई जात की पंचायती की मारफ़त नुकता





बन्दी को काम कोनै छेड्यो। म्हे तो म्हाँका परचार का गाँवाँ में आमतौर सूँ नुकता कै खिलाफ आवाज उठाई—और लोग ऊँ आवाज नै सुणी भी। पण आस पास का गाँवाँ नै या बात न सुवाई जद वै म्हाँका गाँवाँ की अलग २ जात नै काबू में लेबा को बिचार बाँध्यो—अर वाँ की या पेस बन्दी पार भी पड़ गई। म्हाँका गाँवाँ ला लोग म्हाँका कै वासूँ नुकतो बन्द करबो चाबा लाग गया छा—कई बन्द करभी दियो छो पण जात का तोफान नै लोग बरदास को नै कर सक्या। नुकता कै आडी वाँध्योड़ी म्हाँ की पाल तो टूटगी—जद भी थोड़ा भोत आदमी हाल तक कायम छै। नुकता का रिवाज़ की जड़ काँई स्हैर में अर काँई गाँव में घणी ऊँडी गई हुई छै—सो ऊँनै उपाड़बा में बखेड़ो फैल्याँ बिना काम नहीं चालै। ई बारा में जितरी बातां म्हाँ का मन में छै वां सब को जिकर करबा कै वास्तै तो घणा कागद काला करणा पड़ै। मोटी बात कैबा की या ही छै क नुकता बन्दी का परसङ्ग सूँ लोग कुटी कै बहुत खिलाफ़ होगया छा—और म्हाँ का अब तक का काम में नुकसाण होतो हुयो दीखबा लाग गयो छो। पण अब जार या मालम हुई छै क ज्यो लोग झूँठा पैकाँ का कारण सूँ खिलाफ हो गया छा वै अब साँची बाताँ

सुणबा सूँ भोत माफिक भी होगया और अतरा रोला बैदा सूँ म्हाँनै असल में भोत फायदो हुयो।

लेण देण की एक सभा तो सन् १९३३ ई० में सरू हो गई छी—दूसरी सन् १९३४ में सरू हुई। पालती की हालत च्यारयूँ मेर सूँ खुराब हो रही छै--सो सहकार सभा चलाबा कै वास्तै पूँजी दूसरा आदम्याँ कनै सूँ जुटाणी पड़ै छै। बस यो एक बड़ो विघन छै और यह बात सहकार सभा का असली क़ायदा कै भी ख़िलाफ़ छै। म्हाँ की बणायोड़ी दोन्यूँ सभावाँ को काम चोखो चाल रियो छै—और या सोचो जा सकै छै क याँ सभावां का कारण सूँ पालती नै भोत फायदो हो सकै छै। पण दुनियाँ की बन्दगी करबो चावाला म्हाँ जस्याँ फक्कड़ आदम्याँ का माथा पर पैला का रुप्याँ को बोझो रैबो पार पड़वाली बात कोनै दीखै। यो काम राज की मार-फत स्यात नींका चालै—और साँच्याँ ही तो जद चालै क क्यों तो पालती समझदार होर आप का फालतू खरच नै कम करदे और क्यों आपसरी में आप की पूँजी जुटाले और पैला की पूँजी कै भरोसै ज़्यादा न रैणो पड़ै। म्हे यो काम छेड़ राख्यो छै--सावधानी सूँ चालरियां छाँ—नतीजो नीकलसी सो सब कै सामनै पेस कर देस्याँ।





दुवाई को काम--चोखेा चलतो रियेा। गाँव का आदम्याँ नेा दुवाई की बड़ी भारी जरूरत छै--और वाँकै वास्तै यो परबन्ध जरूर करवा जस्यो छै। दुवाई देबाँ सूँ ज़्यादा जरूरत वाँकी बन्दगी करबा की छै। और बानै साफ सुथरो रैबो सिखा बाकी छै। पण ई काम में भोतसा विघन छै सो गाँव में आर वस्या सूँ ही समझ में आ सकै छै।

नुकतावन्दी का परपन्च में फँस जावा का कारण सू म्हे ई साल में दूसरा कामाँ पर कम ही ध्यान दे सक्या पींदबा कातवा को काम आप सूँ आप चाल्यो जतरो हो चाल्यो--ऊँ को देख भाल म्हे अब सरू करस्या-म्हे या समझाँ छाँक यो काम अपणै आप भी ठीक ठीक चाल्यो होसी।

बनथली समेत म्हे पाँच गाँवाँ में रात की भगत पढ़ाई को काम करै छा। बनथली कै अलावा बाक़ी का च्यारयूँ गाँवाँ का लोग सरबत का प्याला का पैका सू डर पर पडबो बन्द कर दियो छो। बनथली में भी लड़का कम होगया छा। अब बनथली को हाल तो पैली सूँ भी चोखो होगयो छै—दूसरा गांवां का लोग भी अब पछतार पडाई कै वास्तै कैबो सरू कर दियो छै।

म्हे दुबारा तो ई काम नै म्हां को सतूनो देख कर सरू करस्याँ।

रूप्यो पीसो न मांगवा का कारण सूँ म्हां नै थोड़ी भोत तकलीफ उठाणी पड़ी पण म्हाँ को काम तो चाल ही गयो। कुछ आदमी छोड़र चल्या गया पण रुप्या की मुसकल में ज्यो पाछानै ठैर सक्या वै ई काम कै वास्तै ज्यादा लायक बण गया।

सन् १९३३ ई० का ख़तम होवा पर जीवन कुटी को जलसो जैपर स्हैर में हुयो जीं सूँ मालम पड़ी क लोग कुटी नै भोत चावै छै। फेर कुटी का पाँच बरस पूरा हुया जद १२ मई १९३४ नै एक जलसो बनथली में कर्‌यो जीं में भोत सा आदमी जैपर सूँ और दूसरी जगा सूँ भी आया। दोन्यूँ जलसा में म्हाँनै काम चलाऊ रुप्या भी मिल्या। ई साल में जैपुर कौन्सल का एज्युकेशन मेम्बर व डाईरेक्टर एज्युकेशन भी कुटी देख वा पधार्‌या—तथा कुछ दूसरा राज का अफसर भी आया। म्हे राजै का अफसराँ सूं लिखा पढ़ी भी करी और या भी चाही क म्हाँका काम में राज की चोखी निगै होजाय तो गाव में रैवाला गरीब आदमी को ज़्यादा फायदो होजाय। पणई काम को कोई ख़ास नतीजो हाल तक कोनै नीकल सक्यो। राज को ध्यान अस्या





कामा को तरफ मोड़वा में जोर भोत आतो दीख्यो—सो म्हे या देखाँछाँ क आप णै सूँ बणै सो आपाँ तो करता रां और कदे कदे राज नै भी याद दिवाताराँ। राज कै जंचसी तो निगै कर लेसी और न जचसी तो आपणो बस भी काँई चालै।

म्हांनै सारी उमर गरीब की भलाई को काम करणो छै। जियां जियां गैलो दीखतो जासो वियां वियां हीम्हे आगे पैंड भर ताजा स्यां। अस्या कामा में मुसकल तो आवै ही छै पण मुसकलां को बिचार करवाकी जरूरत कोनै।मुसकल आसी और म्हे पक्का आदमी होस्याँ तो मुसकल जियां आसी बिंया ही चली भी जासी। म्हाँनै जाण वाला लोगां की दया मया म्हाँ पर मोकलो छै और म्हे कोई टण्टा बखेड़ा में न पड़ाँ तो वा दया वणी ही रैणी चायजे। म्हांको यो बिसवास छै क जतरै गाँव को गरीब आदमी आपकी असली हालत नै न पिछाणै जतरै जगत की भलाई नहीं हो सकै। सो म्हाँ का मन में तो या एक ही लगन लागी हुई छै—और म्हाँ को विचार छै क जीं बल होसी बींही बल म्हे गरीब आदमी को आरयाँ खुलार छोड़स्यां।

म्हे जाण बूझर ये थोड़ी सी बातां ही लिखी छै। और याँ दो च्यार पाना में ज्यादा आती भी कतरी सी

बात ? पूरो पोथो छपावाला ऊँ में सारो हाल नींका खोलर लिखवा को विचार छै। ज्यां भायाँ नै ज्यादा श्योक छै वै तो कुटी में आता रै छै और सारी रचना आपकी आख्यां सूँ देखता रै छै। ज्या नै साँचो श्योक छै वै तो अब भी आता हो रैसी—म्हाँ को मदत भी करता ही रैसी। कदे कदे कोई मामला उलझ जाय छै अर म्हाँ की अक़ल काम न दे जद म्हे चलार भी कोई कोयां ने न्यूतो भेजर बुलाल्यां छाँ। बार गई दिवाली कै आसपास भी दो च्यार ख़ास आदमी किरपा करी छी—वाँकै सामनै म्हे म्हाँको कच्चो चिट्ठो पेस कर दियो छो और वांसूँ सल्ला करली छी और आयन्दा किया काम नै चलाणो सो तै करली छी।

गांव का गरीब आदमी की भलाई चाहवाला सब लोगाँ की मदत सू ही अस्या काम पार पड़ सकै छै। सो म्हे सब सूँ ही मदत की आस करां छाँ कुटी को अर कुटी का काम को आजकलयणो चोखो हाल छै और म्हे भोत मजा में छाँ यां समाचाराँ सू म्हा का शुभचिन्तकाँ नै खुसी होणी चायजे।

जीवन कुटी,
जनवरी १९३५

हीरालाल शास्त्री



बरस पैलो बानगी नींवी

# जीवन कुटीर का गीत

## म्हे आज बोलां छां

( दुख पायोड़ी आतमा को कल्लाट )

दबी दबी आवाज सूँ म्हे आज बोलां छां।
नाक तांई भर गया जद आज बोलां छां ॥१॥
बोल्या बोल्या आज तांई सारी रचना देखली।
देखता म्हे थापगा जद आज बोलां छां ॥ २ ॥
पिसतां २ म्हां लोगांको अब तो चुरकट होलियो।
कल्लावै या आतमा जदआज बोलां छां ॥ ३ ॥
मांयली तो मांय म्हांकै बारली बारै रही।
फाटगो यो कालजो जद आज बोलां छां ॥ ४ ॥
टर्रकटम ऊपरलो बोल्यो बिचला कै तो खुसी नगम।
निचला छां सो "दबे तो हम" म्हे आज बोलां छां ॥ ५ ॥
चालो जतरै चाल लीनी अब कठा तक चालसी।
न दीखै या चालती जद आज बोलां छां ॥ ६ ॥
गिणती में म्हे भोत सारा ताकत पण बिखरी हुई।
ताको मोको देखता जद आज बोलां छां ॥ ७ ॥

जूती सूँ चिंथ जावै जद तो मांटी भी माथै चढ़ै ।
आख़र तो छां आदमी जद आज बोलां छां ॥ ७ ॥
भोत होगी भोत होगी अब तो थे सन्तोख ल्यो ।
पाछै थे पछतावस्यो म्हे आज बोलां छां ॥ ६ ॥
उल्टैली जद थांका माथा ऊपर होकर जायली ।
देखो तो थे देखल्यो म्हे आज बोलां छां ॥१०॥

## बाण पड़ी या कांई

( पालती की लुगाई को घर का धणी नै मीठो ओलंभो )

एजी बिना बात थे डरपोजी,
पिया बाण पड़ी या कांई—

पिया जिन्द भूत नहिं होवै २
एजो छाया सूँ क्यों डरपोजो, पिया बाण पड़ी या कांई।

पिया डील सिपाही छोटा २
एजो छोटा सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या कांई ।

पिया जाणो पंच कुकरमी २
एजी पंचां सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।

पिया पंडा घणा अधरमी २
एजो पंडा सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।





पिया बोरा लूटर खावै २
एजी बोरा सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।

पिया साहूकार सदा का २
एजी चोराँ सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।

पिया खरी कुमाई खावाँ २
एजी ठालाँ सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।

पिया गेलै गेलै चालाँ २
एजी पाप्याँ सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।

पिया मरद नाँव छै थाँको २
एजी मुरदा सूँ क्यों डरपोजी, हिया बाण पड़ी या काँई ।

पिया नार जस्या थे जबरा २
एजी स्यालाँ सूँ क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई।

पिया सब का थे अन्दाता २
एजी बादू ही क्यों डरपोजी, पिया बाण पड़ी या काँई ।

## आछ्यो जायोरी

( ना मरदा बेटा का बारा में मां ने ओलंभो )

आछ्यो जायोरो यो खोड़लो थारो दूध लजायोरी ।
आछ्यो जायोरी
दो कौड़ी का पाजी कन्है माजनो बिगड़ायोरी,
आई कोनै आई कोनै रीस,

यो तो हुयो नवातो सीस, मुरदो जिमी टिकायो सीस
आछ्यो जायो री ॥ १ ॥

अपणा घर की खरी कुमाई रिसवत में दी यायोरी
रिसवत दोनी रिसवत दीनी और
मुरदो जोड्या जबरा हाथ, यो तो कूएयाँ ताँई हाथ,
आछ्यो जायो री ॥ २ ॥

आबरू को रखवालो यो आबरू बेच्यायो री,
हुयो निसरडो हुयो निसरडो नीच,
यो तो घणो सुणो दुतकार, पाछै भाग्यो पूँछ दबार
आछ्यो जायो री ॥ ३ ॥

मूछ्याँ हाला मरदा में यो मुरदो ही कूवायो री,
म्हानै आवै म्हानै आवै लाज,
थारी मरदाणी की लाज, थारी सिंघणी की लाज,
आछ्यो जायो री ॥ ४ ॥

मुरदो जण तू नाहक़ थारो जोबन रूप गँवायो री,
ई सै तो तू ई से तो तू बाँझ,
चोखी रैती बिसबा बोस, देखाँ अब तो आवै रीस,
आछ्यो जायो री ॥ ५ ॥





# पालती का भायला

*( समझ्योड़ा पालती का दिल का हिलोरा )*

अब तो जक लेल्यो सारा भायला बस भोत हुई छै

चरी लेर थे आजावो छो. बोलो आनंद बोल ।
खुद का घर में आनंद कोनै, म्हाँकै दीखी पोलजी ॥ १ ॥

बात आगली थानै सूझै, सूझै पिछली बात ।
रात अँधेरी को दिन करद्यो, करद्यो दिन की रातजी ॥ २ ॥

जठै सलीको थांनै दीखै. भली हलाओ पूंछ ।
चून मांग कर बिणज करो थे, देखां थांकी मूँछ जी ॥ ३ ॥

म्हाँका घर की बणी राबड़ी, थांकी आंतां मांय ।
जद भी थे चतरांई करता, क्यों सरमाओ नांयजी ॥ ४ ॥

भीख मांगता घर घर डोलो, फेर बणो पुजनीक ।
भली बात का थे दुसमण छो, बात नहीं या ठीक जी ॥ ५ ॥

राज बंस में जलम लियो थे, नांव धर्‌यो रजपूत ।
अपणा लखण सुधारो नांतर, बंस जायलो ऊतजी ॥ ६ ॥

जीं हांडी में खाताजाओ, करता जाओ छेक ।
नुआं जमाना में अब थांकी, मुसकल रै सी टेक जो ॥ ७ ॥

थांका गुण तो समझ लियाम्हे, लिया ताखड़ी तोल ।
नौकर थांका थांसूँ जबरा, देखो आंख्यां खोल जी ॥ ८ ॥

खाऊँ फाड़ करै मोकली, होय नसा में चूर ।
नादिर साही हुकम सुणावै, धमकी दे भरपूर जी ॥ ९ ॥

मालिक पण थे राखो कोनै, जद भी मालिक नांव ।
संभलो तो समलो थे नांतर, उजड़ जांयला ठांवजी ॥१०॥

साजी थांनै सोना की या, मुर्गी पाई खूब ।
एकै समचै अंडा काड्याँ, निस्तै जास्यो डूब जी ॥११॥

करी कुमाई सारी देबाँ, थाँके मूडै बाल ।
मण दो मण जे नाज राखल्याँ, जदभी अनदेवालजी ॥१२॥

बिना सतूनै म्हे चालाँ छाँ, बिगड़यो म्हाँको साँग ।
भाव कटै जद गाँठ काटल्यो, थाँकी ऊपर टाँग जी ॥१३॥

ब्याज ब्याज को बाकी रैवे, नोटिस द्यो फटकार ।
बदनामी सूँ म्हे डरपाँ जद, म्हाँ को कोनै वारजी ॥१४॥

सारी स्याणप उड़सी थाँकी, सुणल्यो साजी बात ।
आखर थानै रोणो पड़सी, देर कणपट्याँ हातजी ॥१५॥

लंबर दार पटैलो सुणल्यो, कैताँ आवै च्याप ।
नार बघेरा च्यार्यूँ कानी, उल्या बगल में स्याँपजी ॥१६॥

एक कुआ में बस्या मींडका, ज्याँ में पड़ गयो बैर ।
चलतो पुरज़ो स्याँप बुलायो, खुद की चाही खैर जी ॥१७॥

स्याँप देव कूआ में उतर्या, मींडक पलक्या रोज ।
चलता पुरजा सुद्धाँ खाया, राख्यो कोनै खोज जी ॥१८॥



भाई सूं थे बैर करो छो, पैला सूं बेवार ।
आखर तो पछताणो पड़सी, मौज उड़ाल्यो बार जी ॥१९॥

थे ही म्हाँमें खाता पीता, और बोलता आज ।
थे हो म्हाँकी जड़ काटो छो, आणी चावै लाज जी ॥२०॥

पंच नाव थाँको छै थे भी, दूआ सुणल्यो पाँच ।
थाँका किरतब चौड़ै होसी, होसो पूरी जाँच जी ॥२१॥

पैदा में सूँ हासिल देकर, एक चुकावाँ राज ।
बिना कुमाई हासिल माँगो, थाँको जबरो राज जी ॥२२॥

म्हा का मूरख होवा सूँ हीं, जिमगी थाँकी धाक ।
समझदार म्हे अब होगाछाँ, उड़सी थाँकी राखजी ॥२३॥

थाँ सूं क्यों भी फलो न फूटै, लागै कोनै पार ।
छाया घोड़ा थे दौड़ावो, थे नागा सिरदार जी ॥२४॥

खाबा ताँई लाल पड़ै छै, थाँ कै नौ नौ हात ।
जात पाँत कै दीवल लागी, अब बिखरैली जात जी ॥२५॥

---

# ये फूल बरसै छै

( कुटो का सेवकां नै बुरी भली कैबालां लोगां नै आसीस )

और कैल्यो और कैल्यो गैरी मन की काडल्यो ।
आज म्हाँका सीस पर ये फूल बरसै छै ॥ १ ॥

भली करै परमातमा थे मौज ही करबो करो ।
आप का परताप सूं ये फूल बरसै छै ॥ २ ॥
आज म्हाँकी आतमा या माँय सूँ राजी हुई ।
म्हाँ कै भांवै सांचला ये फूल बरसै छै ॥ ३ ॥
नै सुवावै ज्याँ बाताँ को सामनो करबो करो ।
सामना की बात छै सो फूल बरसै छै ॥ ४ ॥
थाँ नै उपजै सो ही बाताँ खूब थे करबो करो ।
बुरी नहीं म्हे मानणा ये फूल बरसै छै ॥ ५ ॥

## कम-खरच करो

( बेसतूनै चालवाला नै सतूना सूँ चालवा की सल्ला )

पालत्यो आकाय सारू खर्च थे करबो करो ।
देखा देखी बायदै ही थे मती मरबो करो ॥ १ ॥
थाँकै माथै आज पैली भोत सो करजो हुयो ।
चापा चेपी काम करल्यो कर्ज सूं डरबो करो ॥ २ ॥
थाँका तन नै लतौ कोनै नाँय रोटी पैट नै ।
फालतू क्यों खर्च करयो ध्यान तो धरबो करो ॥ ३ ॥
पैदा थाँकी घट रही छै खर्च बादू बद रियो ।
और सारी बात पैली पेट तो भरबो करो ॥ ४ ॥
मेल थे सब राखस्यो तो दुःख सब मिट जावसी ।
अपणा सारा भाइयाँ की आपदा हरबो करो ॥ ५ ॥

मुद्रक—
नथमल लूणिया
आदर्श प्रेस केसरगंज, अजमेर
सञ्चालक—जीतमल लूणिया

बिजली से चलनेवाला अजमेर में बहुत बड़ा प्रेस खुल गया

# आदर्श प्रेस, अजमेर

सञ्चालक—जीतमल लूणिया

उमदा काम, समय की पाबन्दी और मुनासिब रेट हमारी खास विशेषताएँ हैं।

संस्कृत, हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी का सब तरह का काम हमारे यहाँ बहुत सुन्दरता से किया जाता है। प्रूफ-संशोधन का भी प्रबन्ध है, कागज का स्टाक भी रहता है।

एकबार काम भेजकर परीक्षा कीजिये।

किताबों व पत्र पत्रिकाओं की छपाई का खास प्रबन्ध है।

पता—आदर्श प्रेस, अजमेर.

(कैसरगंज डाकखाने के पास)

## आदर्श पुस्तक भण्डार

हिन्दुस्थान भर में मिलनेवाली सब प्रकार की हिन्दी की उत्तमोत्तम पुस्तकें हमारे यहाँ मिलती हैं। सस्ता-साहित्य मण्डल के राजपूताना प्रान्त के हम सोल एजन्ट हैं। अश्लील या मनुष्य जीवन को गिरानेवाली पुस्तकें हम नहीं बेचते। बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

पता—आदर्श पुस्तक भण्डार, अजमेर.

(कैसरगंज डाकखाने के पास)

# एक नवादू विचार

आपणा देस में सेवा करवो चाबाला आदम्याँ को घणो घाटो छै। और गांव में आपको घर बणार बस जाबालां को और भी ज्यादा घाटो छै। जीवन कुटी की थरपना सूँ लेर आज ताईं भोतसा आदमी म्हां कनै आया और भोतसा चल्या भी गया। म्हां कनै ज्यो काम छो ऊँनै करबा कै वास्तै आदम्याँ की जरूरत पड़बो ही करी—और मिल्या जस्या आदम्याँ नै राखर म्हे ईं काम कै वास्तै हुश्यार बणाबा को कोसिस करता रिया। नवादू काम को जमाव जमाणो ज़रा मुसकल होबा सूँ म्हाँकी सारी ताक़त म्हांका काम में ही लागी री। और म्हे खास तौर सूँ आदमी तय्यार करबा को काम हाथ में कोनै ले सक्या। अब म्हांको जमाव जम चुक्यो और काम भी काफी आगै बद चुक्यो। म्हांकी परख को नतीजो और २–२॥ साल में निकल्यासी। सो म्हे अब या सोची छै क ईं २–२॥ साल का अरसा में थोड़ा भोत अस्या आदमी तय्यार

करल्यां जो गांव का गरीब को सेवा करबो चाता हो—

हरेक आदमी को ध्यान आपको गिरस्तो चारो चलाबा को छै। और घणा आदम्यां कै सामनै तो रोटी कुमार खा लेबा को सवाल ही सब सूँ बड़ो दीखै छै। ज्यो लोग देस की सेवा में लागसी वै भी भूका तो कौने ही रैणा—देस की सेवा करबालां की रोटी को परबन्ध देस नै बाँधणो ही पड़सी। ज्यां लोगां नै आपकी खुद की रोटी को ही जरूरत सूँ ज्यादा फिकर छै वै सेवा का काम में सहजां ही कोनै लाग सकै और लाग भी जासी तो वै आप भी दुख पासी और दूसरां नै भी दुख देसी।

म्हे जीवन कुटी में अस्यो परबन्ध करबा को विचार धाम्यो छै क १०-५ या हो सकै तो ज्यादा आदमी ट्रेनिङ्ग कै वास्तै राख्या जावै और वांनै गांव की सेवा कै वास्ते सब तरै की ज़रूरी ट्रेनिङ्ग दी जावै। ज्यां आदम्यां नै म्हे भरती कराँ वांमें नाचै लिखी बातां मिलणी चायजे—

(१) मिडल कै आस पास तक की पढ़ाई कर्‌या हुया हो—मतलब यो छै क हिन्दी को पढ़बो लिखबो चोखो आतो हो और काम चलाऊ हिसाब जाणता हो—



(२) उमर बरस बीसेक कै आसरै हो—मतलब यो छै क नुई बात सीखबा को हूँस हाला जुवान आदमी होणा चायजे —

(३) २-४ कोस पैदल जावा सूँ हार न मानवाला होणा चायजे। और भी सरीर की पचावट को काम करबा की आदत हो। और आदत भी न होतो कम सूँ कमसरीर सूँ काम लेबा की हूँस हो—

(४) कुटम कबीला को ज्यादा बोझो न होणो चायजे—मतलब यो छै क एकला की कुमाई कै भरोसै १०-५ खाबाला न होणा चायजे —

(५) और सब सूँ बड़ी बात तो या क आपका गुजारा कै साथ साथ सेवा करबा की लगन होणी चायजे। पड़्या लिख्या कमती हो तो काम चल सकै छै—पण ज्यांका मन में सेवा की भावना न होवाँ सूँ काम नहीं चल सकै।

याँ आदम्याँ कै वास्तै म्हे नीचै लिख्या मुजब परवन्ध करबो चावां छां।

(१) पडबा-लिखबा को अस्यो परबंध होसी जीसूँ वाँकी बाँचबा माँडबा की ल्याकत बदाबा कै साथ साथ वाँन जाणबा लायक जरूरी बातां किताबां का ज़रिया सूँ बताई जा सकै—दुनियाँ

को हाल चाल मालम करायो जा सकै, नवादू विचारां की ल्हैर वाँनै बताई जा सकै—

(२) गाँवाँ की हालत को जाणकारी कराईजासी। और थोड़ा हुश्यार हुयाँ पाछै तो वांनै गांव में परचार करबा को तरीको भी बतायो जासी। ट्रेनिङ्ग पाया हुयाँ दूसरा आदम्याँ की साथ गांवां में भेजबा को परबंध कर्‌यो जासी—

(३) वाँनै अस्या तरीका सूँ राख्या जासी क ट्रेनिङ्ग पाछै वै अकेला भी आपकै आराम सूँ कठै भी रै सकै। मतलब यो क आपको निजू काम आपका हाथ सूँ कर लेबा की आदत पटक दी जासी—

(४) नीचै लिख्या कामाँ में सूँ कुछ तो जरूर सिखाया जासी। बाकी में सूँ भी एक या दो काम सिखाबा की कोसिस करी जासी—

(१) पिंदाई—कताई—बुणाई,
(२) दरी—निवार की बुणाई,
(३) रंगाई को मामूली काम,
(४) सिलाई को मामूली काम,
(५) खाती को मामूली काम,



(६) दवा दारू को मामूली काम,
(७) हारमोनियम पर मामूली गाणा निकाल लेबा को काम—

सब सूँ चोखी बात तो या हो क ट्रेनिंग कै वास्तै आबाला आपका रोटी कपड़ा को इन्तजाम आप करले—पण ज्यो न कर सकसी वां का रोटी कपड़ा को इन्तजाम मैं कठां सूँ भी करा देस्यूँ कम सूँ कम छै म्हैना तक ट्रेनिंग दी जासी और ट्रेनिंग पाछै वांनै कठै भी सेवा का काम में लगा दिया जासी।

म्हे या तो कोनै सोच मेली क ऊपर बताई हुई ट्रेनिंग कै वास्तै कोई सैंकड़ां आदमी ही चल्या आवैला। उलटो म्हांनै तो यो डर छै क कमती ही आदमी पूँछैला। पण म्हांका मन में या छै क म्हे जस्या आदम्यां नै पसंद करस्याँ बस्या तो चाहे जतरा आदम्याँ की ट्रेनिंग को इन्तजाम कर ही देणो चायजे। ज्याँ भायां का देखवाँ में ई बानगी का ये पाना आवैं वाँ में सूँ कोई को अस्यो विचार हो तो वै म्हांने तुरत लिखैं फेर म्हे बुलावां तो मिलबा कै वास्तै भी आ जावैं—जरूरत होसी और तै हो जासी तो वांनै आबा जाबा को खरचो

भो दियो जा सकसी। यां पानां नै बांचवाला भायाँ की निगा में अस्या आदमी होतो वाँने वै इत्तला कर दे और म्हांनै भी लिख दे।

म्हे खास तौर सूँ यो इन्तजाम करबो चावाँ छाँ—और म्हाँकी निगा में ज्यो दो चार आदमी छै वाँनै लेर म्हे जल्दी सूँ जल्दी काम सरू कर देवो चावाँ छाँ। ज्यां भाँया को विचार हो वै जल्दी हो म्हासूँ लिखा पढ़ी करैला तो बानै और म्हानै सब नै ही सुभो तो रैलो। ज्यो लोग बानगी का गायक छै अर ज्याँ को जोवन कुटी सूँ और गांव की सेवा का काम सूँ परेम छै वांनै ई काम में खास तौर सूँ मदत करणी चायजे—

जीवन-कुटी,
फरवरी सन् १९३५

हीरालाल शास्त्री



# जीवन कुटीर का गीत

## उपदेसक को ख्याल

*( पालती और उपदेसक का सुवाल जुवाब )*

जवाब करसा को—

उपदेसक प्यारा म्हारा काम का उपदेस सुणाओ—
उपदेसकजी सब सूँ पैली, बात बताओ एक।
दुनियादारी छोड़छाड़ कर, कियाँ बण्यो यो भेकजी॥
पैदावारी दीखै कोनै, कियाँ चलाओ काम।
आवन्दानी होय कठा सूं, कुण दे जावे दाम जी॥

जवाब उपदेसक को—

करसा रै प्यारा थारा काम का, उपदेस सुणास्यां—
अपणा घर को काम करै सब, या मामूली बात।
घर को छोडै करै और को, बडी होय वा बातजी॥
थांकी खातिर फिरां डोलता, घर को कोनै काम।
थांका ही खरचा सूं म्हाको, चाल्यो चावै कामजो॥

जवाब करसा को—

पैली तो म्हे समझाँ कोनै, फेर नहीं आकाय।
थांको खरचो कियां चालसी, करस्यो कस्यो उपायजी॥

[ ८ ]

थां सिरका म्हे और आदमी, पैलो देख्या नांय ।
जीं सूं ही यो बैम ऊपजै, म्हाँका मनकै मांयजो ॥

जवाब उपदेसक का—

थांकी चोखी चाबाला छै, दयावान् कुछ लोग ।
वाँसूँ ही कुछ रुप्या मिले छै, बैठ जाय छै जोगजी ॥
दुख सुख की म्हे बात छोड़दी, करड़ो कर्‌यो विचार ।
म्हांका मन में नसो काम को, मांनां कोनै हारजी ।

जवाब करसा को—

थोड़ी थोड़ी बात समझ में, बैठी छै या आज ।
बाकी को समझ्या सूं पाछै, बैम जायलो भाजजी ॥
ठिगा गया म्हे कई बार जद, ऊठ गयो बिसवास ।
गेलो म्हांनै अस्यो बताओ, जीबा को हो आसजी ॥

जवाब उपदेसक को—

कस्ता तो थे घणी करो छो, भोत करो छो दोड़ ।
सरदी गिरमी विरखा लोपर, काम करो बे तोड़जी ।
जद भी भूखा नागा रो छो, ई को कांई भेद ।
थांका दुख नै देख देख कर, होय कालजै छेदजी ॥

जवाब करसा को—

काम कर्‌या सूं कांई हो छै, निमलो म्हांको भाग ।
दसा खोड़ली गैल पड़ी जद, म्हांको कोनै थागजी ॥

[ ९ ]

सुणो रामजी रूस्यो म्हांको, बस की कोनै बात ।
जियां राखसी रैणो पड़सी, वो गोप्यां को नाथजी ॥

जवाब उपदेसक को—

करम भाग की झूंठी बातां, करल्यो खूब बिचार ।
पंखा कै सर पौन होय छै, सांचो यो निरधारजी ॥
और होय अन्याय मोकलो, परमेसर घर न्याय ।
काम कर्‌या को मिलै चाकरी, नहीं अबरथा जायजी ॥

जवाब करसा को—

उपदेसकजी जची नहीं या, म्हांकै थांकी बात ।
काम कर्‌यां की कड़ै चाकरी, भूखा सोवाँ रातजी ॥
और भोतसा थे ही देखो नहीं, हलावै हाथ ।
गादी तकिया खूंद रिया थे, जीमै चाँवल भातजी ॥

जवाब उपदेसक को—

एक बात थे बार बताओ, अकल बड़ी या भैंस ।
ठाला लोग अकल कै पूँछै, हो रिया पूरा ल्हैसजी ॥
कस्ता करकै करै कुमाई, नहीं करै रखवाल ।
मिनख चोरले ढांढा भेलै, चरै हिरण अर स्यालजी ॥

जवाब करसा को—

बस बस थांकी बात समझली, तुलगी बिसवा बीस ।
मूरखताई काम बिगाड्यो, काड्यो म्हाको कीसजी ॥

नहीं भरतजी स्राप दियो अर, नहीं भाग को दोस ।
म्हे ही म्हांका दुसमण छां जद, कुण पर काँडा रोसजो ॥

जवाब उपदेसक को—

थांको सारो नास कर्‌यो या, आपसरी की फूट ।
आपसरी में एको करल्यो, बंद होय सब लूटजी ॥
घर को सांचो फिकर करो थे, करो गांव को बाद ।
बाद गांव सूँ करो देस को, मिटसी सब रंबादजी ॥

जवाब करसा को—

पैली तो पैदा ही थोड़ी, फेर चुकाणो राज ।
कियां जियाँ म्हे राज चुका कर राखाँ अपणी लाजजी ॥
बोरो दूजा राज बराबर, बाकी वो ले जाय ।
कोरा नागा म्हे रै जावाँ, बार मेलता हायजी ॥

जवाब उपदेसक को—

जिमी राज की थे मानो जद वो ले हासिल माँग ।
पैली थाँनै बोरो दे जद, फेर पसारै साँगजी ॥
जात बिरादर राज तीसरो, जीं को जबरो डंड ।
बाँको डंड नहीं जो चूकै, फैलै घणो हपंडजी ॥

जवाब करसा को—

आज समझ में आई म्हाँकै, भला मरम की बात ।
सब सूँ जबरो डंड करै यो, राज तीसरो जातजी ॥



जात डंड का मार्‌या ही म्हे, बोरा का मातैत ।
म्हाँकी कियाँ जिवारी हो अब, तीन राज की रैतजी ॥

जवाब उपदेसक को—

खरच जात को मेट्‌या सूँ तो, बोरो भी मिट जाय ।
एक राज रै जावै पाछै, जीं की मुसकल नाँयजी ॥
घर में हो उरलाई जद तो, पैदा भी बद जाय ।
पैदा होतो खाय पेट में, खायाँ सूँ आकायजी ॥

जवाब करसा को—

धापर खायाँ लाण बदैलो, लाण गैल हो पाण ।
पाण गैल ही करसा होसी, मरम लियो यो जाणजी ॥
बीज खात की हो उरलाई, बलद साँतरा होय ।
फेर कराँ म्हे करसा साँची, बेहद पैदा होयजी ॥

जवाब उपदेसक को—

बत्ती पैदा होय जकी नै, नहीं लुटाई जाय ।
धन सूँ धन पैदा कर लेवै, घणो ठाठ हो जायजी ॥
छोटा मोटा स्वारथ त्यागै, ऊंडो हेरो हेर ।
निमला नै भी सारो देकर, करै बराबर फेरजी ॥

जवाब करसा को—

अब तो ज्यादा क्यों बोलो छो, यो दीख्यायो अन्त ।
म्हाँकी कूँची म्हाँकै कन्नै, समझ लियो यो तन्तजी ॥

भला मिल्या उपदेसक थे तो, भलो दियो यो ग्यान ।
अंधकार में कर्‌यो उजालो, भलो करै भगवानजी ॥

जवाब उपदेसक को—

भलो बात को बरत लियो म्हे, भलो करां परचार ।
एक लगन या म्हाँकै लागी, छोड्‌या और विचारजी ॥
करसा ओ थे विद्या पढल्यो, मती रहो अब ठंट ।
निमलाई को करो सामनो, ऊबा होर फिरण्टजी ॥
भाग वाग नै मार भगाओ, डर नै मेलो दूर ।
आपसरी में करो भलाई. ठाठ होय भरपूरजी ॥
मर्दां की तो सदा जीत छै, ना मर्दा की हार ।
अब तो थे भी मरद बण्या छो, बोलोजैजैकारजी ॥

## पाखण्ड चाल्या छै

( ठिगोरा पाखण्ड्यां को भंडाफोड़ )

कोरा नागा होरह्या सिद्ध कस्या ये पाखंड चाल्या छै—

आंक बांचबो आवै कोनै, पतड़ो ले ले हात ।
पेट भराई तांई डोलै, भांत बणावै बात ॥ १ ॥
शीघ्र बोध का आँक बाँचले, जबरा पण्डित होय ।
बारखड़ो सूँ ब्याव करावै, बड़ा हरामी होय ॥ २ ॥
कोई कै ये गिरै बतादे, रचले पूरो जाल ।
ऊँली सूली बात बणाकर, जीमै चूर्‌यूँ दाल ॥ ३ ॥



भोली दुनियाँ नै बोलावै, तोर लगावै ताक ।
म्हारा बैटा मूंड हलावै, भली जिमावै धाक ॥ ४ ॥
डोरा डांडा करै मोकला, ज्या में कोनै तंत ।
मतलब को तो मतलब करले, और कुवावै संत ॥ ५ ॥
ठिग खावा की विद्या हेरी, श्योदा धोखाबाज ।
झाड़ा झपटा देता डोलै, करता फिरै इलाज ॥६॥
कोई काचा कलवा साधै, कोय चलावै मूठ ।
दुनियां नै ये धोखो देकर, घर भर लेवै लूट ॥ ७ ॥
स्याणा बण कर कै देवै ये, ऊपरलो छै दोस ।
झूटा जादू टूणा करदे, माल बणा ले कोस ॥ ८ ॥
ठिग विद्या को पार नहीं ये, चलै अनेकों चाल ।
ढाढां को भी करै जापतो, और लूट ले माल ॥ ९ ॥
और अस्या ही बोला समझो, पूरा बेईमान ।
लोगो थे हुश्यार बणो रै, मती कटाओ कान ॥१०॥
थोड़ो सो थे ध्यान धरोतो, सबकी निकलै पोल ।
चावो तो सांचो कर देखो, जीवन कुटी कोकोल ॥११॥

## मोटो कपड़ो

( पालती की जिवारी को एक जतन )

बारीक कपड़ा छोड़कर मोटा बिसावांला ।
लोढ़ पींद कात कर घर का बणावांला ॥ १ ॥

पैली म्हांका बापदादा मोटो कपड़ो पैरता ।
वाही बड़ा की चाल म्हे पाछी चलावांला ॥ २ ॥
मय्याँ कपड़ा देख लीना कोनै म्हांका काम का ।
टका टका का फूफन्या दूरा बगावांला ॥ ३ ॥
बेगा फाटै फाट्याँ पाछै बणै नहीं छै गूदड़ा ।
निकाम कपड़ा मोल ले नांही ठिगावांला ॥ ४ ॥
बद करकै म्हे खेती करस्याँ ऊँ में चेतो राखस्याँ ।
मिलसी जतरी ठाल में कपड़ा बणावाँला ॥ ५ ॥
रोटी कपड़ा की ही दोन्यू लूँठी चिन्ता आपणै ।
नाज रूई ल्याय रोटी कपड़ो जुटावाँला ॥ ६ ॥
घर में बैठयाँ धंधो करताँ लाज कुण की आवसी ।
बेधड़कै सब काम करकै पीसा बंचावाँला ॥ ७ ॥
कैबाला कैता फिरैला सुणस्याँ कोनै एक की ।
फायदा को काम करकै फायदो उठावाँला ॥ ८ ॥

## बोलबाला छै

( मुर्दापण व मर्दमी को मुकाबलो )

मर्दमी अर ऊरमा का बोल बाला छै ।
बोलबाला भादराँ का बोलबाला छै ॥ १ ॥
न रोवै जी टाबर नै तो माँ भी बोबो दे नहीं ।
रूसवाला टाबराँ का बोलबाला छै ॥ २ ॥



अणबोल्या को खाखलो भी बिना बिक्यो रै जाय छै ।
बोलै जी का बूमलाँ का बोलबाला छै ॥ ३ ॥
बिन लखणाँ का मूसल चन्दा त्यात्यात्या करता फिरै ।
अकलबन्द हुश्यार का तो बोलबाला छै ॥ ४ ॥
गदा ऊपर बोझो लादै पाछाँ सूँदे कामड़ी ।
मारबाला साँड का तो बोलबाला छै ॥ ५ ॥
नालायक का जणवासूँ ही नारी की मैमा घटै ।
मर्द की मा मर्दानी का बोलबाला छै ॥ ६ ॥
ना मरदा की बैरबानी सब की भाभी होय छै ।
सिंघवाली सिंघणी का बोलबाला छै ॥ ७ ॥
पूँछ दबाकर रस्तो नापै हार्योडा वै कूकरा ।
झूझबाला सूरमा का बोलबाला छै ॥ ८ ॥

## स्वागत

( जैपर सूँ एज्यूकेशन मेम्बर व डायरेक्टर एज्यूकेशन कुटीर देखबा पधार्या जद वांको स्वागत कर्यो गयो )

एजी प्यारा म्हाका आज पावणा भला पधार्याजी—

देस आपणो घणो खरो सो,
बसै गाँव कै माँय ।
धनकी असली खान गाँवमें,
बारै देखो नाँय ॥१॥

सेवा को जद म्हाँनै सूझी,
मन में कर्‌यो विचार ।
सैर छोड़ कर करां गाव में,
बणे जस्यो यो कार ॥२॥
ऊँडो हेरो हेर लियो म्हे,
देखी सारी सोय ।
विद्या को परचार कर्‌या सूँ,
असल भलाई होय ॥३॥
सरधा सारू काम कर्‌यो म्हे,
देखो सारो हाल ।
देख्याँ पाछै साफ बताओ,
चूक्या कौड़ै चाल ॥४॥
पसरै लाम्बा हाथ आपका,
भोत बड़ी आकाय ।
साँची विद्या बधै गाँव में,
जीं को करो उपाय ॥५॥

---

# होली को राम राम

होली दिवाली राखी दसरावो–ये बड़ा तिवाँर मान्या जाय छै। घर में खाबा नै हो जद तो आडै दिन भी तिवाँर मनायो जा सकै छै, पण होली दिवाली नै गरीब का घर में भी थोड़ो भोत उजालो हो ही जावै छै। होली दिवाली का तिवाँर अस्या मौका में आवै छै क या तो पालतो का घर में साख की पैदावार आधी पड़दी आ चुकै छै या आबा कै साँकड़ी आ पूँचै छै। पैदावार चोखी हो जाय और ज़रासो हाथ उरलो रै जाय जद तो होलो दिवाली को मौको साँच्याँ ही हँसी खुशी को हो सकै छै। और कदे फसल में क्यों बिघन ही हो जावै और पैदाबार की आस न रैवै जद तो फेर होली—दिबाली का दिन मामूली आड़ा दिन सूँ भी बुरा दिन देखवा में आवै छै—क्यों क ज्यों दुख खुशी का मौका में आवै छै वीं को मन पर ज्यादा असर हो छै।

म्हाँनै कई बरस गाँव की होली—दिवाली देखताँ हो गया। मामूली तौर सूँ या ही देंखबा में आई क या तिवाँरा में अब जान कौनै रो। होली का दिना का खेल-कूद आनन्द-उछाव बन्द होता आ रिया छै—असल में

लोगाँ का दिल में खुशी न उमड़ै जद वै बिचारा जबर दस्ती खुशी कियाँ मनावै। लोगाँ का चैरा फिकर का मार्‌या कुमलाया हुया देखवा नै मिलैला। एक रीत चली आई छै सो बड़ा तिवाँर कै दिन कोई चावल-लापसी पूआँ-पापड़ी बणार खा लेवा में सब सूँ बड़ो आनंद मान लेसी—सो भी कैई घर अस्या मिल सकसी ज्याँ में कोई चोखी चीज़ तो दूर मामूली रोटी को सलीको भी तिवाँर कै दिन निकाँ सी न निकलै—और ज्यो जीं दिन भी इयाँ ही उधारो पायो करर आपको काम चलावै छै। सरू सरू में ई रचना नै देखबा सूँ म्हाँका मन में भोत ज़्यादा ठेस लागती—पण अब नित ऊठर वोही हाल देखवाँ सूँ म्हाँनै भी क्यों २ सुवासी गई !!

गरीब की-खास कर गाँव का गरीब की-हालत खराब होती जा रही छै—पण भोत थोड़ा आदम्याँ को ध्यान अठी नै जातो मालुम पड़ै छै, ई को कारण यो छै क खुद गरीब नै हो आपको दुख सुवा मेल्यो छै—ज्यों बीं को हालत गिरती जाय छै ज्यों ही बीं को तकलीफ झेलबा को सुभाव बणतो जावै छै। जियाँ कोई आगमी बीमार पड्यो हो और बीं की हालत बिगड़ती ही जावै तो धीरे २ ऊँ की तरफ को छोटी मोटी चोखी बात सूँ भी बन्दगी करबाला को चित हरचो हो जाय छै-बिलकुल न





खा सकबालो दाल को पाणी ले लो तो भी चोखी बात समझी जावै—बीमारी बदबा पर ज़्यो अचेत हो जाय ऊँ का एक बार झाँक लेवा सूँ हो ऊँ कै फायदो मान लियो जावै।

बस अस्यो सो ही हाल गाँव का गरीब को दीख्यो। गरीब की हालत चावै कतरो भी ज्यादा खराब क्यों न हो जाओ म्हाँनै या दीखै छै क दूसरा लोग तो ऊने सुधारवा को साँचो उपाय कोनै करणा—और थोड़ी भोत कोई करसी भी तो वाँको करचो क्यों होतो जातो कोनै दीखै। वै तो ज्यादा सूँ ज्यादा या ही कर सकै छै क ऊंघ ता हुया गरीब नै चेत करादे—गरीब सूतो छै तो ऊंनै जगादे। बाकी भली तो जद होणी छै जद गरीब आप मर्द होर आपकी बात नै आपका हाथ में लेसी।

गरीब आदमी को अग्यान बेहद छै—ज्यो बीं का पाड़ोस में न रीयोड़ो हो वो तो बीं का अग्यान को अन्दाज ही कोनै कर सकै। गरीब आदमी आपका फायदा—नुकसान नै बिलकुल ही कोनै पिछाणै—वो तो उल्टो फायदा नै नुकसाण अर नुकसाण नै फायदो जाणाबा लाग जाय छै। गरीब आदमी आपका सोखी-दोखी को पिछाण भी कानै कर सकै। गाँव का आदमी ज्यां बातां नै ठीक मान राखी छै वै ही ठीक छै; ज्याँ नै वै

जाणै छै वैही बातां छै–ज्यो बात वांका देखबा में कौनै आई सो चाहे कतरी भी असल बात हो ऊ नै वै मानबा कै वास्तै तय्यार कोनै।

गांवां की एक खराबी या छै क गांव बिखर्‌या हुया छै—और गाँव हालां कनै आपसरी में लड़बा का कारण घणा मौजूद छै। सो वै आपसरी में लड़ता २ ही कोनै धापै। कोई कोई की साख भेल दे छै तो कोई कोई को दूसरो ऊजाड़ कर दै छै। खेत खेत की मेर पर तीख और गाँव गाँव की मेर पर तीख। गाँव का आदमी का अग्यान की साथ या बिखर्‌या रैबा की बात मिल्यां पाछै तो फेर क्यों भी बाकी कोनै रै। अग्यान का कारण सूँ तो फायदा-नुक़साण नै पैली सूँ ही कोनै जाणै—और जतरो सो ग्यान बां नै फायदा नुकसान को हो जाय छै ऊँ सारा नै आपसरी में ताक़त आजमाबा में ही लगा दे छै।

जात पांत को भेद सारा देश में ही घणो ज्यादा नुकसाण कर रियो छै--पण जात पांत को नुकसाण जस्यो गाँव में देखबा में मिलसी बस्यो दूसरी जगाँ शायद ही मिलै। आप आप की जात में सब बड़ा बणबो चावै छै—सब लोग एक दूसरा को सांचो २ हाल जाणै छै--फेर भी न जाणै कस्योक बेढड पड़दो अकल पर





पड्‌यो हुयो छै क एक दूसरा को निगाँ में ऊँचा दीखबा को कोसिस कर्‌यां बिना कोनै रै। बियां तो यो रोग सारा हिन्दुस्तान को ही दीख्यो--पण गाँव में ईं को ज्यादा असर दीखबा में आयो। ब्या सगाई का मौका पर बेटा हालो बेटी हाला नै अर बेटी हालो बेटा हाला नै नीचो दिखाबा की कोशिश करै छै। "नहीं सा कांई बात फलाणां गाँव हालो लूंटो छै--बीं की जाल झेलबा को फलाणां को काँई आकाय छै"? आपका पड़ोस्यां की वा वाहो लूट लो तो बस मिनखा दे को पूरो ही फल पा लियो। गरीब नै ज्याँ का कारण सूँ रोजीना नीचो देखणो पड़ै छै, कोई नै नीचो दिखायां ही काम चलै तो ज़्यांनै सब सूँ पैली नीचो दिखाणो चायजे--वांको तरफ गरीब को बिलकुल ध्यान कोनै --जद फेर गरीब की भलाई को काँई गेलो ?

होली कै आस पास का दिनाँ की या बानगी छै जद होली का बारा में बिचार चाल्यो—एक बार पैली 'दिवाली को राम राम' लिख्यो छो सो अब कै होली को राम राम लिखबा की मन में आई। पण होली का राम राम का मौका पर म्हे. लोग गाँव का गरीब की काँई भेट करां। होली आओ, चावै दिवाली आओ,—गरीब का मन पर साँची खुशी कौनै हो सकै—म्हे ईं भेद नै

नीकाँ भलाँ जाणाँ छाँ सो म्हाँका मन में भी खुशी कोनै हो सकै—म्हे ईं बारा में जतरो बिचार कराँ छाँ जतरो ही माँय सूँ कालजो बलै छै। फेर भी होली की परसादी का तौर पर ये बाताँ म्हे गरीब आदमी कै अरपण करवो चावाँ छाँ—

( १ ) सबसूँ पैली थे थाँकी थोथी करड़ावण नै भूलर या जाण जाओ क थे दुखी छो—थांकी पाँती दुख आणो नहीं चायजे, पण आ मेल्यो छै—सो थेईं दुख नै ना मेट करयो—

( २ ) थाँका दुख का कारण दूसरा तो छै सो छै ही—पण थे खुद भी छो। थे पतो लगाओ क थे दुखी क्यों छो?

( ३ ) थां नै थाँका दुख को पतो लाग जाय तो थे थाँकी सारी ताक़त थाँका दुख नै मिटाबा में ही लगाओ आज काल थाँकी ताकत थाँका खुद का दुख नै घणो कर लेबा में लाग री छै।

( ४ ) थे यो बिसवास राखो थे इकमन्या होर थाँका दुख नै मिटावो चास्यो तो वो जरूर ही मिट जासी।

( ५ ) सो आज ताईं हुई सो तो होली—आयन्दा कै वास्तै म्हाँकी साथ २ थे भी बोलो क गरीब कै वास्तै म्हे बताई सो ही होली।

जीवन कुटी,
मार्च १९३५

हीरालाल शास्त्री





# जीवन कुटीर का गीत

## धन धन राम

( भाई भाई का प्यार को नमूनो )

धन धन राम भारत भैया रै
धन धन राम।

मात पिता की अग्या मानी २
त्यागो राज बड़े भैया रै, धन धन राम ॥१॥
राज तिलक जद मिलबा लाग्यो २
नट गये धन्न भरत भैया रै, धन धन राम ॥२॥
भरत राम सूँ बिनती किनी २
ले ल्यो राज बड़े भैया रै, धन धन राम ॥३॥
राम भरत नै पाछा भेज्या २
बन में आप रमे भैया रै, धन धन राम ॥४॥
राम पादुका साथै लीनी २
पूजै नित्त भरत भैया रै, धन धन राम ॥५॥
धन्न भरत नै धन्न राम नै २
धन धन प्यार कर्‌यो भैया रै धन धन राम ॥६॥

# आंख्यां खोलो रै

( पालती का घर को मांयलो हेरो )

आंख्यां खोलो रै थे सूतोड़ाओ अब तो बोलो रै आंख्यां खोलोरै

बिना पूस को टापरो यो थांको आंख्यां खोलो रै ।
पड़बा नै यो पड़वा नै यो त्यार,
ईं कै लागी कोनै गार, निकल्या सारा बार तिंवार,
आँख्याँ खोलो रै ।
आये दिन बाथेड़ो कतरो सोचो आँख्याँ खोलो रै ।
बाथेड़ा की बाथेड़ा की लार,
थाँनै मिलै कसीक खुराक, थांकी जबरी या पोसाक,
आंख्याँ खोलो रै ॥२॥
अपणा घर में कतरो धन छै देखो आंख्यां खोलो रै ।
करजो कतरो करजो कतरो मेल,
थे तो दोन्यां को मिलाइ, देखो स्याब तिस्याब फलार,
आँख्याँ खोलो रै ॥३॥
अपणा घर को हेरो करल्यो नोकाँ आँख्याँ खोलो रै ।
खरचो कतरो खरचो कतरो और
थांकै पैदा कतरो होय, थे तो देखो सारी सोय,
आँख्याँ खोलो रै ॥४॥



बिना पछ्योड़ा टाबर मूरख डोलै आँख्याँ खोलो रै ।
बिना दुवाई बिना दुवाई मौत,
देखो ठाड़ी थाँके द्वार, या तो बिना बुलाई त्यार,
आँख्याँ खोलो रै ॥५॥
थाँ सूँ सब की पेट-भराई हो छै आँख्या खोलो रै ।
सब सूँ निबला सब सूँ निबला आज,
थे ही दीख्या च्यारयूं मेर, माँची जबरी भोत अन्धेर,
आँख्याँ खोलो रै ॥६॥
याँ बाताँ को काँई कारण सोचो आँख्या खोलो रै ।
चावो तो थे चावो तो थे बार,
थाँको हो जावै निस्तार, थाँकाँ होवै बेड़ा पार,
आँख्याँ खोलो रै ॥७॥

---

# सपनो आयो

( उथल पुथल की छबी )

सपनो आयो एक घणो जबरो रै सपनो आयो—
काली पीली आँधी ऊठी २
चाल्यो सूँट घणो जबरो रै सपनो आयो ॥१॥
थल को हो गयो जल थल जल को २
संपट पाट घणो जबरो रै सपनो आयो ॥२॥

डूँगर टूट ज़िमी में मिल गया २
देख्यो ख्याल घणो जबरो रै सपनो आयो ॥३॥
चौरस भोम में डूँगर बण गया २
माया जाल घणो जबरो रै सपनो आयो ॥४॥
टीबा ऊठ नँदी वै लागी २
फैल्यो पाट घणो जबरो रै सपनो आयो ॥५॥
नँदियाँ सूखर टीबा बण गया २
बेढब भूड घणो जबरो रै सपनो आयो ॥६॥
म्हाँको सपनो साँचो होसी २
समझो भेद घणो जबरो रै सपनो आयो ॥७॥

---

# भोला केश्यो

( जात को भँवरजाल )

भोला रै भोला प्यारा जाती गंग नांय रै ।
निस्तै ही झूँठी या सारी ओपमा ॥ १ ॥
भोला रै भोला भाया गंगा सूँ उपकार रै ।
जाती तो निमला कै लेखै भूतणी ॥ २ ॥
भोला रै भोला प्यारा जात भँवर को जाल रै ।
ई मेंतो फँस जासी सो ही डूबसी ॥ ३ ॥





भोला रै भोला प्यारा "हम बड़े" की बात रै ।
जाती को अतरो ही मतलब जाण लै ॥ ४ ॥
भोला रै भोला प्यारा निस्तै मन में जाण रै ।
जाती का टूट्या सूँ आनन्द होवसी ॥ ५ ॥
भोला रै भोला प्यारा जाती का ये लोग रै ।
लाडू रै खाबा का पूरा राछ छै ॥ ६ ॥
भोला रै भोला भाया चैंटा बानै माल रै ।
मेलै छै चटेड़ा यांकी जीभ तो ॥ ७ ॥
भोला रै भोला प्यारा थारै घर ये जीम रै ।
थारी ही निंदरा भी करता डोलसी ॥ ८ ॥
भोला रै भोला प्यारा तन्नै ये बैकार रै ।
मतलब तो साधै छै अपणा पेट को ॥ ९ ॥
भोला रै भोला प्यारा झूँठी या टणकाइ रै ।
झूँठी रै टणकाई करसी खोखलो ॥१०॥
भोला रै भोला भाया जात जिमायां पाप रै ।
पाप्यां का जीम्यां सूँ लागै पाप ही ॥११॥
भोला रै भोलाँ प्यारा सांचा भाई जाण रै ।
थारा रै घर में ज्यो करदे फायदो ॥१२॥
भोला रै भोला प्यारा पंचा नै तू लोप रै ।
पंचा नै लोप्यां सूँ पैंड़ो छूटसी ॥१३॥

भोला रै भोला प्यारा माल पराये पंच रै ।
लागैली जीं कै ही भाया दूखसी ॥१४॥
भोला रै भोला प्यारा ऊपर मिसरी टूक रै ।
मांय सूँ भाईड़ा ये तो झैर छै ॥१५॥
भोला रै भोला प्यारा मीठा मीठा बोल रै ।
बोदा की बिगड़ावै ये तो आबरू ॥१६॥
भोला रै भोला भाया लूँटा-लूँटा लोग रै ।
वांका तो सारा ही गुन्ना माफ छै ॥१७॥
भोला रै भोला भाया आछी खोटी बात रै ।
यां की नै मांनै तो न्यूतो बन्द छै ॥१८॥
भोला रै भोला भाया सारी चोखी बात रै ।
यांनै तो लागै छै खारी झैर रै ॥१९॥
भोला रै भोला भाया झूठी यांकी धाक रै ।
यां सूँ तो कोनै हो बाँको बाल भी ॥२०॥
भोला रै भोला भाया ये ठिगां का बाप रै ।
आछ्यां नै समझ्या तू सिरदार रै ॥२१॥

———





# होली आई फूल फूल

( होली की मन चाई )

होली आई फूल फूल खुसियां मनावांला ।
निमला म्हांका भाइयां नै छाती सूँ लगावांला ॥१॥
दालद भाग जायलो दुःख मिट जायलो ।
जद्यां ही सब की साथ में जलसा मनावांला ॥२॥
रोग मिटसी दोख मिटसी, चैन चार फैलसी ।
निश्चिंत सब की साथ में गाणो गवावांला ॥ ३ ॥
डाकू मरसी चोर मरसी और मरसी चूँसड़ा ।
जद्यां ही सारा मौज की बंसी बजावांला ॥ ४ ॥
मोटी धोती मोटो फैंटो कमरी मोटी पैरस्यां ।
सारा ही मोटा पैर कै रङ्गत दिखावांला ॥ ५ ॥
माथै चोटी एक पीसो कोनै म्हांकै ठैरसी ।
सांई सेती साखाँ ल्याकर ओरचाँ भरावाँला ॥ ६ ॥
प्यारा म्हाँका गाँव को म्हे नाँव करस्याँ देस में ।
जीवन कुटी की साथ में मौजा उडावाँला ॥ ७ ॥

———

# होली को आवणो

( होली की बधाई )

प्यारो लागै जी होली, म्हाँनै थाँको आवणो
साँई सेती सारवाँ ल्यावाँ, माथा को म्हे भार चुकावाँ ।
पूरो पाड़ो जी होली, अब कै म्हाँको बावणो ॥ १ ॥
घर को कूड़ो करकट काढाँ, मन को मैलोपण भी काढां ।
बासो करद्यो जी होली, थे तो म्हांको भावणो ॥ २ ॥
बैरविरोध म्हे खूब जलावाँ, बिछड्याँका म्हे मेलमिलावाँ ।
सारा सीखाँ जी होली, आपस को म्हे चावणो ॥ ३ ॥
गंदी बात कदे नहिं बोलाँ, जद बोलाँ जद मीठा बोला ।
मीठो लागै जी होली, थाँनै म्हाँको गावणो ॥ ४ ॥
नीयत साफ सदा ही राखाँ, जीव काम में पूरो राखाँ ।
पूरो संवत् जी होली, करकै पाछाँ जावणो ॥ ५ ॥

---

# सांचो रंग

( पालती का दिल की फड़कन को लहरो )

अब तो साँचो रंग दिखा दे होली रै—अब तो साँचो ।

दिवस रैन म्हे कराँ कुमाई,
तो भी हो नहिं पेट भराई ।



कोई चोखो ढंग सिखादे होली रै,
अब तो साँचो ॥१॥

ऐसी कोई बुद्ध बतादे,
थारी झल सूँ बाट बतादे ।
देखै ज्याँनै दंग करादे होली रै,
अब तो साँचो ॥२॥

भली बात नै झट अपणाबाँ,
बुरी बात सूँ पिंड छुड़ावाँ ।
ऐसो कोई चंग बजादे होली रै,
अब तो साँचो ॥३॥

डरबा को कुछ काम नहीं हो,
हटबा को भी नाँव नहीं हो ।
ऐसो कोई जंग जमादे होली रै,
अब तो साँचो ॥४॥

अंधकार नै दूर हटावाँ,
हिरदा में म्हे ग्यान बुलावाँ ।
ऐसो कोई रंग रमादे होली रै,
अब तो साँचो ॥५॥

---

# परमारथ को न्यूतो

( जीवन कुटी का आदमी जैपर राज का कस्बां में लोगा नै आपका दौरा को मतलब बतावै छै )

डरपो मत म्हे तो थाँकै घर आया ॥ डरपो मत० ॥

जीवन कुटी सूँ चालर आया ।
आजकल में चल देस्याँ ॥ डरपो मत० ॥१॥

रोटी थे देस्यो तो खास्याँ ।
नातर तो म्हे कर खास्याँ ॥डरपो मत०॥२॥

जीवन कुटी की बात सुणास्याँ ।
सुणस्यो तो म्हे हरखास्याँ ॥डरपो मत०॥३॥

जची हुई म्हे बात सुणास्याँ ।
कम सुणस्यो तो गम खास्याँ ॥डरपो मत०॥४॥

मेल हेरता म्हे डोला छाँ ।
थांसूँ मेल मिला जास्याँ ॥डरपो मत०॥५॥

परमारथ को न्यूतो ल्याया ।
न्यूतो आज मना जास्याँ ॥डरपो मत०॥६॥

---

नथमल लूणिया द्वारा
आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, केसरगंज अजमेर में मुद्रित ।
सञ्चालक—जीतमल लूणिया

बरस पैलो ] [ बानगी बारवीं

# जीवन कुटीर का गीत

## [ माहवारी पोथी ]

प्रकाशक—

जीवन-कुटीर, वनस्थली

पो० ऑ० निवाई [ जयपुर स्टेट ]

दाम एक पोथी का च्यार पीसा } अप्रेल १९३५ { दाम एक बरस का ॥), डाक मैसूल न्यारो

# अब सीख माँगाँ छाँ

म्हे गांव में आर बस्या और परचार करबो चायो जद म्हाँनै या दीखो क गीताँ का जरिया सूँ परचार नीकाँ होसी। सो म्हाँ सूँ बख्या जस्या बांका बावला दो च्यार गीत बणाया। म्हे एक पिछड्या हुया परगना में आर बस्या छा सो भोत सोधी सादी ठेठ गाँव की बोली में ही गीत बणाबो ज्यादा ठीक समझ्यो जीं सूँ लोग सहजाँ ही समझ जावैं। गीतां की नवादू बाताँ नै समझबा में थोड़ो जोर आवै सो ही आवै और बोली का कारण सूँ तो बत्तो जोर न आवै। एक बार गीत बणाया और वै लोगाँ नै चोखा भी लाग्या तो फेर म्हाँ कै यो चरसो ही लाग गयो क जद कोई मोको आयो जद ही एकाध गीत बणा देणो। इयाँ करता २ म्हा कनै भोतसा गीत एकठा हो गया। कदै कोई स्हैर का

पावणा आता तो म्हे वानै भी म्हाँका गीत गार सुणाता। स्हैर का आदमी भी गीत सुण राजी होता—कोई २ गीताँ नै उतार ले जाता और कोई कैता क याँ गीतां न छपा द्यो क्यों कोनै ? म्हे छपाबाकी बात सुण तो लेता–पण म्हाँका मन में याही समझता क याँ गीताँ को काँई छपावाँ—छपाबा सूँ काँई फायदो होसी—कुण समझसी और कुण नै अस्या गँवारू गीत प्यारा लागसी। बस इयाँ ही पाँच बरस हो गया—एक दिन एक गीताँ को श्योकीन म्हाँनै बोल्यो क थे कैद्यो तो ल्याओ थाँका गीत मैं छपा द्यूँ। ऊँ दिन म्हाँकै या बात जचगी। पण पाछै जार यो बिचार होगो क सारा गीताँ नै एकै समचै न छपार म्हैना की म्हैनै छोटी २ पोथ्याँ छपाद्याँ। सो मई, १९३४ सूँ गीताँ को 'बानगी' छपबा लागगो। म्हे १२ बानगी छपावा को बिचार कर्‌यो छो—११ बानगी ई' पैली छप चुकी और या बारवीं बानगी आपका हाथ में छै। म्हे विचार्‌यो सो काम कियाँ जियाँ पार पड्‌यो और अब "म्हे सीख माँगाँ छाँ"—

म्हाँनै या मालम कोनै क 'जीवन कुटीर का गीत' छपाबा सूँ कोई नै फायदो हुयो या कोनै



हुयो। और की तो और जाणै—बाकी म्हाँनै तो याँ गीताँ नै छपाबासूँ फायदो ही हुयो। म्हैनाँ की म्हैनै एक एक बानगी छपाबा की बात होबा सूँ म्हे भोतसा गायक बणा लिया—तो म्हाँ कै जतरा गायक बणया कम सूँ कम उतना आदम्याँ नै तो जीवन कुटी को थोड़ो भोत हाल मालम होतो रियो। छोटी २ पोथ्याँ छपाबा सूँ फुटकर बिकरी भी चोखी हुई—कोई २ बानगी तो भोत बिकी फुटकर बिकरो सूँ भी परचार हुयो ही। परचार कै अलावा रुप्या पीसा की बात देखी जाय तो म्हाँ नै नुकसाण तो लाग्यो कोनै—और म्हाँ कनै जतरी पोथ्याँ पड़ी छै वै बिक जाँय तो म्हाँ कै खासी बचत भी हो जाय—जीं सूँ म्हाँनै मदत ही मिलै।

ठेठ गाँव की बोली में गीत बणाया जद पैली तो म्हाँका मन में एक ही बात छो क म्हाँका परचार का गाँवाँ का लोग नींकाँ समझ लेणा चायजे। पाछै धीरै २ तो म्हे कई बाताँ सोचबा लाग गया। एक परगना की अथवा ज्यादा समझाँ तो जैपरी बोली की बात नै छोड़र थोड़ी कोसिस करी जाय तो सारा राजस्थान का गाँवाँ का काम

की बोली को एक रूप बण जाय। राजस्थानी बोली तो एक छै ही–और ऊँ की जतरी बेटी पोती छै वां सब सूँ एक खास सरूप बणायो तो जा सकणो चायजे। असी कलपना थोड़ासा दूसरा आदम्यां का मन में भी मालम पड़ी। खैर, या तो बड़ी बात छै—म्हाँनैं तो म्हाँका मन में याही तसल्ली छै क जैपर की "काँई कूँई की" बोली में मामूली ही सही पण नवादू ल्हैर का गीत बण्या तो सही—छपर दुनियां कै सामनै आया तो सही। भोत सा लोगां की या शिकायत री क ये गीत हिन्दी में होता तो यां का परचार को दायरो भोत बड़ो हो जातो। वांकी या शिकायत सांची छै। पण म्हे हिन्दी में गीत बणाता तो ज्यां कै तांइ पैलै लंबर बणाता वैही कोनै समझता।

म्हाँ को अब तक को गीताँ को खजानो तो बीत चुक्यो समझणो चायजे। और गीत तो बणता ही रै छै, बणता ही रहसी। पण म्हैनाँ की म्हैनै गीतां की पोथी छपाबा की बात ज़रा मुसकल पड़ै छै। म्हाँ को काम भाग दौड़ को काम रै गयो। ऊँ काम नै करताँ हुयाँ गीताँ को बराबर बणतो रैबो पार पड़ै भी और न भी पड़ै। दूसराँ छापाखाना म्हाँका हुकम में कौनै हो सकै–उल्टा म्हाँनै ही छापाखाना का हुकम कै माफिक नाँच नाचणो पड़ै। सो म्हे या विचारी क इयां ही बानग्यां छपाता रैबा में म्हाँ की ताकत घणी लागसी–न तीजो स्यात थोड़ो निकलै। ईं कारण सूँ म्हे याँ बानग्याँ नै तो अब बन्द करां छाँ–और म्हाँ कनै गीत बण जायला तो फेर कदे मौक़ा सूँ वाँने एकठा करर छपा देवांला।

म्हाँका गीतां में 'गीतपणो' भी आयो या को नै सो भी बानग्या का बाँचवाला नै ही मालम हुई होसी। म्हाँने एक बात कैणी हुई वींनै सूदी बोली में न बोलर तुक मिलार कै दोनी। ज्यांनै ये बाताँ कैणी छो वाँकै वास्तै तो याही ठीक भी छी। पण ज्यां लोगाँ नै गाँव की गँवारू बाताँ में रस कोनै आवै वाँकै वास्ते अस्या गीताँ की काँई कीमत हो सकै छै? एकाध बार म्हाँनै या भी सुझाई गई क थोड़ा सा गीत स्हैर का काम का भी बणा वो–पण म्हाँनै झटसी या दीख्याई क आपण करबा को यो काम कोनै। आपाँ काँकड़ का पंछी ठैर्या—आपणै सूँ कद स्हैर की सी मजादार चटपटी बात कही जा सकै।

म्हाँका गीताँ में या लिखबा-माँडबा में कई खास गलत्याँ रैगी होसी बाँ सब का बारा में म्हे म्हाँका परेमी गायकाँ सूँ माफी चावाँ छाँ ज्याँ ज्याँ भायाँ का मन में या रही हो क आपाँ तो नाहक ही रुप्यो बाराना बिगाड्या वाँ सूँ भी म्हे माफी चावाँ छाँ। कदे म्हाँका काम काज की गड़बड़ सूँ और ज्यादा तर छापा खाना की गड़बड़ सूँ बानगी आगै पाछै पूँची होसी जीं की भी म्हे माफी चावाँ छाँ। आयन्दा के वास्तै म्हाँका मन में या आस छै क याँ बानग्याँ की मारफत लोगाँ सूँ जीवन कुटी की जो जाण पिछाण हुई छै वा बणी ही रैसी-घणी भी न होसी तो जीवन कुटीर की की बात आबा पर या तो होसी ही क अच्छा वा जीवन कुटी-जींका गीताँ की पोथ्याँ आपाँ देखी छी। बस अतरी सी हो जासी जद भी म्हाँका मन में सन्तोस मान लेस्याँ—

'जीवन कुटीर' आप लोगाँ की ही संस्था छै—बणै सो बन्दगी या संस्था कर रही छै—आयन्दा भी करता रैवा को विचार छै। आप लोगाँ सूँ या ही अरज छै क म्हाँ की तरफ भी कदे २ झाँक लेबो करो जीं सूँ म्हाँको मन ई' काम में लाग्यो रै। म्हाँ



की जिन्दगी की सब सूँ बड़ी चावन्या याही छै क ई' देसका गाँव हर्‌या भर्‌या देखवानै मिलैं और ई' देसका याँ गाँवाँ का याँ गरीबाँ का चैरा पर भी खुसी-आनन्द की किरण देखवानै मिलै।

जीवन कुटी,
अप्रेल १९३५ ई०

हीरालाल शास्त्री